मूल्य पाँच रुपये (5.00)

६

दूसरा संस्करण 1970,

गजेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली में मुद्रित

SHARIFON KA KATARA (Novel) by Manmathnath Gupta

शरीफों का कटरा

अरुण वैठे-वैठे झीक रहा था और मन ही मन अपनी पत्नी रमा के लिए लम्बा व्याख्यान से रहा था, पर जब रमा थकी-हारी आई, उसके सिलवटो से सिकुडे हुए माथे पर पसीने की वूदे चमक रही थी, तो उसने केवल इतना ही कहा—तुम इतनी देर तक कहा रही ?

रमा इस प्रश्न से अप्रसन्न नही हुई क्योकि वह जानती थी कि अरुण उसकी मौसी को नापसन्द करता है, यद्यपि ऐसा करने का कोई माकूल कारण नही था सिवा इसके कि मौसी वेचारी वडी अभागिनी थी। यदि कोई व्यक्ति सहानुभूति का हकदार हो सकता है, तो वह मौसी थी। अरुण तो योही उसपर नाराज़ रहता है, वोली—मैं मौसी के यहा गई थी, तुम्हे कल वताया तो था।

अरुण ने कहा—तुम व्यर्थ मे मौसी को जा-जाकर उकसाती रहती हो। इससे न तो मौसी को लाभ है और न और किसीको। वह और जल्दी वल जाएगी। पता नही तुम्हे इसमे इतना रस क्यो मिलता है ? जो होना था सो तो हो चुका। तुम्हारे मौसा तो दूसरी शादी कर चुके, अव मौसी के लिए एक ही रास्ता रह गया। वह या तो मौसा का घर छोडकर चल दे या प्राचीन हिन्दू स्त्रियो की तरह उस गन्दे पनाले मे रेगती रहे।

इस विषय पर पति-पत्नी मे वहुत वार वातचीत हो चुकी थी। हमेशा उसी विन्दु पर जाकर वात अटक जाती थी कि मौसी कुछ करने की स्थिति मे नही है। अरुण का कहना था—जव कुछ करने की स्थिति मे नही है, तो वह उसे सहे, पर हर समय हाय-हाय न करे। इससे

स्थिति सुधरती नही है बल्कि बिगडती है। जो विद्रोह करेगा, उसे ही फायदा होगा ऐसी कोई बात नही है, अक्सर विद्रोह करने वाला फासी के तख्ते पर चढ जाता है और जो बाद को बच जाते है, उन्ही को तख्त पर बैठना नसीब होता है। या तो तुम अपनी मौसी से कहो कि वह अपने बच्चो को लेकर घर छोड दे या फिर वह वही जिस प्रकार पहले की स्त्रिया सीतो का पत्थर छाती मे बाधकर गृहस्थी समुन्दर मे झूलती रहती थी, उसी प्रकार गृहस्थी का क्रूस ढोती रहे।

रमा इसका कोई उत्तर नही दे पाती थी। वह यही कहती थी—सब विद्रोह नही कर सकते, पर इसके माने यह थोडे है कि जो विद्रोह न कर सकें, वे जड भरत बन जाए कि जो कोई डोली उनके कन्धो पर रखी जाए, वे उसे ढोते चले जाए। मौसी अकेली होती तो वह कही भी जा सकती थी, हमारे यहा भी आ सकती थी, पर उनके दो बेटा-बेटी है, जो अभी पूरी तरह अपने पैर पर खडे नही है। ऐसी हालत मे उनके लिए मौसा का घर छोडकर चल देना असम्भव है।

अरुण ने कहा—तुम व्यर्थ मे अपनी भी तन्दुरुस्ती गला रही हो, जिससे कोई लाभ नही। देखो जरा, तुम किस बुरी तरह थक गई हो। मुझे तो ऐसा लग रहा है कि हमे यह मुहल्ला छोडकर ही चल देना चाहिए, नही तो कभी वह आएगी और कभी तुम जाओगी। इस तरह तुम्हारी तन्दुरुस्ती चौपट हो जाएगी। लो कुछ चाय-वाय पी लो। मैं सच कहता हू। मुझे बडी चिन्ता हो रही है, यदि तुम दोनो के गप्प लडाने और पानी पी-पीकर कोसने से मौसा की दूसरी बीवी नीरा मर जाती, तो कोई बात भी थी।

रमा ने नौकर को आवाज दी, वह आया। उसे चाय के लिए कहकर रमा बोली—वह कभी-कभी बहुत मजेदार बाते सुनाया करती हैं, इसलिए उठने को जी नही करता।

अरुण ने कौतूहल से और कुछ हद तक घृणा से आखें तरेरते हुए कहा—कैसी मजेदार बातें ?

रमा बोली—जब से मौसा जी शादी करके लौटे हैं तब से मौसी जी के जैसे ज्ञान-नेत्र खुल गए है। वह विदुषी तो है ही, कह रही थी, तुम्हारे

कृष्ण जी को तो छोड ही दो, वह तो लपट-शिरोमणि थे पर तुम्हारे राम ने भी क्या किया ? बीवी के गुलाम और सठियाये हुए बाप के कहने पर राजपाट छोडकर बीहड वन मे कूच कर गए। वहा रावण ने सीता जी का हरण कर लिया, तो यह नही कि फौरन अयोध्या से सेना मगाकर उसका उद्धार करते, वन्दरो यानी पिछडी हुई जातियो की सेना बनाकर खामख्वाह समय नष्ट किया और अन्त मे जब सीता का उद्धार भी हुआ, तो एक धोबी के कहने पर उसे निकाल बाहर किया। तुम्हारे बुद्ध ने भी यही किया, पत्नी छोडकर जगल मे चले गए।

अरुण इन बातो को सुनकर समझ गया कि किस प्रकार मौसी के अस्तित्व का हर रेशा कडवा पड चुका है और वह सारे पुराण तथा इतिहास को अपने ही प्रवचित जीवन के मेढकी कुए के अन्दर से देखती हैं। मौसी एक विष की बेल बन चुकी है और वह अपनी हर सास से अपने चारो तरफ ज़हरीली हवा फैला रही है। वह तो काफी लम्बे समय तक दाम्पत्य जीवन भोग चुकी, अब वह रमा जैसी स्त्रियो को, जिनके जीवन का अभी सूत्रपात ही हुआ है, जहरीले विचारो से ओत-प्रोत कर रही है। इधर कुछ दिनो से रमा बहुत ठडी पड गई और कई बार अपने अनजान मे अरुण से पूछ चुकी है कि मेरे मरने पर तुम दूसरी शादी तो नही करोगे ?

अरुण सचमुच बहुत चिन्तित था। ऐसा लग रहा था जैसे ऊपर से अणु बम की-सी अशुभ छाया राख बनकर बरस रही है जिससे पत्तो की हरियाली मे कमी आ रही है और पौधे की बढती मारी जा रही है।

चाय आ गई थी, रमा ने नौकर से पूछा—मुन्ना सो रहा है ?

मुन्ना के लिए एक आया थी। उसके लिए कोई चिन्ता नही थी। नौकर को किए गए प्रश्न का उत्तर देते हुए अरुण ने कहा—यदि वह जागता होता, तो वह सारी पृथ्वी को अपने जागरण की घोषणा से सत्रस्त कर देता। तुम मुन्ना की चिन्ता न करो, अपनी चिन्ता करो। मै सच कहता हू, तुम्हारी तन्दुरुस्ती पर मौसी का बहुत बुरा असर पड रहा है। तुम अजीब खोई-खोई-सी लगती हो। मुझे यह सब पसन्द नही।

रमा ने अरुण की ओर एक प्याली चाय बढाते हुए कहा—क्या पसन्द नही ? क्या यह पसन्द नही कि मैं एक दुखी और वचिता स्त्री से सहानुभूति रखू ?

अरुण एक व्यावहारिक व्यक्ति था और वह इस बात को बार-बार कहता भी था, बोला—मै एक व्यावहारिक आदमी हू, भावुकता मे बहने-बहकने का आदी नही। यदि तुम्हारी सहानुभूति से और अपनी तन्दुरुस्ती होम देने से मौसी का कुछ काम बनता, कोई सामाजिक सेवा बन पडती तो मैं उसकी उपयोगिता मान सकता था, पर केवल बातचीत करना और मौसा तथा नई मौसी के मन मे एक प्रकार का भय और अनिश्चयता उत्पन्न करना, इसका कोई अर्थ नही होता। तुम्हे मालूम होना चाहिए कि मौसा जब रास्ते मे मिलते भी है तब हमसे बात नही करते। यह स्पष्ट है कि तुम्हारे कारण वह मुझसे दुश्मनी-सी मानने लगे है।

अरुण शायद और भी कुछ कहने जा रहा था, पर रमा ने उसे बीच मे रोकते हुए कहा—मौसा ने मौसी का जीवन नष्ट किया है और सो भी केवल इस कारण कि उन्हे एक नई-नवेली मिल गई। तुम्हे होगा मौसा का ख्याल, पर मैं उनका ख्याल रखकर चलने वाली नही। यदि उन्होंने बातचीत बन्द कर दी है, तो तुम उनसे सौ बार बातचीत बन्द कर दो, मैं तो उस आदमी पर लानत भेजती हू कि उसने अपनी छात्रा को बरगला कर उससे शादी कर ली।

अरुण रमा का क्रोध से तमतमाता हुआ चेहरा देखकर हसी नही रोक सका, बोला—इसीको तो मैं जीवन के प्रति भावुकता से गदला दृष्टिकोण कहता हू, पर तथ्य क्या है ? तुम कहती हो कि अध्यापक माथुर ने बरगला कर अपनी एक कमउम्र छात्रा से शादी कर ली। पर उस छात्रा की उम्र कितनी है, वह तेईस-चौबीस साल की है यानी लगभग तुम्हारी उम्र की। क्या तुम्हारा कहना यह है कि इस उम्र तक स्त्री इस योग्य नही होती कि वह अपनी भलाई-बुराई समझे ? यदि ऐसा नही कहती हो, तब तो इस क्षेत्र मे बरगलाना शब्द अनुचित है।

—बरगलाने से मेरा मतलब यह है कि वह अध्यापक माथुर के बैंक-बैलेंस की वर्षा मे फस गई है न कि और किसी बात पर।

अरुण ने चाय की चुस्की लेते हुए बिल्कुल उसी तरह से इस मामले का विश्लेषण करना शुरू किया, जैसे वह अपने कालेज की फाइलो मे करता था, बोला —बैंक-बैलेस भी एक गुण है । किसी भी कन्या के पिता से पूछो, तो वह अपने समधी का बैंक-बैलेंस या अपने भविष्य दामाद का वेतन अवश्य देखता है । यदि नीरा ने ऐसा किया, तो इसमे कौन-सी बुरी बात है, कम से कम इतना तो नही ही कहा जा सकता है कि अध्यापक माथुर ने या नीरा ने किसी प्रकार कोई गैरकानूनी या अनैतिक कुछ किया है । अब एक विवाह-सम्बन्धी कानून ससद के सामने है । वह जब पास हो जाएगा तो यह कहा जा सकेगा कि कोई गैर-कानूनी बात हुई है, पर जब तक वह पास नही होता, तब तक तुम कुछ भी नही कह सकती । और हो भी जाएगा तो क्या होगा ? फिर डाक्टर माथुर ऐसे लोगो को अपनी पहली स्त्री को तलाक देना पडेगा, जो जहा तक मैं समझता हू, तुम्हारी मौसी को नही फलता, क्योकि फिर उन्हे किसी और के यहा जाकर उसके गले बधना पडता । चाहे पत्नी के रूप मे या अवाछित आश्रिता के रूप मे ।

रमा इतमीनान के साथ बोली—तलाक होता ही नही, क्योकि कोई माकूल कारण दिखाना पडता ।

इसपर अरुण बोला—इसी कारण तो कह रहा हू कि तुम मौसी के पास मत जाया करो । मौसी के क्षेत्र मे तो कारण है यदि वह दुराग्रही बन गई है, तो उचित कारण है, पर तुम तो उनकी सोहबत मे योही दुराग्रही बनती जा रही हो । अरे यदि प्रेम ही न रहा, तो फिर कानून के बल पर एक छत के नीचे साथ बने रहने का कोई अर्थ नही होता । इस बात को तुम मानती हो कि नही ?

इसी प्रकार दोनो देर तक झिक-झिक करते रहे, न यह उसे अपने मत मे ला सका, न वह उसे अपने मत मे ला सकी । पर इसका नतीजा यह तो हुआ ही कि कई दिनो तक रमा मौसी के घर नही जा सकी । उसे भी कुछ-कुछ लगने लगा था कि मौसी का मामला निराशाजनक है, उसका कुछ बनना नही है ।

तब मौसी ही एक दिन स्वय आ गईं ।

उस समय अरुण घर पर नहीं था। रमा ने स्वयं ही अनुभव किया कि आज वह उस तपाक के साथ मौसी का स्वागत नहीं कर सकी जैसे वह पहले किया करती थी। भीतर कहीं एक नई ब्रेक काम करने लगी थी। यह स्मरण आते ही उसने अपने ऊपर जैसे जबर्दस्ती मौसी को आदर के साथ बैठाया और उनके लिए गैस सुलगाकर चाय बनाने लगी। मौसी ने मना नहीं किया। वह भी जाने कैसे हो रही थी, बोली—तुमने मुझे सलाह दी थी कि मौसा जी का इतना बड़ा पुस्तकालय है, तुम कुछ पढ़ने में मन लगाया करो, पर वह चुड़ैल तो मुझे पुस्तकालय वाले कमरे में घुसने नहीं देती। ज्योंही उसने ताड़ लिया कि मैं वहाँ जाकर बैठने लगी हूँ, त्योंही उसने उसमें ताला जड़ दिया और चाबी अपने पास रख ली।

रमा ने आश्चर्य के साथ कहा—उसमें ताला कैसे लगा है? पहले तो मौसा जी जब-तब उसीमें डटे रहते थे। अब वह कहाँ रहते हैं?

मौसी ने यन्त्रचालित की तरह चाय बनाने में हाथ बटाते हुए दुखी होकर कहा—वह बिल्कुल बदल गए हैं। पहले तो ग्रन्थकीट थे, दीन-दुनिया से बेखबर रहते थे, पर अब जब देखो, तब उसीके कमरे में डटे रहते हैं और हर समय दरवाजा-जंगला बन्द और अंग्रेजी रेकार्ड बज रहा है।

नारी-हृदय की गहराई के साथ रमा समझ सकी कि ये वाक्य व्यथा की किस परत से निकल रहे हैं, हर शब्द पर जैसे ताजा और गाढ़ा लहू चमक रहा था। बोली—आप और दूध लीजिए, चाय शायद आपके लिए कुछ कड़ी है!—कहकर उसने जबर्दस्ती चाय में ढेर-सा दूध डाल दिया। मौसी का चेहरा देखकर लग रहा था कि उन्हें अब शायद पीने को दूध भी नहीं मिलता। चेहरा बिल्कुल रक्तहीन और पीला हो रहा था जैसे वर्षों से बीमारी चूस रही हो।

मौसी शायद ताड़ गईं कि रमा ने चाय में इतना अधिक दूध क्यों डाला। उनकी आँखें आर्द्र हो गईं, बोली—मैं तो पुस्तकालय वाले कमरे में गई भर थी। वहाँ मैंने कोई पुस्तक नहीं छुई क्योंकि चारों तरफ उन्हीं साहब की बू बसी हुई थी। फिर भी मेरे उस कमरे में निकलने

ही उसने उस कमरे मे ताला जड दिया। यो शायद मैं उस कमरे मे फिर कभी न जाती, पर ताला लगना अखर गया। ऐसा लगा जैसे एक फेफडा वेकार हो गया हो। तभी मै यहा भाग आई।

—यह कब की वात है ? मैं तो घर के कामकाज के मारे चार दिन से आपकी तरफ जा ही न पाई।

—यह उसी दिन की वात है जिस दिन तुम गई थी। तुम सन्ध्या समय चली आई और मैंने चूकि पूजा-पाठ छोड दिया है, इसलिए मैंने सोचा कि इसका कोई विकल्प खोजना चाहिए। तुम्हारी सलाह मुझे ठीक लगी कि पुस्तके पढा करू। समय तो कटेगा, तभी मैं पुस्तकालय वाले कमरे मे गई। उससे निकली तो लौटकर थोडी देर वाद देखती क्या हू कि उस कमरे मे ताला लटका दिया गया। तब मैंने समय काटने की एक नई तरकीब निकाली—सुरेश को लम्बी चिट्ठी लिखना। पर उससे भी जी ऊब गया, क्योकि उसे क्या लिखती। असली वात तो वच्चो को वता नही सकती, इस कारण चिट्ठी लिखना भी वन्द हो गया।—कह-कर कुछ झेंपती हुई वोली—मैंने लिखने को तो तीन चिट्ठिया लिख डाली पर एक भी चिट्ठी डाक मे नही डाली।

कहकर मौसी ने एक घूट चाय पी, मानो वह अपने हृदय के कडवे-पन को धोती हुई वोली—जब ऊब गई और देखा कि तुम नही आई तो मैं यहा आ गई। पर अव मुझे जब तक जीऊगी कही भी शान्ति नही मिलेगी। यह तो स्पष्ट है।

रमा ने कुछ नही कहा क्योकि कहने को कुछ भी नही था। वह चाय के रग को ध्यान से परखने लगी। वात जब यहा तक वढ गई कि नीरा को यह भी पसन्द नही कि मौसी पुस्तकालय मे ही वैठकर अपना गम गलत करे और मौसा यहा तक उदासीन वल्कि जड वन चुके है कि वह यह भी नही देखते कि इस प्रकार जुल्म की चक्की चल रही है तो फिर क्या हो सकता है। वोली—मौसी, मैं तुम्हारे लिए और एक प्याली चाय वनाऊ।

मौसी समझ गई कि इस चाय वनाने के पीछे कौन-सा विचार काम कर रहा है। इसलिए अब की वार उन्होने आज्ञामूलक ढग से कहा—

नही, तेरे हाथ का एक प्याला चाय पीने मे मेरा खून थोडे ही बढेगा। मेरा खून तो हर समय खौल रहा है।

रमा ने फिर भी चाय बना दी, बोली—आश्चर्य यह है कि स्त्री होकर भी नई मिसेज मायुर स्त्री का दर्द क्यो नही समझती।

इसपर मौसी ने कडवेपन के साथ कहा—यदि उसमे इतना दर्द होता तो, वह अपने से तिगुनी उम्र के अधेड से शादी क्यो करती ?

—यही तो मेरी भी समझ मे नही आती। मैंने तो सुना है कि उसके मा-बाप भी इस शादी मे खुश नही है। अजीब बात है कि आजकल की लडकिया अपना स्वार्थ भी नही समझती। पहले जब अधेडो से जवान लडकियो की शादी कर दी जाती थी, तो बडा आन्दोलन होता था, पर आज तो केवल भारत मे ही नही, सारे ससार मे किशोरिया या नवयुवतिया सफल और धनी अधेडो से शादी कर लेती है और वर्ड्स्वर्थ ऐसे लोग भी उसका फायदा उठाते है।

इसपर मौसी ने जल्दी मे चाय की प्याली मेज पर रखते हुए कहा—वह अपना स्वार्थ खूब समझती है। सुनती हू कि शादी के पहले ही उसने अपने नाम से पचास हजार रुपये करा लिए। मैं चाहती थी कि इसकी तसदीक हो, पर शादी के पहले से ही बैंक की किताब इस प्रकार से गायब हुई कि आज तक उसके दर्शन नही हुए। अब तो बैक की किताब क्या, पुस्तकालय की मामूली किताब भी मेरे लिए दुर्लभ है।

अरुण के दफ्तर से आने का समय हो रहा था। इस कारण रमा यह चाहती थी कि मौसी अब चली जाए। अब वह खुद भी पहली बार यह समझ रही थी कि इस विषय मे बातचीत करना बिल्कुल बेकार है। लौटकर हम अन्धी गली के उस बिन्दु पर पहुचते है, जहा सब रास्ते रुक जाते है और आखो पर पट्टी बध जाती है। अरुण ठीक ही कहता है कि इस प्रसग पर बातचीत करने से लाभ तो कुछ होता नही, केवल परिवार के कांटे हाथ लगते है। ऐसे कांटे जिनका अन्त कोई नही होता। अन्त मे रमा ने बातचीत पर पटाक्षेप करने के इरादे से कहा—बस, अब सारी समस्या का एक ही समाधान हो सकता है, अरुण को नौकरी ता मिल ही चुकी है, अब इसे कानपुर मे कोई घर मिले, तो हम इसका ग

लेकर वही चली जाओ।

मौसी ने इसपर कुछ न कहा, यह स्पष्ट था कि यह समाधान मौसी को पसन्द नही था। अब भी मौसी को यह विश्वास था कि अध्यापक माथुर को उस लडकी ने फसाया है, थोडे दिनो की बात है, जल्दी ही उनकी आख खुलेगी और चाद ग्रहण से मुक्त हो जाएगा। उनकी समझ मे यह किसी तरह नही आता था कि डाक्टर माथुर बदल चुके है। उन्होने उस लडकी को रख नही लिया है, बल्कि उससे बाकायदा शादी की है। यदि वह बदलेगे तो कैसे बदलेगे। वह कोई दुधमुहे बच्चे तो है नही। जो कुछ किया है, सोच-समझ कर। मौसी अपने मन को इस तरह समझाती थी कि जब वह मेरे साथ सत्ताईस वर्ष रहने के बाद बदल गए, तो वह नीरा के बारे मे भी बदल सकते है। यही मौसी की एकमात्र आशा थी, बोली—अच्छी बात है, अब तुम घर का काम करो, मैं जाती हू। अरुण आता ही होगा।

रमा अब खुलकर बोली—हा, मौसी अब तुम जाओ। तुमसे उनसे भेट न होना ही अच्छा है, क्योकि उनका और मौसा जी का सम्बन्ध कुछ और है, एक ही लाइन है और डाक्टर माथुर बहुत नामी अध्यापक है।

मौसी उठ खडी हुई, वह जानती थी कि अरुण उन्हे पसन्द नही करता। पहले तो पसन्द करता था, पर जब से डाक्टर माथुर ने दूसरी शादी कर ली, तब से उसके रुख मे परिवर्तन आया था। जाती हुई बोली—इन पुरुषो का कोई ठिकाना नही। अरुण बहुत अच्छा आदमी है, अपने अध्यापक भी तो अच्छे आदमी थे, पर देखो न, मेरी तरफ देखा न सुरेश की तरफ, यहा तक कि इला की तरफ भी नही, जिसे वह बहुत प्यार करते थे।

जाते-जाते वह जहर का बुझा बाण मार ही गई।

२

उस दिन दफ्तर से अरुण के आने मे देर हो गई। पहले से कोई इत्तला

नहीं थी कि देर होगी। आया का नियम यह था कि अरुण के आने पर उसे दिखाकर वह बच्चे को परराम्बुलेटर पर टहलाने ले जाती थी। पर जब काफी देर हो गई, तो रमा ने आया से कह दिया—तुम चली जाओ। शायद उन्हें आने में देर हो।— कहकर मुन्ने को उसकी मां ने फिर आया के सुपुर्द कर दिया। आया अर्द्धउन्मुक मुन्ना को लेकर पार्क के लिए रवाना हो गई। उसे जाते हुए देखकर रमा के मन में यह ख्याल आया कि कभी सुरेश भी इसी प्रकार टहलने जाता होगा। सुरेश का नाम इस प्रसंग में याद आते ही रमा का मन बहुत दुखी हो गया। उसे यह स्मरण करके बहुत बुरा लगा कि वह अब प्रकारान्तर से अपने को मौसी की जगह रख रही है और सारे समीकरण वही हो रहे हैं? क्या यह मन की कमजोरी है या भविष्य की घटनाओं का आभास?

दूसरी शादी से पहले डाक्टर माथुर बहुत ही अच्छे गृहस्थ थे, वह तो हर समय इला को अपने साथ लेकर चलते थे, बल्कि मौसी की यह शिकायत रहती थी कि वह इला को बिल्कुल बिगाड़ रहे हैं। उसपर चोरी से खर्च करते हैं, उसकी हर फरमाइश पूरी करते हैं। और उसी डाक्टर माथुर की यह हालत है कि वह एक ही मकान में रहते हुए इला की तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखते। मौसी के प्रति अवज्ञा तो समझ में आती है कि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं, पर इला बेचारी तो उन्हीं का रक्त-मांस है, जिगर का टुकड़ा है, उसपर यह आक्रोश और उसके प्रति यह उदासीनता क्यों?

आदमी कितनी जल्दी और किस बुरी तरह बदल जाता है। जब से नई मां आई, तब से सुरेश बेचारा तो घर ही में नहीं आया। गनीमत यह है कि उसकी शिक्षा पूरी हो चुकी थी। डाक्टर माथुर ने ब[illegible] डाट से उसकी शादी करवाई थी। मौसी बड़े सपने देख रही थी कि वह [illegible] आदर्श सास बनेगी। जब तक वह दो-चार महीने यहां रही, तब तक मौसी सचमुच उसकी बहू की [illegible] देखभाल करती थी। फिर बड़े प्रेम से उसे पहली बार मायके भेजा। साथ में सुरेश भी गया। [illegible] ना [illegible] एक बार जाना हुआ था [illegible] भी आशा थी कि शायद कोई नाराजगी का [illegible] क्योंकि सुरेश साहब लखनऊ में अच्छे प्रतिष्ठित [illegible]

अधिकारी थे। डाक्टर माथुर सुरेश से कह रहे थे कि और पढो, शोध करो, पर सुरेश का जी शोध मे नही लगता था। वह भीतर ही भीतर नौकरी खोज रहा था। सुरेश अभी लखनऊ मे ही था कि एक दिन डाक्टर माथुर एक तरुणी को ले आए और विना किसी प्रकार की चेतावनी के यह घोपणा कर दी कि मैंने शादी कर ली है।

उन्होने इला से अलग मौनी से यह वात कही, पर यह वात छिपने वाली थोडे थी, फौरन ही घर मे कुहराम मच गया। डाक्टर माथुर इसके लिए तैयार थे। वह शाम की गाडी से अपनी नई पत्नी के साथ कश्मीर रवाना हो गए। मौनी की हालत ऐसी थी कि उनसे वात करना असम्भव समझ कर डाक्टर माथुर ने इला को अपने पास बुलाया और उसके सर पर हाथ रखकर प्यार के साथ कहा वेटी, तुम लोगो का स्वार्थ सुरक्षित है। आज तक जो कुछ मैंने कमाया है, वह सव कुछ तुम तीनो के नाम कर दिया केवल मकान मैंने अपने नाम रखा है। यहा रहो या जहा खुशी हो, तुम लोग रहो। तुम्हारे रहन-सहन का मानदण्ड वही रहेगा जो अव है।

इला ने इस सम्वन्ध मे कोई दिलचस्पी नही दिखलाई। मा ने जो वात कही थी, उसीकी पुनरावृत्ति-सी करते हुए कहा—वावू जी, भैया और भाभी सुनेगे तो क्या कहेगे ?

इसपर डाक्टर माथुर की आखें कुछ क्षण के लिए धुधली हो गई थी, पर वह वोले—वेटी, अभी तुम यह सव वाते नही समझोगी। जव वडी होगी, तव तुम समझोगी। वहरहाल इतना याद रखो कि मैने किसीके साथ अन्याय नही किया है, न करना चाहता हू।

इला ने इसपर भी तर्क करते हुए कहा था—वावू जी, आप तो वडे विद्वान हैं, आपने एक साथ दो शादी कैसे कर ली ?

डाक्टर माथुर ने इस विषय मे तर्क करना नही चाहा था। इतना ही कहा था—पाश्चात्य होता तो मुझे तलाक देना पडता। अच्छे वकीलो की वदौलत सव कुछ हो जाता। मैं इस सम्वन्ध मे और वात करना नही चाहता। तुम अपनी मा से पूछ लो यदि वह तलाक चाहती है, तो मैं उन्हे तलाक दिलवा सकता हू, पर इसमे मुझे तो लाभ है,

उन्हे हानि । नये तरीको से हर वक्त लाभ ही नही होता ।

उस समय जब डाक्टर माथुर अपनी नई पत्नी के साथ कश्मीर मेल मे सवार होकर जा रहे थे, इला ने सारी बाते मा से कह दी थी । मा ने इसका कुछ उत्तर नही दिया था । धीरे-धीरे ये सारी बाते रमा को मालूम हुई थी, पर उसने जान-बूझकर अरुण से यह बात नही बताई थी कि डाक्टर माथुर तलाक देने को तैयार थे । पता नही क्यो वह यह बात अरुण से छिपा गई थी, पर उसके मन मे यह विचार हर समय बना रहता था और उसे शान्ति नही देता था । प्रश्न यह था कि क्या सत्ताईस वर्ष एक साथ गृहस्थी चलाने के बाद केवल एक तरफ से तलाक देने की तैयारी से ही किसी पक्ष को यह अधिकार हो जाता था कि वह दूसरी शादी करे ? अरुण ने यह बताया था कि माकूल वजह न होने पर भी केवल वकीलो के बूते पर तलाक मिल सकता है ।

क्या अरुण भी इस प्रकार जिस दिन चाहे उसे अपने जीवन से अलग कर सकता है ? आज अरुण देर क्यो कर रहा है ? सोसी ने बताया था कि सौत लाने के पहले डाक्टर माथुर भी रात को अक्सर देर से लौटते थे, पूछने पर कह देते थे कि समिति या सभा थी, उसीमे देर हो गई । बाद को पता चला सभा कौन-सी और कैसी थी ।

मुन्ना आया के साथ टहलकर लौट आया । इस समय मुन्ना अपने मा-बाप के साथ रहता था और आया चली जाती थी, पर आज रमा को लग रहा था कि मुन्ना की ममता के लिए उसके मन मे कोई स्थान नही है । वह चाहती थी कि आया और रुके । जिस दिन घर मे कोई पार्टी होती थी, उस दिन आया रोक ली जाती थी । आया पहले से तैयार होकर आती थी । एकाध बार ऐसा भी होता था कि एकाएक पार्टी हो जाती थी, तो भी आया रोक ली जाती थी, पर आज कोई कहना नही था । रमा ने आया से कहा—मुन्ना को दे दो और तुम दरवाजा भेडकर चली जाओ । कल जरा सवेरे आना ।

आया बोतल धोकर उसमे दूध डालकर रोज की तरह सारा प्रबन्ध करके और मुन्ना से विदाई मागकर जाने लगी । जाते समय बोली —आज बाबू जी नही आए क्या बात है ?

क्या बात है, यह रमा स्वय ही नही जानती थी। फिर भी वह बोली—कोई काम पड गया होगा। कई दफे दफ्तर मे काम ज्यादा पड जाता है। तुम जाओ, सवेरे आना।

रमा जानती थी कि सवेरे आना कहने का कोई अर्थ नही होता, क्योकि आया कभी सवेरे नही आती थी। चाहे जितना काम पड़े, आकर वही बहाने बताती थी—बच्चे की तबीयत ठीक नही थी, आदमी रात को शराब पीकर आया था, उससे बक-झक करके बहुत रात मे सोई थी। वही दैनन्दिन। फिर भी एक मत्र की तरह रमा रोज कहती थी और जैसे पत्थर के बुत मत्र सुन लेते हे, उसी तरह आया भी उसे सुन लेती थी। पर आज रमा ने सचमुच दिल से यह कहा था, क्योकि उसे कोई भरोसा नही था। मौसी ने ठीक ही कहा था कि अत्यन्त आदि काल से पुरुष नारी के साथ अन्याय करता आया है। राम और कृष्ण ऐसे गृहस्थो तक ने अन्याय किया, बुद्ध ऐसे महान गृहत्यागी साधको ने भी अन्याय किया, किसीने नारी को उसकी प्राप्य मर्यादा सोलहो आने नही दी। सब उसे गौण, हेय, दोयम दर्जे की मानते रहे। सब उसकी इज्जत मे बट्टा लगाते रहे और यह समझते रहे कि वे अपनी सभ्यता मे चार ही नही चौदह चाद लगा रहे है।

आया चली गई, तो रमा को ऐसा लगा जैसे वह महाशून्य मे लटक-कर रह गई, लटककर भी नही, क्योकि लटकने मे किसी चीज से सम्बन्ध तो बना रहता। वह जैसे भारशून्य हो अन्तरिक्ष मे अस्थिर की पकड मे आई हुई गुड्डी की तरह कभी ऊपर, कभी नीचे होती रही।

मुन्ना भी आज दगा दे गया। बोतल मुह मे डालते ही सो गया। रोज की तरह उसने सैकडो शरारते नही की, वह भी इस समय राजा बेटा बनकर रह गया। आज वह शरारते करता, तो सूनापन कुछ तो भरता। बेचारा मुन्ना! वह क्या जाने कि मा किस प्रकार अपने जीवन को सूना पा रही थी, किस प्रकार उसके दिल मे धुकुर-पुकुर और एक अव्यक्त भय मुगबुगा रहा था। मुन्ना को सुलाकर रमा अरुण की प्रतीक्षा करने लगी। खाना तो उसी समय वह पका चुकी थी, जब मुन्ना टहलने के लिए गया हुआ था। अब तो सिर्फ खाना गर्म रखने की

समस्या थी।

लगभग आठ बजे जब मुन्ना को सोए हुए काफी देर हो चुकी थी, तब अरुण आया। उसके चेहरे पर थकान नही थी, बल्कि एक मुस्कान थिरक रही थी। युद्ध-घोषणा के रूप मे रमा ने कहा—मुन्ना रो-रोकर सो गया।

अरुण के चेहरे पर उत्कण्ठा की रेखाए उभर आई, वह मुन्ना के बिस्तर के पास जाकर उसके सिर पर हाथ रखते हुए बोला—तबीयत तो ठीक है न ?—फिर हाथ हटाकर बोला—कोई तकलीफ तो नही मालूम होती ? पेट मे कुछ गडबडी है क्या ? आया लोग ऐसी ही होती है। मुन्ना ने कही कुछ गडबड-सडबड खा ली होगी।—कहकर उसने पत्नी के चेहरे की तरफ प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

रमा ने इसका उत्तर देना जरूरी नही समझा। उसने पूर्ण रूप से झूठ बोलते हुए कहा—तुम्हारा नाम लेकर रो रहा था।

अरुण ने दफ्तर के कपडे उतारते हुए और कुर्ता-पायजामा पहनते हुए कहा—क्या बताऊ देर हो गई। किसी काम मे देर होती तो भी कोई बात थी, पर व्यर्थ मे देर हुई। विश्वविद्यालय मे भी राजनीति जोरो पर है। गुटबन्दिया चल रही है। हम लोग तो किसी खेत की मूली नही है, डाक्टर माथुर जैसे घडियाल ही इस महासागर के प्राणी है, पर अब लगता है कि यदि हम इस गुट या उस गुट मे शामिल नही हुए तो हम लोगो की भी खैरियत नही है। गुटबन्दी के बिना अब किसीके सिर की खैर नही।

रमा ने कहा तक इसका विश्वास किया, यह कहा नही जा सकता पर उसने छूटते ही कहा—तुम माथुर के गुट मे शामिल तो नही हो रहे हो ?

अरुण इस प्रश्न का पूरा अर्थ समझ चुका था, इसका अर्थ यह था कि तुम हरगिज माथुर के गुट मे शामिल न होना। अरुण को यह बहुत अजीब लगा कि रमा इस प्रकार व्यक्तिगत और पारिवारिक झगडो को विश्वविद्यालय की राजनीति के क्षेत्र मे ले जाना चाहती है। यदि माथुर ने रुक्मी के साथ अन्याय किया, इस कारण विश्वविद्यालय मे अपना स्वार्थ

और प्रवृत्ति चाहे कुछ भी हो, अरुण को चाहिए कि वह माथुर के विरुद्ध गुट मे शरीक हो। यह अजीब स्त्रीबुद्धि है। अरुण को वडी झुझलाहट का अनुभव हुआ। अभी तक वह किसी भी गुट मे शामिल नही था। अपेक्षाकृत कम उम्र के लेक्चरारो का विश्वविद्यालय के काफी हाउस मे एक तरह की अनौपचारिक सभा हुई थी कि किसी भी गुटवन्दी मे शरीक न हुआ जाए, पर उसे बुरा लगा कि यह यहा घर वैठे विना परिस्थिति को कुछ समझे और समझने की कोशिश भी किए विना यह फतवा दे रही है कि डाक्टर माथुर के विरुद्ध गुट मे शामिल हो जाना चाहिए। इससे वढकर अजीव वात क्या हो सकती है? स्पष्ट ही इस-पर मौसी का असर पड रहा है। वह विना कुछ उत्तर दिए, मुह-हाथ धोने गुसलखाने मे चला गया।

लौटकर उसने उस विपय पर कोई वात ही नही चलाई और खाने की मेज पर पहुच गया।

उसे लग रहा था कि मौसी रमा पर इतना छा चुकी है कि शायद रमा को मौका मिले तो यह डाक्टर माथुर को जान से मरवा डाले। इसीपर भारत की ये पढी-लिखी स्त्रिया गर्व करती है कि वे बहुत आधुनिक वन गई हैं। पाश्चात्य दृष्टिकोण (जो वस्तुत विवाह-सम्वन्धी वैयक्तिक दृष्टिकोण या आधुनिक दृष्टिकोण है) यह है कि विवाह एक पारस्परिक ठेका मात्र है, जिसे दोनो पक्षो मे से कोई भी पक्ष कभी नोटिस देकर भग कर सकता है, फिर व्यर्थ मे यह प्रतिहिंसामूलक विचार क्यो, कि एक खूखार कुत्ता वन डा० माथुर का सर्वत्र पीछा किया जाए और जहा भी मौका मिले, उसपर वार किया जाए, उसपर गोलिया चलाई जाए। यदि पारिवारिक क्षेत्र मे उसे शिकस्त नही दे पाए, तो किसी दूसरे क्षेत्र मे उनकी मिट्टी पलीद करो, उसकी जडे खोदो, उसके भरे हुए खलियान मे आग लगा दो। मौसी स्वय तो कुछ कर नही पा रही है, इसलिए जमालो वनकर रमा को भडका रही है और उस अर्द्ध-शिक्षिता औरत के भडकावे मे आकर सुशिक्षित रमा यह समझ रही है कि वह स्त्रियो की वहुत वडी लडाई लड रही है। उसके लिए अपने पति का स्वार्थ, उसकी तरक्की, सव गौण हो चुका है, केवल यही रह गया है

कि माथुर को मारो, कसके मारो, ऐसा मारो कि वह जाने न पाए, उसको पानी न मिले।

अरुण बिना कुछ कहे खाने पर जुट पड़ा।

पति को भूखे की तरह खाने पर जुट पड़ते देखकर रमा की उलझनें कुछ दूर हुई और वह कुछ क्षण के लिए भूल गई कि अभी वह बैठे-बैठे पति के विरुद्ध तरह-तरह के अस्पष्ट सन्देह कर रही थी और उसे सीमा की श्रेणी में ही डाल रही थी, बोली—स्वयं ही खाना शुरू कर दिया ?— थोड़ी देर तक दोनों कुछ नहीं बोले। कमरे में केवल घड़ियों की टिक-टिक और खाना खाने की आवाज मालूम हो रही थी, बगल के कमरे से मुन्ना की नियमित मृदु सांसें सुनाई पड़ रही थीं। जब खाते-खाते थोड़ी देर हो गई और अरुण ने कुछ नहीं कहा, तो रमा एकाएक बोली—डाक्टर माथुर गुटबन्दी की ही बदौलत विश्वविद्यालय में बड़े माने जाते हैं। सीमा ने बताया था कि दूसरी शादी करने पर वहां कुछ लोगों ने विशेषकर इस कारण कि शादी एक छात्रा से हुई थी बहुत आन्दोलन किया था, पर गुटबन्दी की बदौलत वह बच गए। है न यही बात ?

अरुण को बहुत बुरा लगा कि एक तो ऐसे विषय पर, जिसमें कोई ज्ञान नहीं वह एक विशेष उद्देश्य से बोल रही है, दूसरे सीमा का ऐसे हवाला दे रही है जैसे वह सर्वज्ञ हो और उसे सब कुछ की जानकारी हो। नाराज होकर बोला—बल्कि असली बात यों है कि गुटबन्दी के ही कारण वह आन्दोलन चला था। कुछ लोग चाहते थे कि इस मौके से फायदा उठाकर डाक्टर माथुर को नीचा दिखाया जाए। इसमें उनके प्रतिद्वन्द्वी डाक्टर चावला ने सबसे ज्यादा भाग लिया। उनका उद्देश्य [illegible] छात्राओं के सम्मान की रक्षा या गुरु-शिष्य सम्बन्ध की पवित्रता को प्रतिष्ठित रखना नहीं था, बल्कि ऐसा वातावरण पैदा करना था जिससे डाक्टर माथुर स्वयं ही हैरान होकर भाग खड़े हों, ताकि चावला को उन्हीं की कुर्सी मिले। इधर सीमी [illegible] कि उनके [illegible] के लिए चावला [illegible] रहा था।

रमा को इतनी सारी बात मालूम नहीं थी। उसे लगा कि अरुण जो कुछ कह रहा है वह ठीक है। फिर भी जिद से [illegible] बोली—यदि

कोई किसी बुरे उद्देश्य से भी अच्छा काम करे, तो अच्छा ही है। उससे काम तो बुरा नही हो जाता।

अरुण को इस तरह अपनी पत्नी से बहस करते हुए अच्छा नही लगा। उसने स्वय डाक्टर माथुर की दूसरी शादी का समर्थन नही किया था और मौसी के साथ उसे पूरी सहानुभूति थी, पर वह यह नही चाहता था कि इसीको केन्द्र-बिन्दु बनाकर एक अन्तहीन द्वन्द्व का चक्र जारी रखा जाए, धर्म-युद्ध-सा जैसे ईसाइयो ने येरुसलम के उद्धार के लिए सदियो तक युद्ध जारी रखा था। यदि माथुर साहब ने एक बुरा काम किया था तो उसके विरुद्ध कदम उठाने का रास्ता खुला हुआ था। सुरेश नौकरी पर लग ही गया है। बस घर मिलने की देर है। तब तक मौसी को यहा आकर इला के साथ रहने का निमन्त्रण दिया गया था, पर मौसी ने इसे स्वीकार नही किया था। अब फजूल मे जिहाद-सा कर रही है, जिसका कोई नतीजा नही निकलने का सिवाय इसके कि अपनी शान्ति भग हो, पडौसियो के लिए चटपटा मसाला मिले और रमा ऐसी कमजोर दिल स्त्री का दिमाग खराब हो, बोला—जिन लोगो ने डाक्टर माथुर के खिलाफ यह आन्दोलन शुरू किया था कि एक पत्नी के रहते हुए उन्होने अपनी एक छात्रा से शादी कर ली, उन लोगो को उस छात्रा से कोई सहानुभूति नही थी। सच तो यह है कि चावला और उनके साथी महा लम्पट है। डाक्टर माथुर मे फिर भी इतना नैतिक साहस तो है कि उन्हे एक छात्रा से प्रेम हो गया, तो उन्होने उससे शादी कर ली, पर चावला ऐसे लोग अपने व्यभिचारो मे एक के भी उपासक नही है। वे तो पूरी भ्रमरवृत्ति से काम लेते है, आज एक के साथ है तो कल दूसरी के साथ। उनके लिए कुमारी, विवाहिता या विधवा किसी प्रकार की रोक नही है। डाक्टर माथुर ने ऐसा तो कभी नही किया।

रमा ने देखा कि उसके क्रोध बल्कि बेचैनी को कोई दिशा नही मिल रही है। फिर भी भीतर कुछ सुगबुगा रहा था, जो बाहर आने के लिए रास्ता खोज रहा था, बोली—डाक्टर माथुर यदि चावला की तरह होते तो आज मौसी इस प्रकार अनाथ तो न हो जाती।

—यानी ?—अरुण ने खाना खाना स्थगित रखकर परम आश्चर्य

और व्यग्य के साथ कहा—यानी तुम्हारा मतलब यह है कि पति भले ही भ्रमरवृत्ति वाला हो पर वह सौत न लाए। मौसी के प्रति अन्ध-प्रेम के कारण तुम किस गदगी मे पहुच रही हो, जरा सोचो। दूसरे शब्दो मे तुम कह रही हो कि डाक्टर माथुर यदि उस लड़की के साथ गुप्त प्रेम रखते, तो वह अधिक नैतिक होता।

—कम से कम मौसी को सड़क पर आने की नौबत तो न आती, जैसी कि आज आ चुकी है।

—सड़क पर जाने से बचाने के लिए ही डाक्टर माथुर ने तुम्हारी मौसी को तलाक नहीं दिया। किसी न किसी रूप मे उन्हे तलाक या स्थायी रूप मे अलग तो वह कर ही सकते थे। एक तरफ कथित आधुनिक महिलाए यह नारा बुलन्द करना चाहती है कि विवाह एक ठेका मात्र है और दूसरी तरफ तुम लोग उसकी पवित्रता को सुरक्षित रखने के लिए पति को व्यभिचार की इजाजत देती हो पर वह दूसरी शादी न करे। यह कहा तक नैतिक है, जरा दिमाग ठीक करके सोचो। चावला एक नम्बर का दुष्ट है। सिफारिशो के कारण उसकी नियुक्ति हुई थी और बराबर उसी प्रकार वह ऊपर चढता गया। अब वह विभाग का अध्यक्ष होने का स्वप्न देख रहा है। इसी उद्देश्य से उसने बराबर डाक्टर माथुर के विरुद्ध आन्दोलन जारी रखा है।

रमा ने चावला को कभी देखा नहीं था। शायद उसका नाम पहली बार ही सुना था। पर वह एकाएक बोल पड़ी—यह भी तो हो सकता है कि चावला इस प्रकार का न हो जैसा माथुर साहब उसे चित्रित करते है। सम्भव है, वह बहुत अच्छा गृहस्थ हो जैसा कि तुम खुद ही मान रहे हो।

अरुण दूध का गिलास उठाते हुए बोला—हा, चावला बहुत अच्छा गृहस्थ है, बहुत अच्छा अध्यापक है, बस मौसी से इतना कह देना कि उससे ज्यादा न मिला करे। नहीं तो बदनाम हो जाएगी। वह ऐसा दुष्ट है कि बदनाम करके छोड़ने वाला नहीं है। वह अगर माथुर पर सिक्का न जमा पाया, तो इसी तरह उनका अपमान करेगा। फिर वह कहता फिरेगा कि मैंने ऐसा किया।

यह सुनकर पता नही कैसे क्या हुआ, रमा हस पडी और उसके मन का सारा मैल इस हसी की सास से एक ही क्षण मे निकल गया। थोडी ही देर मे दोनो मुह-हाथ धोकर मुन्ना की खाट के पास कुछ देर खडे रहे और फिर बत्ती बुझाकर आलिगनबद्ध हो गए। बार-बार रमा को यही बात सुनाई पड रही थी, चावला कोई आदमी न हुआ नाहर हुआ कि वह मौसी को खा जाएगा। हा-हा-हि-हि-हि-हि ।

उसे इस विचार से इतनी गुदगुदी लग रही थी कि वह बार-बार वही बात करती जा रही थी। यहा तक कि अन्त मे अरुण को उसे डाटना पडा—मुन्ना जग जाएगा, अब उस दुष्ट चावला की बात छोडो। अब केवल मेरी तरफ ध्यान दो, मेरी तरफ

कहकर उसने उसे पूर्ण रूप से दबोच लिया।

३

मेहरी सुहासिनी को सवेरे आने के लिए कल कहा गया था, पर वह देर से आई और जब आई भी तो काम करने के लिए नही आई, एक समस्या लेकर आई, बोली—साहब कहा हैं ? कल रात को मेरा आदमी शराब पीकर जाने क्या कर बैठा कि गिरफ्तार हो गया। सवेरे खबर मिली।

रमा असन्तुष्ट होकर बोली—साहब तो सो रहे है। वह इसमे क्या करेंगे ?

इसपर वह रोकर बोली—मैं थाने मे गई थी, तो पुलिस वालो ने कहा कि कोई जमानत लाओ तो छूट सकता है। मैं कहा से जमानत लाऊ ? इसलिए मैं दौडी-भागी यहा आ गई। अगर साहब जमानत दें, तो वह छूट सकता है।

अरुण सो नही रहा था, वह बिस्तरे पर लेटे-लेटे मुन्ना के साथ खेल रहा था। उसने आया की सारी बाते सुनी। एकाएक बाहर आकर बोला—अगर वह गिरफ्तार हो गया तो अच्छा ही है। तू ही तो कहा करती थी कि वह कुछ कमाता नही है, मारता-पीटता है, शराब पीता

है, फिर उसके लिए क्यों परेशान हो रही है ?

सुहागिनी व्याकुलता के साथ बोली—वाह । कुछ भी करें वह मेरे स्वामी हैं । अब विपदा पड़ी है, तो मुझे उनका साथ देना चाहिए । बाबू जी, आप चलिए ।

अरुण मुन्ना को आसमान की तरफ उछालते हुए बोला—तू तो रोज उससे छुटकारा चाहती थी और बीवी जी को अक्सर पीठ खोलकर दिखाती थी कि आज इस तरह मारा है और अब जब कि उससे खुद ही छुटकारा हो रहा है तो तू मेरे पीछे पड़ी है । वह कहीं जा थोड़े ही रहा है । जेल में आजकल बड़े आराम हैं । वह सात-छः महीने वहां रहेगा, तो उसका नशा हिरन हो जाएगा । और तू तो कहती थी कि वह दूसरी औरतों के पीछे घूमता है और सारे पैसे उन्हीं पर लुटाता है । फिर तो तुझे खुशी ही मनानी चाहिए । उसे वे औरतें जाकर छुड़ाएं जिनपर वह अपनी सारी कमाई फूंकता रहा ।

मुन्ना ने किलकिलाकर फिर इच्छा प्रकट की कि उसे आकाश की तरफ फेंका जाए । अरुण ने उसकी इच्छा का अनुसरण किया । सुहागिनी ने मुन्ना को मना किया, पर मुन्ना जब बाप की गोद में होता है, तो वह किसीकी भी परवाह नहीं करता, यहां तक कि आया तक की भी नहीं जो पहले भले ही केवल आया रही हो, अब आया पर सहेली हो गई थी । अरुण ने दो-तीन बार जल्दी-जल्दी मुन्ना को आकाश की तरफ फेंककर आया के हाथ में दे दिया । सुहागिनी ने उसे ले लिया । पर बोली—बाबूजी, मैं मुफ्त में आपके घर काम करूंगी, आप उन्हें जैसे बने छुड़ा दीजिए—कहकर उसने मुन्ना को उसकी मां के सुपुर्द करना चाहा पर मुन्ना मां के पास न जाकर बाप के पास जाने की इच्छा प्रकट करने लगा । इसी समय रमा ने आगे बढ़कर जल्दी से मुन्ना को पकड़ लिया और बोली—साहब ठीक तो कह रहे हैं । और बात [illegible], जब वह दूसरी औरतों पर जान देता था तो तू उस वक्त क्या परेशान हो रही है ? वे औरतें ही उसे जाकर छुड़ाएं, तू क्या रो-बिलख रही है ?

इसपर सुहागिनी एकदम फफक-फफककर रोने लगी, बोली—भला वे [illegible] कभी किसी की हुई हैं या उसीकी होंगी ? यहीं

बात तो मैं उसे रोज समझाया करती थी, पर वह मानता नही था। अगर मानता तो उसकी यह हालत थोडे ही होती। बीवी जी, मैंने अपने आदमी को हवालात के अन्दर बन्द देखा तो मैं रो पडी। उनका भी गला भर आया। मैंने साफ देखा, अगर पुलिस वाले और दूसरे साथ के लोग न होते तो वह मुझसे लिपटकर रो पडते।—कहकर सुहासिनी एकाएक और जोर से रोने लगी।

अरुण ने हंसते हुए कहा—उसका यह सब दिखावा था। उन औरतो को भी खबर लगी होगी, वे ही जाकर उसे छुडाए, कम-से-कम कुछ दिन ठहर तो जा, जरा जेलखाने की रोटिया पेट मे जाने दे, अभी तो जेल पहुचा ही नही।

पर सुहासिनी किसी भी प्रकार नही मानी। अरुण ने और रमा ने उसे जितना समझाया, वह उतनी ही विकल और बेचैन होने लगी। जब अरुण ने बार-बार वही बात कही कि वह तो तेरा है ही नही, जिन औरतो के साथ शराब पीता है और रात काटता है, उन्हीका है, तो वह प्रतिघात करती हुई बोली—वह उनका कैसे है, वह मेरा है। मेरे साथ उसकी शादी हुई है। वे तो हरजाई है, बेसवा है उनका काम ही है लूट-मार करना और भोले-भाले मर्दो को फसाना।

अरुण ने केवल आनन्द लेने के लिए कहा—तू अपने मर्द को भोला-भाला समझती है।

—भोले-भाले नही तो क्या है? जब उन्हे इतनी तमीज नही है कि कौन अपनी है और कौन पराई, किसपर पैसा खर्चना चाहिए और किस पर नही, तो वह भोले-भाले नही तो क्या हुए?

अरुण ने फिर भी प्रयास जारी रखते हुए कहा—यह जो तुझे रोज-रोज मारता-पीटता है, तेरे सारे पैसे छीन लेता है, तेरे बच्चो को भूखा रखता है, यह भी शायद उसका भोलापन है?

—और नही तो क्या, जो उनको अक्ल होती तो असली-नकली नही पहचानते?

रमा ने अरुण से कहा—अब जाने दो। तुम उसकी जमानत दे दो, उसे अच्छा होने का एक मौका तो दो।

बसे। कहा, शाम तक तो कोई ऐसी खबर भी नही थी कि वह बीमार है। तो शायद हृदय की गति एकाएक रुक जाने से वह मर गए जैसा कि आजकल अक्सर सुनने मे आता है। सुरेश ससुराल गया हुआ था। मौसी ने शका-भरी प्रश्नसूचक दृष्टियो के उत्तर मे कहा था—सुना है कि वह लखनऊ मे शादी करने गए है। थोडी देर हुई, चावला साहब का टेलीफोन आया था।

सुनकर पति-पत्नी दोनो हक्के-बक्के रह गए थे। अरुण ने कुछ नही कहा था पर रमा ने कहा था—भला ऐसा कैसे हो सकता। जरूर चावला साहब ने कोई गलती की होगी। मौसा कुछ बताकर तो गए होगे।

मौसी ने कहा था—यहाँ बताकर गए कि मेरठ मे कुछ काम है, पर मेरी आत्मा कहती है कि चावला साहब सही कह रहे है, महीने दो महीने से अपने डाक्टर साहब बहुत परेशान थे और रात को अक्सर देर से लौटते। आने पर खाना भी नही खाते थे। इला से भी वह बहुत दूर हटते जा रहे थे।

फिर भी उस रात को पति-पत्नी ने मा और बेटी को यह समझाया था कि कही न कही गलतफहमी ज़रूर हुई होगी और जाकर अरुण उन्हे घर पहुचा आया था। अगले दिन ही शादी वाली खबर का समर्थन हुआ था और उससे अगले दिन तो डाक्टर माथुर अपनी नई पत्नी को ले आए थे और उसी रात को वह हनीमून के लिए कश्मीर मेल से रवाना हो गए थे। सीटे शायद पहले से ही रिज़र्व थी।

एक क्षण के अन्दर ये सारी बाते अरुण के दिमाग मे कौध गई। वह बिना कुछ कहे बगल के मकान मे गया, जहा टेलीफोन था। वहा से लौट-कर सुहासिनी से बोला—मैंने टेलीफोन से सारी बाते कर ली। तुम्हारा काम दस बजे से पहले नही हो सकता। मैं रोज की तरह कालेज न जा-कर पहले थाने जाऊगा। तुम तब तक मुन्ना को सम्भालो और घर का काम करो। दो-चार घण्टे हवालात के सीखचो के अन्दर रहेगा, तो उसके दिमाग पर अच्छा असर होगा। जा ओ, काम करो।

अब की बार सुहासिनी भी हस पडी। उसने मुन्ना को सम्भाल लिया और घर के कामकाज मे जुट गई। नौ बजे ही अरुण के मित्र अध्यापक

विद्यानिवास जी आ गए। रमा ने उन्हे खाने के लिए पूछा क्योकि वह भी अरुण के कालेज मे ही अध्यापक थे और उन्हे भी कालेज जाना था। पर वह अरुण की तरह बाहर से आए हुए अध्यापक नही थे, बल्कि दिल्ली के ही आदमी थे। खानदान के कई मकान थे, दिल्ली की जमीन मे उनकी गहरी जडे थी।

अरुण ने विद्यानिवास को ही टेलीफोन किया था। उसे मालूम था कि विद्यानिवास अध्यापन करने के अतिरिक्त और बहुत-से धन्धे करते है। पुलिस वालो से उनका अच्छा मेल है। शायद लेन-देन भी है। थोडे मे अरुण ने उन्हे सुहासिनी के पति जगन्नाथ का मामला समझाया, सुनकर वह बोले—भई, सब इस बात पर है। मुझे ठीक-ठीक पता नही, सारी बात इसपर निर्भर है कि जगन्नाथ ने कितना क्या किया। अगर पुलिस वालो ने रस्म बनाने के लिए गिरफ्तारी की है, जैसा कि अक्सर वे करते है तो फिर वो दो-एक दिन मे छूट जाएगा। ज्यादा दिक्कत न होगी। अगली बात है कि मुलजिम ने किया क्या है और उसपर सबूत कितना है।

अरुण को पता नही था कि जगन्नाथ ने क्या किया है और न सुहासिनी को ही पता था। बस, यही सुना था कि शराब पीकर झगडा किया है। किससे झगडा किया, किया तो उसमे कितनी मार-पिटाई हुई, कोई मर तो नही गया, यह सब किसी को पता नही था। विद्यानिवास ने सुहासिनी से पूछा—कही किसी को जान से तो नही मार डाला?

सुनकर सुहासिनी सन्न रह गई, बोली—बाबू जी, मुझे तो कुछ [illegible] नही है पर वह करेगा क्या? जब वह शराब पीकर घर पर [illegible] मार-पीट करता है तो मै उसके हाथ पकडकर बिठा देती हू और [illegible] फौरन ही बैठ जाता है। फिर कोई झगडा नही करता।

विद्यानिवास और अरुण ने दृष्टि-विनिमय किया। वे [illegible] [illegible]। विद्यानिवास को पता नही [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

[illegible]

जला सकता, मिल मे नाम को ही मजदूर है, ब्राह्मण करके लोगो ने उसे पानी पिलाने मे रख दिया है, तभी उनका निभ रहा है।

विद्यानिवास ने हसकर कहा—तव तो जगन्नाथ वडा गुणी आदमी है, पर ऐसे गुणियो के लिए सरकार ने जहा-तहा वहुत वडे विना किराये के मकान वना रखे हैं। तुम्हे उसे वहा रखने मे क्या एतराज है ?

रमा वीच मे पडी और वोली—आप लोग तो मजाक कर रहे है और इस वेचारी की जान निकल रही है। किसी तरह उसे जल्दी छुडाइए, नही तो व्यर्थ मे इसको भी परेशानी होगी और आप लोगो को भी।

विद्यानिवास ने अव व्यावहारिक पक्ष उठाते हुए सुहासिनी से कहा—तुम्हारे पास कितने रुपये है ?

—रुपये काहे के ?—सुहासिनी ने चौंककर कहा।

विद्यानिवास वोले—आखिर पुलिस वाले कोई जगन्नाथ के मामा नही है। वे रुपया-पैसा लेगे, जमानत मागेगे, वकील करना पडेगा, इन सवमे रुपये खर्च होगे। रुपये कहा से आएगे ?

इसके उत्तर मे सुहासिनी रोने को हुई और वोली—मैं किसी तरह वच्चो को पालती हू। वह तो घर मे एक पैसा भी नही देते थे। वावू जी-वीवी जी सव जानते है।

विद्यानिवास निराशा के साथ वोला—फिर क्या होगा ? विना पैसे के तो एक कदम भी नही चल सकते। पैसो के पहियो पर ही समाज की सारी गाडिया चलती हैं।

सुहासिनी वोली—मैं हमेशा इस घर मे मुफ्त मे काम करूगी। वावू जी, एक दफे उसे छुडा तो दीजिए।

विद्यानिवास समझ गया कि स्थिति क्या है। थोडी ही देर मे विद्यानिवास अरुण और सुहासिनी को अपनी मोटर पर विठाकर थाने के लिए रवाना हो गए। थाने से दूर एक पेड के नीचे मोटर रखी और फिर विद्यानिवास और अरुण थाने की ओर चल पडे। सुहासिनी मोटर मे ही वैठी रही। सिपाही के मना करते-करते विद्यानिवास सीधे दरोगा जी के कमरे मे घुस गए और जव पहरेवाले सिपाही ने देखा कि दरोगा जी ने खडे होकर विद्यानिवास का मुस्कराते हुए स्वागत किया, तो वह वाहर

चला गया। विद्यानिवास ने बातचीत शुरू की तो मालूम हुआ कि जगन्नाथ तथा उसके दो साथी सड़क के किनारे बैठकर एक जगह शराब पी रहे थे और जोर-जोर से बातें कर रहे थे। बातें करते-करते आपस में कुछ बारीक मतभेद हो गया, मतभेद ने जल्दी ही गाली-गुफ्ते का रूप धारण किया और फिर मुहल्ले वाले बीच में पड़ने आए, तो जैसा कि शराबियों में होता है, आपसी मतभेद भुलाकर वे मुहल्ले वालों से लड़ पड़े। मारपीट हो गई। दरोगा जी ने बताया—हम एक सौ सात का मुकदमा करने जा रहे हैं।

विद्यानिवास समझ गए कि मामला कुछ भी नहीं है। सौ रुपये के अन्दर निपट जाएगा। मांगेंगे तो ज्यादा, पर इतने में ही मामला तय होगा। उन्होंने अरुण को बाहर जाने के लिए कहा। अरुण समझ गया कि अब म्याऊँ के ठौर वाली बातचीत होगी।

अरुण के जाते ही दरोगा ने मेज की तरफ देखते हुए कहा—आप तो जानते हैं कि हमारे इस समय के शासक शराब के कितने खिलाफ हैं। शराब पीना और पीकर गाली-गलौज झगड़ा करना, यह कितनी खराब बात है। अगर लोग ऐसा करें, तो राज कैसे चल सकता है? अब हम लोगों को यह समझ लेना चाहिए कि हम आजाद हो गए हैं। हमें इस तरह से चलना चाहिए कि सबका भला हो। रामराज्य तभी हो सकता है।

रामराज्य का नाम सुनकर विद्यानिवास समझ गए कि अब शुभ वाला मुहूर्त आया है। यदि इस समय चूक गए, तो पता नहीं कितना लम्बा व्याख्यान सुनना पड़े और कितना नकद देना पड़े। इसलिए उन्होंने जेबकतरों जैसी चालाकी से जेब से एक फड़फड़ाता हुआ सौ का नोट निकाला और दबाकर उसे दरोगा जी की जेब में डाल दिया। यह काम इतनी फुर्ती से हुआ कि दरोगा जी मुश्किल से ही पहचान पाए कि यह सौ का नोट है। व्याख्यान देते समय उनके चेहरे पर जो रेखाएँ उभर आई थीं, वे कुछ हद तक शिथिल हो गईं, पर उन्होंने फिर से बराबर उभरते हुए कहा—नहीं, इतने में नहीं। जुर्म कितना संगीन है, यह तो देखिए। मैं ईश्वर को क्या मुँह दिखाऊँगा

अध्यापक विद्यानिवास जानते थे कि कुछ और देना पडेगा। दरोगा बोला—नही, इतने मे नही। आखिर मुहल्ले वाले जब आएगे तो हम क्या कहेगे, आजकल बात का बतगड बन जाता है। लोग छोटी-छोटी बात को ससद तक ले उडते है, आप रखिए।

कहा तो उसने आप रखिए, पर नोट उसकी जेब मे शायद रामराज्य मे गोता लगाता रहा, झेपकर आख मिलाते हुए बोला—आप पुराने होकर ऐसा करते है, हमारा पेट काटते है। चीजे कितनी महगी है, यह सोचिए।

विद्यानिवास समझ गया कि अब रामराज्य की बात खत्म हो गई और सीधे-सीधे पेट और भेट की बात आ गई। उन्होने उसी फुर्ती से दस का एक नोट और निकाला और उसे भी उसी गर्त मे ठेल दिया जहा सौ का नोट बिना डकार पैदा किए समा गया था। बोले—यह साला तो कुछ कमाता नही, इसकी बीबी नाम के लिए आया है पर है महरी, इससे ज्यादा उसके बस का नही है। मैं तो अपने दोस्त के कारण आ गया, जिनके यहा वह महरी है। मुझे कोई गर्ज नही है। मैं तो इसलिए आया कि खामखाह वकीलो को क्यो पैसा खिलाया जाए। रामराज्य मे तो आपस मे ही फैसला होना चाहिए। हम तो अदालतो मे विश्वास नही करते।

दरोगा निराश हो चुका था, फिर भी बोला—अच्छा पाच और लाइए। बात यह है कि अकेले उसे तो छोड नही सकते। मुझे या तो तीनो का चालान करना पडेगा या तीनो को छोडना पडेगा। कुछ भी नही पडा। एक-एक आदमी पर पचास रुपया भी तो नही पडा, फिर इसमे हिस्से कितने है। ऊपर से नीचे तक सबको देना पडेगा, तभी पचेगा। नही तो अपने को ही हवालात मे बन्द होना पडेगा। जमाना बहुत ही बुरा है, डिमोक्रेमी है न, पब्लिक की राय हर बात मे चलती है।

विद्यानिवास ने पाच का नोट और दे दिया। वह प्रसव करानेवाली डाक्टर की तरह पहले से तैयार होकर आए थे और जानते थे किस प्रकार सौ के बाद दस और दस के बाद पाच देना पडेगा। वह मन ही मन खुश हुए कि जैसा सोचा था, मामला उसी क्रम से मिट-निपट गया।

वह उठ खडे हुए, बोले—कब तक उम्मीद करू कि जगन्नाथ को आप छोड देंगे ?

दरोगा जी संक्षिप्त रूप मे बोले—रात को घर मे सोएगा। इससे ज्यादा कुछ नही कह सकते और न आप किसीसे कुछ कहे। आप तो जानते है कि यहा तो वही नीति है, रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाइ पर वचन न जाई।

विद्यानिवास कमरे से निकलते हुए बोले—रामराज्य मे ऐसा ही होना चाहिए।—इसपर अब की बार दरोगा भी हस पडा और विद्यानिवास भी हस पडे। बाहर खडा अरुण समझ गया कि पूर्णाहुति हो गई और वर भी मिल गया, फिर भी उसे बडा कौतूहल हो रहा था कि कैसे क्या हुआ। विद्यानिवास ने मोटर तक पहुचते पहुचते सारी बात बता दी। अरुण बोला—मेरे पास तो इतने रुपये है नही, कल दूगा

पर विद्यानिवास बोला—रुपया मै नही लेने का। मेरे यहा कई दिन से महरी नही है। बीबी पीछे पडी है। तुम इसे हमारे यहा लगा दो, पैसा धीरे-धीरे कट जाएगा।

मोटर बिल्कुल सामने आ गई थी और सुहागिनी कान खडे करके उनकी बाते सुन रही थी। इसलिए विद्यानिवास थोडी दूर पर खडे हो गए और अंग्रेजी मे अरुण से बोले—पर इसे घूस की बात बतानी नही चाहिए। इसे तो जमानत की ही बात कहेगे ताकि जगन्नाथ महोदय भी काबू मे रहे। इसे यही समझा देना है कि एक तो मेरे यहा काम करना पडेगा या मुझे कोई महरी खोज देनी पडेगी और दूसरे जगन्नाथ पण्डित से यह कहे कि अगर फिर कभी बदमाशी की तो आइन्दा किसी तरह नही बच सकोगे।

अरुण इसपर बहुत खुश हुआ, बोला—तुम्हारी व्यावहारिक बुद्धि की दाद देता हू।

विद्यानिवास की बाछे खिल गई। दोनो मोटर पर चढ गए और सुहागिनी से बताया कि इस तरह से जमानत हो गई। सुहागिनी ने पूछा कि कब छूटेगे ? तो विद्यानिवास बोले रात तक छूट जाएगा।

तब अरुण ने बताया कि किस प्रकार विद्यानिवास के यहा महरी

नही है और उसे वहा भी उसी तनख्वाह पर काम करना पडेगा जिसपर वह अरुण के यहा काम करती है। वह राजी हो गई। विद्यानिवास ने सुहासिनी को अपने घर पर छोड दिया और दोनो खुश होकर कालेज चले गए कि एक आदमी को सुधारने का अच्छा और सस्ता उपाय कर दिया। दोनो का मन नैतिक सफलता से तमतमा रहा था।

४

सुरेश तब से घर नही आया था, जब से उसकी नई मा आई थी। नौकरी के कारण अब तो उसे कानपुर मे रहना ही था, पर ससुराल मे रहना अच्छा नही लगता था, इसलिए वह मा को लिख रहा था कि मैं एक छोटे-से फ्लैट की कोशिश मे हू। यदि यहा मकान नही मिला, तो मैं यह नौकरी ही छोड दूगा।

नौकरी छोड दूगा पढकर उसकी मा को बहुत चिन्ता हुई। इस समय तो वही एकमात्र सहारा दिखाई दे रहा था। यदि वह नौकरी छोड दे, फिर तो सब लोग बुरी तरह मझधार मे हो जाए। यो उसकी नौकरी रहते कुछ आशा की रेखाए तो बनी हुई थी। मा ने सुरेश को पत्र लिखा—तुम और चाहे जो कुछ करना, पर नौकरी न छोडना। अब तुम ही मेरे और इला के एकमात्र सहारा हो। मैं यहा का एक पैसा भी लेना नही चाहती। ले रही हू वह मजबूरी है, पर ऐसा लगता है कि यदि मैं चाहू भी तो कुछ दिनो मे यहा ऐसी स्थिति हो जाएगी कि हम दोनो को रोटी के लाले पड जाएगे। तुम्हारा ससुराल मे रहना विशेषकर मजबूरी मे ऐसी कोई विपत्ति नही है कि तुम उससे बचने के लिए दूसरी उससे बडी विपत्ति के मुह मे समा जाओ। यह तो तवे से चूल्हे मे छलाग लगाना होगा।

उधर से उत्तर आया—मा, तुम समझती नही हो कि ससुराल मे रहना मेरे लिए किस कारण कठिन हो रहा है। नही, शिप्रा के साथ किसी प्रकार कोई अनबन नही है, बल्कि वही जोर दे रही है कि यहा अब

रहना अच्छा नहीं लगता। जब तक पिता जी ने दूसरी शादी नहीं की थी, तब तक यहां वातावरण कुछ खराब नहीं था, पर जब से उनकी शादी की खबर यहां आई है, तब से मेरी हालत एक यतीम की तरह हो गई है। पहले नौकरी दिलाना एक कर्त्तव्य की पूर्ति मात्र समझी जाती थी जैसा कि हर प्रभावशाली ससुर और साले को करना चाहिए, पर अब यह समझा जा रहा है जैसे मुझे कहीं जगह नहीं हो और मुझे यहां अनाथ के रूप में आश्रय दिया गया है। इसलिए मैं यहां एक क्षण भी नहीं रहना चाहता।

अगले पत्र में और स्पष्टीकरण आया, जिसमें लिखा था—मुझे चाहे तीस रुपये कम मिलें, पर मैं यह नौकरी छोड़ देना चाहता हूं। अच्छा तो हो कि नौकरी किसी और स्थान में मिले। मैं ससुराल के वातावरण से दूर जाना चाहता हूं। पिता जी के दूसरे विवाह के कारण मेरी स्थिति बहुत शोचनीय हो गई है। सालियां तो दिल्लगी करती ही हैं, और लोग भी पीठ पीछे हंसते हैं, इसमें सन्देह नहीं। उन लोगों ने वातावरण इतना गन्दा और असम्मानजनक बना दिया कि एक दिन मुझे नाराज होकर खाने की मेज पर एक साली से कहना ही पड़ा—तुम्हीं लोग विवाह को एक ठेका मात्र बनाना चाहती हो, जिसे दोनों में से कोई भी हिस्सेदार समाप्त कर सकता है। इसे तुम तलाक का अधिकार कहती हो। पर जब कोई पुरुष इसका इस्तेमाल करता है यानी ठेका से अलग हो जाता है, तो तुम्हीं लोग प्राचीनता के प्रभाव में आकर उसकी सबसे खिल्ली उड़ाती हो। पाश्चात्य में तो कई ऊंचे कलाकार और नोबल पुरस्कार श्रेणी के लेखक और वैज्ञानिक अपनी पुरानी पत्नी को तलाक देकर नई पत्नी से शादी कर चुके हैं, पर वहां कोई शोर नहीं मचता।

यों तो ससुर साहब पीठ पीछे पिता जी की निन्दा कर चुके थे, यद्यपि वह पिता जी के पैर के धोवन के बराबर नहीं हैं, क्योंकि पिता जी से यह तो समझता हूं कि जो कुछ कर रहे हैं [illegible] कर रहे हैं, पर ससुर साहब के सम्बन्ध में यह स्पष्ट है कि वह नम्बरी [illegible] हैं। उस समय जब उन्होंने मुझे [illegible] की मेज पर [illegible] में देखा, तो बोले—ठीक तो है तुम चाहे [illegible] तो पुराने [illegible] पर चलो कि पति और पत्नी

का सम्बन्ध विल्कुल अविच्छेद्य है या यह मानो कि अन्य सारे सामाजिक सम्बन्धो की तरह यह भी एक सम्बन्ध है, जो सम्बन्ध वालो की इच्छा के अनुसार तोडा जा सकता है।

मा, तुम समझ ही रही हो कि मैं क्यो अब इस घर मे रहना नही चाहता। दो-एक बार शिप्रा ने बाबू जी की तरफदारी की तो सुनता हू कि छोटी साली जो बी० ए० मे पढती है, उससे बोली--दीदी, तुम खाम-ख्वाह जीजा जी की तरफदारी करती हो। ईश्वर न करे, पर कल तुम मर जाओ या ज्यादा बीमार हो जाओ तो जीजा जी फौरन दूसरी शादी कर लेगे। तब यदि तुम जीवित हुई, तो कैसे क्या आदर्श बघारती हो यह देख लूगी।

इस प्रकार मै बहुत दुखी हू। पिता जी का एक पत्र आया था, जिसमे लिखा है कि मेरे कमरे की चाबी स्वय पिताजी के पास है। जब चाहू मैं आ सकता हू। मैंने पत्र का उत्तर नही दिया क्योकि क्या लिखू समझ मे नही आया। झगडा करना अच्छा नही मालूम होता। उसका कोई अर्थ भी नही होता। अब तो अकेले ही जिन्दगी काटनी है। मेरे लिए अब कानपुर के अलावा किसी जगह पर नौकरी पाना बहुत जरूरी हो गया है। जहा नौकरी मिले वही मकान भी लू और फिर तुम लोगो को ले आऊ। इसीके लिए दिन-रात प्रयत्न कर रहा हू। इन लोगो से छिपाकर (शिप्रा को मालूम है) नौकरी की दरख्वास्ते दे रहा हू। इतने नए कालेज खुल रहे है, कही-न-कही जगह मिल ही जाएगी और आशा है कि नौकरी मिलेगी तो मकान भी मिल जाएगा। शिप्रा ने बताया कि हमारे ससुर साहब की यह राय है कि यदि मैं कानपुर मे रहू तो उन्ही-के घर पर रहू। इसलिए मैंने अलग मकान लेने की जितनी भी चेष्टाए की, उन्हे किसी न किसी रूप मे सफल नही होने दिया गया।

मा सुरेश के इस प्रकार के पत्रो को पढती और समझती कि किस प्रकार डाक्टर माथुर की शादी ने बेटे के जीवन पर भी दुष्प्रभाव डाले हैं और वह और भी कठिन पड जाती। यहा अपनी स्थिति बहुत अजीब है, पत्नी हू भी और नही भी, जिस घर की मालकिन थी अब मैं उसी घर मे अपनी कन्या सहित एक अवाछित अतिथि हो गई।

कोई भी मेरा दुख-दर्द समझता नही है। सब व्यर्थ का उपदेश देते है — पूजा-पाठ करो, पढो-लिखो, मानो पूजा-पाठ करना और पढना-लिखना करने मे कोई उद्देश्य है। जिसे जीवन मे कोई आशा नही रही वह किस प्रकार पूजा-पाठ कर सकती है, वह पढे तो क्यो पढे ?

सुरेश की तो हालत बडी दयनीय थी ही। अभी बेचारे ने शादी की ही थी और सिर मुडाते ही ओले पडे। उसका तरुण जीवन अभी से कैसी समस्याओ मे कंटकित हो गया है। उसके पत्रो को पढकर यही जी चाहता है कि दमयन्ती की तरह दौडकर उसीके पास चली जाए, सारी समस्या भाड मे जाए। सत्ताईस साल तो सुख भोग ही लिया।

पर उधर बेटी इला की बात समझ मे नही आती। वह दिल्ली छोडना नही चाहती। नाराज तो सबसे ज्यादा उसीको होना चाहिए था, क्योंकि वह डाक्टर माथुर की लाडली बेटी थी। एकाएक एक साथ लाडली बेटी के गौरवमय पद से उतार कर उसे भी लगभग अवांछनीय स्थिति के स्तर पर ला दिया गया था। पर वह दिल्ली छोडना नही चाहती थी। कभी कहती थी, यहा पढाई अच्छी है, कभी कहती थी, यहा सांस्कृतिक जीवन ऊंचा है, कानपुर तो कुछ भी नही है, वहा रुपये भले ही हो, पर संस्कृति नही है।

मोती ने इन सारी बातो पर विचार किया, तो उन्हे बडा आश्चर्य हुआ कि समस्या केवल उन्हीकी नही है बल्कि सुरेश की भी है, इला की है और उस बेचारी नई बहू शिप्रा की भी है। माथुर साहब ने शायद जानबूझ कर अपनी पनाह मे सम्बन्ध नही बढाया था (वह भी हो गया जितने दिन)। शायद सुरेश का ब्याह करते समय ही उन्होंने अपनी शादी तय कर ली थी। मोती ने इन सारी बातो को एक दिन दोपहर के समय इला के सामने रख दिया और कहा — अब बताओ मैं क्या करूं ?

इला ने इसका कोई उत्तर नही दिया। फिर भी जब मोती न मानी, तो इला ने कहा — वह कहने लगी कि ऐसी हालत मे बुद्धिमान महिला पहली बात यह करती कि तलाक दे देती। सच तो यह है कि तलाक के बिना दूसरी शादी होती ही नही। तलाक के साथ-साथ वह सम्पत्ति का हिस्सा भी मांगती।

इसपर मौसी ने कहा—जायदाद तो वह फौरन ही देने को तैयार है। कहते हैं, अब तक जो कुछ कमाया है, वह सब ले लो।

रमा यह पहले भी सुन चुकी थी, बोली—फिर तुम लेकर छुट्टी क्यो नही करती, अब उनसे क्या लेना-देना है ?

मौसी ने इसका कोई उत्तर नही दिया क्योकि उन्हे कोई अस्पष्ट आशा तो नही, पर कुछ था जो रोकता था। जब डाक्टर माथुर एक बार बदले, तो वह दुबारा भी बदल सकते हैं। फिर कई बार अनहोनी बात भी हो जाती है, बोली—मैं इसलिए सम्पत्ति नही ले लेती कि फिर तो सारा सम्बन्ध जड-मूल से खत्म हो जाएगा। इसीलिए मैं कुछ सोच नही पा रही हू।

रमा मौसी की इस सकल्पहीनता के विरुद्ध थी, पर अपनी तरफ से कुछ कहना नही चाहती थी। इसलिए पति का हवाला देती हुई अपनी बात बोली—वह कहते हैं कि अब इस सम्बन्ध मे क्या धरा है ? यह तो सड चुका है, बदबू आ चुकी, कीडे पड चुके, मिट्टी बन चुका, फिर उससे क्या आशा है ? बाद को डाक्टर माथुर शायद और भी बदल जाए। अभी उनमे कुछ गैरत बाकी है। आपको जो भी वे दे, फौरन ले लेना चाहिए।

इसपर मौसी दुखी होकर बोली—मेरे मन मे भी यह बात कई बार आई है, पर मैं कुछ निश्चय नही कर पाती।

रमा ने कहा—हा, अभी तो मौसा बहुत थोडे बदले, पर ज्यो-ज्यो समय बदलेगा, त्यो-त्यो वह और बदलेगे। बाद को नई स्त्री से जब कोई बच्चा हो जाएगा, तो वह बिलकुल ही बदल जाएगे। उस समय तक वह औरत भी उन पर बहुत छा जाएगी।

मौसी बोली—यह सब मैं जानती हू, पर मन पर यह अवसाद-सा आ गया है कि जब सब कुछ गवाया, तो फिर रुपए-पैसे भी गए तो क्या आता-जाता है ? पेट है सो भर ही जाएगा। सुरेश की नौकरी लग ही चुकी है। वह दो रोटी खिला ही देगा और अपने को क्या करना है ?

रमा ने फिर भी समझाया पर मौसी ने कहा—मैं तो इनकार कर चुकी हू। लडका-लडकी उन्ही की है। वह खुद ही माग लेंगे। बेटी की

शादी तो करेंगे ही।

रमा ने फिर एक बार पति के नाम से अपनी बात कहते हुए कहा—कई लोग बहुत बदल जाते हैं। ज्यों-ज्यों दिन बीतते जाएंगे, उनका कहना है त्यों-त्यों वह गैर होते जाएंगे। वह तो कहते हैं कि कई बार पहली बीवी के बेटे-बेटी तो अन्न को तरस जाते हैं, इसलिए इस समय वह जो कुछ भी दे रहे हैं, चाहे वह लड़के के नाम से हो या लड़की के, चाहे आपके नाम से हो, सब ले लीजिए।

—हम तो लेने को तैयार हैं, पर वह कहते हैं उस दिन से हमको वह घर छोड़ देना पड़ेगा। पहले वह ऐसा नहीं कहते थे, पर इधर ऐसा कहना शुरू कर दिया है, शायद उसी चुड़ैल के सिखाने से।

रमा खुश-सी होती हुई बोली—यही तो हम लोगों का भी कहना है। आप तो खुद ही देख रही हैं कि पहले उन्होंने जायदाद देने के साथ कोई शर्त नहीं लगाई थी, पर अब वह शर्त लगा रहे हैं। इसीसे पता चलता है कि आगे क्या होगा। उनका कहना है कि बेटा या बेटी होते ही फौरन सब बदल जाएगा और तब वह सुरेश और उषा की तरफ से उसी तरह बदल जाएंगे, जैसे वह आपकी तरफ से बदल गए हैं।

मौसी सारी बातें अच्छी तरह समझती थी। पर मन में न जाने आशा का कैसा जोर था कि वह कोई फैसले की मंजिल पर पहुंच नहीं पा रही थी। बोली—कोई मैं तो कुछ सोच नहीं पा रही हूं। जब शादी हो गई, उससे पहले मां-बाप मेरे लिए सोचते थे और शादी के बाद से कुछ सोचने का मौका ही नहीं मिला। घर के भीतर मैं जो चाहती सो करती, घर के बाहर से मुझे कोई ताल्लुक नहीं था।

मौसी की ये बातें सुनकर रमा के मन में उनके प्रति जो सहानुभूति थी, वह उसके अन्तस्तल में बहुत कुछ दबा और एक हद तक शायद घृणा में बदल गई। मौसी जदीद औरत है। एम० ए० तक पढ़ी है, पता नहीं यह बात सच भी है या नहीं, पर जो कुछ भी हो, वह पढ़ी-लिखी होकर यह मोटी बात नहीं समझती कि अपना स्वार्थ किस बात में है। पशु भी अपना स्वार्थ अच्छी तरह समझता है, और जब कोई उसके स्वार्थ पर चोट करता है, तो वह गुर्राता है और काटने को दौड़ता है यदि

सीग वाला है तो सीग से हमला करता है, पर यह मौसी मान करके बैठी हुई है। यह नही समझ पाती कि जिस व्यक्ति से रूठकर वह अलग बैठ जाया करती थी, वह तो मर चुका है, कम-से-कम उनके लिए। अभी तक वह अपने बच्चो के लिए पूरी तरह इसलिए नही मर पाया है कि नई बीवी से कोई बच्चा नही हुआ, पर बच्चा होते ही सारी ममता उसीपर जा पडेगी। तब पहली बीवी के बच्चो के प्रति भी कोई मोह नही रहेगा। तब पहली बीवी के बच्चे ऐसे लगेगे मानो वे किसी प्रकार अनधिकारी मान न मान मैं तेरा मेहमान हो, बाढ से बहकर आए हो। बोली—साल-छ महीने मे उस औरत को कुछ बच्चा होगा, तो आप लोगो के लिए मुसीबत बन जाएगी। इसके पहले ही सारी कार्रवाई हो जाए तो अच्छा है।

मौसी बोली—मैं जहा तक दूर से समझ पाई हू, उसके पेट मे बच्चा आ गया है।

रमा चौक पडी, जैसे उसे एकाएक कोई धक्का लगा हो, यद्यपि अभी वह स्वय ही इस बात का जिक्र कर रही थी। बोली—अच्छा! अभी शादी हुए कितने दिन हुए ?

मौसी बोली—छ महीने तीन दिन हो गए।

रमा को भी कुछ ऐसा अनुमान था, पर छ महीने तीन दिन सुनकर वह और भी चौकी। इसके माने यह हुए कि मौसी एक-एक दिन गिना करती हैं। पति अलग हो गए, सो उसमे मौसी का कोई दोष नही क्योकि अधेड औरत के मुकाबले मे युवती का आकर्षण अधिक होगा, इसमे आश्चर्य की बात क्या है। पर इस तरह जब कि सब समाप्त हो चुका है, तब दिन गिनते रहना क्या अर्थ रखता है ? मौसी बिलकुल वास्तविकता समझ नही पा रही हैं। वह तो ऐसे व्यवहार कर रही है मानो मौसा कुछ दिन के लिए ही भटक गए हैं। सुबह का भूला शाम तक घर आ जाए, पर वह शाम तो कभी आने वाली नही, यह मौसी के जेहन मे कैसे उतारा जाए ?

रमा ने घडी देखी और वह बेचैनी से घर ठीक-ठाक करने लगी। मौसी समझ गई कि यह इशारा है कि अब अरुण आने वाला है। मुझे

उसके काम में लगना है, बच्चे की ओर कोई फिक्र नहीं है क्योंकि आया है। वह जगेगा, दूध पिलाकर कपड़े पहनाकर तैयार करेगी ताकि वह अपने पिता से दो-दो बातें करे और उसके बाद टहलाने के लिए ले जाए। अरुण से मौसी की भेंट हो, यह रमा नहीं चाहती थी। अरुण को मौसी से विशेष कोई सहानुभूति नहीं थी, वह तो जब-तब केवल मौसी को ही नहीं, आधुनिक स्त्रियों की प्रतिनिधि के रूप में रमा को ही चुनौती देता रहता था—तुम लोग मौसी के मामले को निपटाओ। मौसी से कहो कि तलाक ले, कम-से-कम अलग हो जाए। एक दिन तो उसने यहाँ तक कह डाला था कि यदि स्त्री और पुरुष समान हैं और उनके अधिकार समान हैं, तो मौसी को अलग होने के बाद फिर से शादी कर लेनी चाहिए।

इस पर रमा ने कहा था—उनसे कौन शादी करेगा?

मौसी उठकर चली गई और उस दिन के लिए बातचीत वहीं समाप्त हो गई। पर अगले ही दिन सवेरे अरुण ने रमा से कहा—तुम्हारी मौसी की क्या खबर है? इधर तुमने कुछ नहीं कहा।

रमा बोली—कहा इसलिए नहीं कि कहने को कुछ नहीं है। सुरेश को अभी तक घर नहीं मिला, इसलिए कहीं जाने का प्रश्न ही नहीं उठता।

अरुण साबुन लगाकर दुबारा दाढ़ी छीलने का उपक्रम करते बोला—इधर किसी दिन मौसी की झलक देखी थी। रमा के साथ कहीं जा रही थी। मुझे ऐसा लगा कि वह बहुत दुखी हुई है।

रमा ने भी इधर यह बात लक्ष्य की थी। मन में उस दुःख की [illegible] बनी हुई थी, पर उसे [illegible] देखने-भालने का मौका नहीं लगा था। [illegible] पड़ता है कि [illegible] दिन [illegible] है। रमा मौसी के लिए [illegible] के लिए [illegible] गई, तो [illegible] कि मौसी उनके [illegible] और [illegible] में आती [illegible] थी, [illegible] नहीं हुई [illegible] और [illegible] दृष्टि से [illegible]।

रमा [illegible]—[illegible] नहीं [illegible]—[illegible]

[illegible] बोली—मेरी मौसी तो कोई [illegible] नहीं है, यदि [illegible],

तो इसमे बुराई की क्या बात है ?

अरुण रमा को चिढाना नही चाहता था। वह तो एक जानकारी-भर चाहता था, पर जब रमा ने चिढकर जवाब दिया, तो उसने भी तरग लेते हुए कहा—पर यह प्रसाधन जरा गलत है। यही मैं कहने वाला था। यदि उनका उद्देश्य मौसा जी को फिर से रिझाना है, तो उन्हे प्रसाधन के सम्बन्ध मे तुमसे सबक लेना चाहिए। इसमे तो कोई बुराई है नही। मौसा जी नीरा का रूप देखकर उसपर रीझे, इसलिए कोई ताज्जुब नही कि वह फिर से तुम्हारी मौसी जी पर रीझ जाए।

रमा को आईने के सामने वाले दृश्य के अतिरिक्त मौसी के प्रसाधन के सम्बन्ध मे और भी कुछ बाते याद हो आई, पर अरुण ने जिस प्रकार विद्रूप के साथ सारा प्रसग सामने रखा, मानो मौसी यदि मौसा पर फिर से विजय प्राप्त करना चाहती हैं, तो यह गुनाह है, उसे बहुत नापसन्द आया। विशेषकर मौसी केवल नाम के लिए मौसी नही है, बल्कि अपनी मा की सगी छोटी बहन हैं। वह और नाराज होकर बोली—मौसा को तो अपने बालो मे खिजाब लगाने का और बाल घुघराले बनाने का अधिकार है, पर मौसी को कुछ भी अधिकार नही है, क्यो ? अगर तुम यह कहना चाह रहे हो, तो बहुत ही अजीब बात है। तुम्हारे निकट शायद अभागी होना सबसे बडा पाप है।

अरुण दाढी बना चुका था। अब वह फिटकरी लेकर एक जगह घिस रहा था, जहा कुछ कट जाने का शक था। बोला—तुम मौसी के मामले मे मुझे बहुत गलत समझती हो। सच तो यह है कि मुझे उनसे बहुत सहानुभूति है। तुम्हे याद होगा कि मैंने मौसी को डाक्टर माथुर की दूसरी शादी के बाद यहा रहने का ऑफर दिया था। वह नही रही, यह दूसरी बात है, पर मेरा प्रस्ताव अब भी मौजूद है। मैं तो एक रचनात्मक सुझाव मात्र देना चाहता था, वह यह कि यदि डाक्टर माथुर पर मौसी फिर से विजय प्राप्त करना चाहती हैं, तो वह तुम लोगो से, जो नई पुश्त की है, कुछ सीखे। अब मौका इसलिए अच्छा है कि नीरा गर्भवती हो गई है। महीने-दो महीने मे अस्पताल जाएगी। तब मौसी का काम बनेगा बशर्ते कि तुम लोग तब तक उन्हे अच्छी तरह तालीम दे दो ताकि

५

एक दिन सुहासिनी आकर रमा के पास रो पडी, वोली—वह तो फिर से शराव पीने लगा है और रात को उसी तरह देर से आता है।

रमा को वडा आश्चर्य हुआ क्योकि इस बीच सुहासिनी ने कोई शिकायत नही की थी। वह वोली—पर वह तो जमानत पर छूटा है, यदि फिर कोई वखेडा करेगा तो उसपर पहले वाला मामला भी चलाया जाएगा।

अरुण ने रमा को पूरी वात नही वताई थी, यही कहा था कि वह जमानत पर छूटा है, किसी भी वक्त फिर गिरफ्तार हो सकता है। अरुण के मित्र अध्यापक विद्यानिवास ने अरुण से लगभग कसम खिलाकर यह कह दिया था कि तुम असली वात अपनी वीवी से भी न बताना। इस प्रकार न वताने मे दो फायदे थे, एक तो यह कि गुप्त वात गुप्त वनी रहती और दूसरे अपनी वदनामी न होती कि अध्यापक लोग पुलिस को घूस देते फिरते है।

विद्यानिवास ने अरुण से अत्यन्त स्पष्ट करके कहा था—तुम्हारी पत्नी के पेट मे वात नही पचेगी, तुम्हारी पत्नी आया से कहेगी और आया अपने पति से कहेगी, इस प्रकार हम जगन्नाथ पर जो नैतिक असर पैदा करना चाहते है, वह नही पैदा होगा और वह और भी खुल खेलेगा।

रमा वोली—क्या उसने शराव नही छोडी ?

तव सुहासिनी वोली—वह तो जिस रात को छूटा था, उसी रात को शराव पीने चला गया था।

—तुमने मना नही किया ? तुमने यह नही समझाया कि फिर पकडे जाओगे तो जमानत ज़ब्त हो जाएगी, सज़ा होगी सो अलग ?

—मैंने सव कुछ समझाया, पर वह रोने लगा, वोला—रातभर हवालात मे मच्छर काटते रहे और पेशाव की वू आती रही, सिर फटा जा रहा है अगर शराव न पीऊ तो मर जाऊगा। तव मैंने मजवूरी से उसे कहा कि जाकर एक कुल्हड पीकर ही फौरन आ जाओ, पर वह रातभर लौटा ही नही। जव सवेरे लौटा तो उसका वुरा हाल था। वह

उसके मुह से निकल गई हो ।

रमा ने वात पकड ली और वोली—उसने क्या कहा ?

—वीवी जी, वात यह है कि मैं छोटी जात की हू और वह ब्राह्मण है ।

रमा को वहुत ही आश्चर्य हुआ, वोली—क्या तुम लोगो की शादी नही हुई ? तुम तो कहती थी कि शादी हुई थी । तो क्या वे सारी वाते मनगढन्त थी ?

सुहानिनी वोली—नही वीवी जी, पूरी वात यो है कि हम लोग वनारस मे एक ही मुहल्ले मे रहते थे । इसने मुझ पर डोरे डालना शुरू किया क्योकि मै वहुत खुवसूरत थी । एक दिन हम दोनो भाग निकले । इलाहावाद पहुचकर इसने आर्यसमाज मन्दिर मे मुझसे शादी कर ली । हम दोनो ने अपना परिचय आर्यसमाजी करके दिया । दोनो ने कहा कि हम ब्राह्मण है । इसलिए शादी वाली वात गलत नही है गोकि मेरे ब्राह्मणी होने की वात गलत थी ।

रमा ने कहा—वह ब्राह्मण और तू छोटी जात, इसलिए क्या व्याही हुई पत्नी को छोडकर उसे वदमाशी करने का अधिकार हो गया ? तुझे तो उसने वहुत मारा । मेरी तो राय यह है कि अव तू उससे नाता तोड दे । अव वह रात को घर मे देर से आए, तो उसे घर मे घुसने न देना ।

—वीवी जी, मैं ऐसा भी कर चुकी हू । पर इसका कोई भी असर नही होता । वह तो शराव पिए होता है । उसे मुहल्ले-टोले की कोई परवाह नही होती । वह वुरी तरह चिल्लाता है, गालिया देता है । तव मुहल्ले वालो के लिहाज से दरवाजा खोल देना पडता है । कैसी मुसीवत मे मेरी जान फसी है, यह मैं क्या वताऊ ? आपके सिवा मेरा कोई सहारा नही है । अव मैं क्या करू, समझ मे नही आता ।

रमा ने पूछा—तुझे मुहल्ले वालो का लिहाज होना चाहिए या उसे ? वदमाश तो वह है ।

—मुहल्ले वाले तो मुझे ही दवाते है । उससे कोई आख मिलाने की हिम्मत नही करता ।

रमा सारी परिस्थिति समझ गई, वोली—ऐसी हालत मे तुम उससे विल्कुल अलग हो जाओ, उससे तुम्हे क्या सुख है जो तुम उसे सिर पर

चटाए रहती हो ? वह अपनी कमाई का एक पैसा तुम्हें नहीं देता। वह उलटे तुमसे पैसे मांगता है। उससे तुम्हें किसी तरह की कोई आशा नहीं है। फिर तुम क्यों उससे चिपकी हुई हो ? जाओ, काम करो।

उस समय तो सुहासिनी कुछ नहीं बोली, पर जब दोपहर के समय बर्तन मांजने आई, तो वह बोली—आप लोग पढ़ी-लिखी हैं, आपकी बात और है। पर मुझको उसका सहारा न रहे, तो अगले ही दिन मुहल्ले वालों मेरा रास्ता चलना [illegible] जाए। जाने कितने लोग डोरे डालते रहते हैं, जब कोई हद से ज्यादा बढ़ जाता है तो कह देती हूं कि अपने पंडितजी से कह दूंगी, तो वह फौरन भाग खड़ा होता है। शराबी और हवालाती चोर होने की वजह से सब उससे खौफ खाते हैं, कोई सामने आकर ज़बान नहीं हिलाता और सिर्फ मेरी बात नहीं है, मेरे दो बच्चे हैं। अगर उसका सहारा जाता रहे तो मुहल्ले के बच्चे इतने बदमाश हैं कि वे बच्चों को मार ही डालें।

रमा के सामने जैसे पर्दा-ब-पर्दा एक नया संसार खुलता जा रहा था जो बहुत ही क्रूर और निष्ठुर है, जो यह परवाह नहीं करता कि उसकी तेज़ बहाव की चोट में आकर क्या बह गया और क्या रह गया। एक ही तत्त्व प्रधान है, वह है शक्ति, बल, ताकत। यह शक्ति कैसी है ? अच्छी या बुरी ? इस शक्ति के हाथ गन्दे हैं या खून से सने ? यह कोई नहीं देखता। कानून, शासन, पुलिस, जेल सब हैं, पर जो शक्तिशाली है उसीके पौ बारह रहते हैं। शक्ति के अलावा जितनी भी बात है, सब व्यर्थ है, गौण है। उसका कोई अर्थ नहीं होता। यह तो समझ में आया कि सुहासिनी का पति दुष्ट और पतित है, पर सब कुछ होते हुए भी सुहासिनी को रहने के लिए उसी का आश्रय लेना पड़ता है—यह बात समझ में नहीं आ रही थी। बोली—अब तुम क्या चाहती हो ? तुम उससे अलग भी नहीं होना चाहती और साथ ही उसे सुधार भी नहीं सकती।

रमा कहने को यह कह गई पर उसे तुरन्त याद आया कि वह स्वयं [illegible] अपनी ज़िन्दगी का क्या कर सकी थी। रमा की भी स्थिति यही थी। वह भी डाक्टर माथुर को न तो छोड़ पा रही थी और न सुधार ही सकती

थी। अरुण का तो यही कहना था कि मौसी को मौसा का घर छोडकर चल देना चाहिए। इस वेचारी का तो कोई आश्रय नही है, पर मौसी के तो वहुत-से आश्रय है। अरुण ने भी उन्हे दो-चार महीने के लिए आश्रय देने का प्रस्ताव किया था। पर वह अभी तक कोई निश्चय नही कर पाई। कही यह वहाना वताती है कि सुरेश को घर नही मिला, तो कही यह कहती है कि इला का क्या होगा। यह सव सोचकर पहले सुहासिनी पर जितना क्रोध आ रहा था, अव उतना क्रोध नही आ रहा था, वल्कि कुछ दया ही आई।

सुहासिनी की पीठ पर हाथ फेरती हुई रमा वोली—अब तुम वताओ मैं क्या कर सकती हू ? तुमने इस आदमी का विश्वास किया और इससे शादी की, यही गलती की। यह आदमी विल्कुल इस काविल नही है कि इसपर विश्वास किया जाए।

इसपर सुहासिनी ने अजीव ढग से हसते हुए कहा—वीवी जी, आप तो जान चुकी कि मैं नीच जात की हू। अगर मैं घर मे रहती तो मेरी शादी इनसे भी किसी खराव आदमी से हो सकती थी। अव तो मैं आया और मेहरी का काम करती हू, तव शायद भगिन का काम करना पडता। मेरी मा को मेरा वाप लगभग रोज़ रात को पीटा करता था। एक दफे तो ऐसा हुआ कि पीटने के वाद वह विल्कुल मर गई। उसकी सास विल्कुल वन्द हो गई। मेरा वाप यह समझकर कि मा मर गई है, भाग गया। हम लोग चार-पाच वच्चे रोने-चिल्लाने लगे। मुहल्ले के लोग इकट्ठे हो गए। लोगो ने मा की आखो पर पानी का छीटा डाला। मुहल्ले के कई भगियो ने कहा कि यह तो मर गई, अव पुलिस को खवर करनी चाहिए। ऐसे दो-तीन आदमियो ने दो-तीन वार कहा। इसी समय मा को एकाएक हिचकी आई और वह ज़िन्दा हो गई। कई हिचकिया और आई और वह उठकर वैठ गई। मा ने चारो तरफ देखा और जव मेरे वाप को नही देखा तो वोली, वह कहा गए ?

लोगो ने कहा—वह तो साला भाग गया। यह समझकर भागा कि तू मर गई है।

मा फिर लेट गई। सिर मे एक चोट लगी थी। एक भगिन ने उस-

पर कुछ बोल दिया। थोड़ी देर में मुहल्ले के सब लोग चले गए। ज्यों ही सब लोग चले गए, मा ने मुझको बुलाया क्योंकि मैं ही बड़ी बेटी थी और बोली—जब सवेरा होगा तो उठकर बाप को खोज लाना। वह यह समझकर भाग गया है कि मैं मर गई हूँ। तू जाकर बोल देना कि मैं मरी नहीं हूँ, घर वापस आ जाओ। मैं अपने बाप के बहुत खिलाफ हो गई थी, और इस तरह बाप को बुलाना मुझे पसन्द नहीं था। सवेरे उठकर मैं यह बात भूल गई, पर मा ने मुझे याद दिलाई। तब मुझे जाना पड़ा। मुझे पता नहीं था कि बाप कहा गया है और कैसे उसे खोजूं। मैं इधर-उधर घूम रही थी कि मुझे यह लड़का मिला जो इस समय मेरा पति है। वह मुझसे दस-बारह साल बड़ा था। मुझे ताज्जुब हुआ कि वह मेरा नाम जानता था, बोला—सुहागी, तू क्या खोज रही है?

मैं उससे बात नहीं करना चाहती थी क्योंकि मा ने सिखाया था कि बड़ी जात के किसी आदमी से बात करना खतरे से खाली नहीं है। पर मैं उस वक्त ऐसी खोई-खोई-सी घूम रही थी कि मैंने सोचा इसीसे मदद ली जाए। वह भी ऐसा भला लगा कि मैंने कहा—मेरा बाप रात से गायब है, मैं उसे खोज रही हूँ, मा बहुत बीमार है।

वह लड़का, लड़का तो वह नहीं था, छब्बीस साल का अच्छा खासा जवान था, हसकर बोला—तू किसे खोज रही है, बलदेवा को? चल मैं तुझे उससे मिलाता हूँ।

मुझे बहुत अचरज हुआ कि यह भला मुझे बाप से क्या मिलाएगा, पर अगर मैं यों ही खाली हाथ घर लौट जाती, तो मा बहुत नाराज हो जाती, यह मुझे मालूम ही था। फिर यह मेरे बाप का नाम, मेरा नाम सब कुछ जानता था इसलिए मैं उसके पीछे चल पड़ी। उसने मुझे पहले दो [illegible] के पीछे [illegible] दिन मैं [illegible] करती रही पर वह नहीं माना और मुझे [illegible] पड़ा। मैं उसके पीछे-पीछे चलती रही। पर इतना [illegible] था कि मैं उससे दूर ही बनी रही। कोई देखता तो यह पता नहीं लगाता कि मैं उसके पीछे चल रही हूँ। पर मैं भी चालाक थी।

थोड़ी देर में वह एक मकान के पिछवाड़े आया [illegible] दिखाकर बोला—यही तेरा बाप है, [illegible]

पहले उसे यही देख गया था।

मैंने सचमुच देखा कि चार-पाच आदमियो की उस मण्डली मे मेरा बाप मौजूद था। मैं दौडकर उससे मिली और सारी बाते बताई। मा जिन्दा है, जानकर बाप तुरन्त मेरे साथ हो लिया। जाते-जाते मैंने दूर से देखा कि ब्राह्मण का वह लडका एक पेड के नीचे खडा है और मुस्करा रहा है।

रमा सारी बाते एक कहानी की तरह सुन रही थी और आश्चर्य कर रही थी कि जीवन कितना विचित्र है, कहा-कहा से गाठे पैदा होती हैं और वे कहा जाकर खुलती है। फिर नई गाठें पडती हैं जो आगे चलकर खुलती है या एक-दूसरे से उलझती जाती हैं जैसे समुद्र की तरगें। यदि उस रात को बलदेवा ने अपनी पत्नी को उस बुरी तरह न मारा होता, तो सुहासिनी से उस ब्राह्मण बालक की भेट न होती, और उसका जीवन इस प्रकार से न चलता जैसे आज चल रहा है। पर इस ओर भी कोई छोर नही था क्योकि यदि सुहासिनी उस ब्राह्मण बालक से बचती, तो वह शायद इससे भी बुरे आदमी के पल्ले पडती। तो क्या सहपाठिनी मुक्ता की वह बात ठीक है कि शादी एक जजाल है, सभ्यता के एक सोपान मे उसकी शुरुआत हुई थी। अब सभ्यता उस पत्थर को गले मे बाधकर महासागर के अन्दर डूब रही है, यह कोई देखने वाला नही है। रमा सुहासिनी से बोली— जो करना चाहो, बोलो। मैं सब कुछ करने को तैयार हू। मैं मदद ही दे सकती हू, करना तो तुम्हे ही है।

सुहासिनी बोली—बीबी जी, मैंने यह समझ लिया है कि मेरे भाग्य मे सुख बदा नही है। अब मैं सिर्फ इतना चाहती हू कि वह जेलखाना न जाए।

रमा यह सुनकर एकदम सकते मे हो गई। उसे अब सारी परिस्थिति मालूम हो चुकी थी, इसलिए वह यह समझ चुकी थी कि सुहासिनी के लिए जगन्नाथ के विरुद्ध लडाई देना सम्भव नही है। कुछ कारण तो उसके विवाह की परिस्थिति मे और बाकी कारण सामाजिक है कि इस आदमी के बिना सुहासिनी की सुरक्षा खतरे मे हो जाएगी। मौसी की विवशता के कारण उसके मन पर जो बोझ पडा था, वह और बढ गया। लगा कि

सांस घुट रही है, कोई रास्ता सूझ नहीं पड़ रहा था। एकाएक मन पर झटका-सा देकर बोली—तुम उसे जेल चले जाने दो। वह चूल्हे में जाए। यदि तुमको कुछ खतरा है तो तुम मेरे पास आकर रहो, मेरा कमरा तो तुमसे मिला हुआ है। यह भी तुम्हें पसन्द करते हैं। फिर काहे का डर?

पर सुहागिनी राजी नहीं हुई। वह बोली—मेरे दो बच्चे हैं, वे गन्दे भी हैं और शैतान भी। वे एक दिन में यहां सारा तहस नहस कर देंगे।

रमा मन में समझ तो गई कि सुहागिनी जो कुछ कह रही है, वह सही है। अभी कुछ दिन हुए उसकी सगी बहन यहां आई थी। उसका एक ही लड़का था, पर उसने दस ही दिन में इतनी चीजें तोड़ी, पेड़-पौधे उजाड़ डाले कि वह परेशान हो गई थी। जब बहन गई, तो उसने उससे यह नहीं कहा कि फिर आना यानी कहा तो केवल सौजन्य के कारण एक ही बार कहा, उसकी पुनरावृत्ति नहीं की। सुहागिनी से बोली—जैसा तुम ठीक समझो, करो। मुझे तुमसे पूरी सहानुभूति है, कथित छोटी जात की हो इसलिए और भी सहानुभूति है। रहा यह कि क्या तुम्हें करना है, यह तुम्हें ही सोचना है।

सुहागिनी अपना काम करके घर चली गई, तो देखा कि उसका पति पड़ा-पड़ा सो रहा है। आज दफ्तर नहीं गया। उठेगा तो पहला प्रश्न यह पूछेगा कि तुमने हमारे दफ्तर में यह खबर की है कि नहीं कि मैं बीमार हूं। मैं कहूंगी कि मैंने नहीं कहा क्योंकि जब मैं काम के लिए निकल गई तो तुमने कुछ कहा नहीं था, फिर मैं कैसे जानती कि दफ्तर नहीं जाओगे। मैं पहले अपना काम कर यहां गई, फिर यहां से निवास बाबू के घर काम करने गई। वहां से खा-पीकर फिर अपने घर के लिए चली। मुझे क्या पता कि तुम अब तक सो ही रहे हो। सुहागिनी इस प्रकार सोच ही रही थी कि उसका पति शायद उसकी आहट पाकर जम्हाई लेकर उठा और बोला—तू अब फिर कुछ खाना नहीं लाई, वैसे ही चली गई!

सुहागिनी बोली—मैं तुम्हारे लिए खाना रख गई थी। मैं तो यह सोचती थी कि तुम दिन में उठोगे।

फिर बड़े दम्भ से वह उठकर बैठ गया, नाराज होकर बोला—मैं

मिल मे जाऊ या न जाऊ, इससे तेरा क्या मतलब ! तू खाना नही रख गई और ऊपर से मिल का डर दिखाती है। मैं किसीके बाप का नौकर नही हू। जब तबियत चाहेगी, जब जाऊगा, नही तो नही। अभी तो मैंने बहुत थोडी छुट्टिया ली है। तू जल्दी से खाना पका दे, मैं खाकर मिल मे कहने जाता हू कि मैं बीमार हू या तू ही विद्यानिवास जी के यहा से टेलीफोन करा दे कि मैं बीमार हू।

सुहासिनी ने चूल्हा जलाते हुए डरते-डरते पूछा—बच्चे कहा गए ? वे दिखाई नही पड रहे हैं ?

वह बोला—मैं जगा तो मैंने देखा कि छोटी बच्ची रो रही है और बडा बच्चा उसे समझा रहा है। मैंने पूछा कि तुम लोग हल्ला-गुल्ला क्यो कर रहे हो तो बडा वाला बोला मा, इसके लिए दूध रख गई थी, उसे बिल्ली पी गई, इसलिए यह भूखा है।

मैंने पूछा—तू भी भूखा होगा ?

उसने बताया कि उसके लिए भी खाना है और मेरे लिए रोज की तरह नाश्ता है। तब मैंने पूछा कहा है तो उसने लाकर मुझे मेरा नाश्ता दे दिया। मैंने अपना नाश्ता खा लिया पर भूख नही मिटी, इसलिए लडके का खाना भी मैं खा गया। बच्ची तो रो ही रही थी कि अब लडका भी रोने लगा। मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने दोनो को बाहर जाने के लिए कहा और वे दोनो बाहर चले गए।

सुनकर सुहासिनी बहुत दुखी हुई कि वह घर मे रहा भी तो उसने एक तूफान खडा कर दिया। भूखे बच्चो को घर से निकाल दिया। खैर, बडा बच्चा तो चार साल का है, वह कुछ हद तक सह सकता है पर छोटी बच्ची अभी मुश्किल से साल भर की है। रमा का मुन्ना और वह लगभग एक ही उम्र के हैं। वह भला भूख कैसे सह सकती है ? वह पागल-सी होकर जलता चूल्हा छोडकर उठ खडी हुई। बोली—तुम खिचडी चढा दो मैं बच्चो को खोज कर आ रही हू।

बच्चो को खोजने मे एक घटे से ऊपर लग गया। जब वह लौटी तो देखा कि चूल्हा बुझा पडा है। देखने से यह भी पता चला कि खिचडी बनी थी क्योकि थाली मे खिचडी के कुछ दाने रखे हुए थे, पर देगची मे

कि बच्चे खाए। बीबी जी ठीक ही कह रही थी कि ऐसे मर्द से क्या लेना-देना जो किसी भी तरह कोई भी काम नही आने का। परले सिरे का स्वार्थी है इसे अपने पेट भरने और अपनी नीद से मतलब है। बाकी बातो से इसे कोई मतलब नही है चाहे कोई मरे चाहे जीए। जो कुछ कमाता है उसका एक-एक पैसा शराब और दूसरी स्त्रियो पर खर्च करता है। यहा केवल मुफ्त मे खाने और सोने के लिए आता है। जब पैसे चुक जाते है, दूसरी औरते नही मिलती तब सुहासी की माग होती है। इन सब बातो को सुहासिनी अच्छी तरह समझती है, पर वह कर कुछ नही सकती। वह चुपचाप खिचडी की तरफ टकटकी बाधे बैठी रही। उसकी भी आखे लेटी हुई बच्ची की तरफ थी कि कही जगन्नाथ क्रोध मे एकाएक उठे और बच्ची को पैरो तले कुचल न दे।

खिचडी चुर रही थी। बच्चा ललचाई आखो से उसकी तरफ देख रहा था क्योकि अब उसकी खुशबू कोठरी मे फैल रही थी। उसके चुरने की आवाज़ मे वह सगीत सुनाई पड रहा था, जो भूखे कानो को ही सुनाई पड सकता है। बाप फिर से सो गया था। लग रहा था कि वह दो-चार घण्टे जगने का नही है। बच्चे ने अपने बाप को इसी तरह अधिकाश समय सोते हुए ही देखा था और यह भी उसने देखा था कि उसका सोता हुआ रूप ही सबसे अच्छा होता है, क्योकि बाकी समय वह या तो तकरार करता था या मा को पकडकर पीटता था। कई दफे वह जब रात को लौटता था तो मा को पकडकर अधेरे मे कोठरी की दूसरी तरफ ले जाता था। मा मना करती थी, कहती थी कि शर्म करो बच्चे देख रहे है, पर वह छोडता नही था और शायद मा का मुह बन्द कर देता था। बच्चा कुछ कर नही सकता था। एक दफे ऐसे समय रोता हुआ उठा था पर मा ने ही डाटकर उसे अपने बिस्तरे पर भेज दिया था और कहा था—चुप होकर सो जा, मैं अभी आती हू।

सारी बाते अजीब लगती थी। पूरी बात समझ मे नही आती थी। इतना ही समझ मे आता था कि बाप बहुत बुरा आदमी है। वह जब न आता तभी उसे अच्छा लगता। पर यह भी उसने देखा था कि बाप के आने मे देर होती, तो मा बहुत चिन्तित रहती। कहती—यहा बसो

है। जरा चुप्पी मारे हुए पडे रहो। अब खिचडी उतरने ही वाली है। चलाऊगी नही तो जल जाएगी।

इसपर जगन्नाथ एकाएक उठा और उसने आव देखा न ताव, चूल्हे पर लात मारी और देगची समेत खिचडी मिट्टी मे गिर गई। खिचडी के छीटे बहुत दूर तक गए। इसी समय मुन्नी रो पडी। सुहासिनी समझी कि मुन्नी पर गरम खिचडी के छीटे पडे है, इसलिए वह खिचडी की परवाह न कर मुन्नी की तरफ दौडी। मुनुआ के बाप ने जब बच्ची को रोते हुए सुना और खिचडी गिरी हुई देखी, तब उसे पता चला कि उसने क्या किया है। पर इससे द्रवित न होकर वह और भी नाराज होने वाला था कि उसने देखा कि भूखा बच्चा किसी बात की परवाह न कर मिट्टी पर बिखरी हुई खिचडी को खाने की चेष्टा मे लगा हुआ है। यह दृश्य उसे इतना अजीब लगा क्योकि भूख के मारे लडका खिचडी खाना चाहता था पर एक कौर से ही उसका मुह जल गया था, देखकर जगन्नाथ जल्दी से कोठरी से निकल गया।

जब वह जा चुका और देखा गया कि मुन्नी शोर से जग गई थी और उसपर खिचडी के छीटे नही पडे थे, तब सुहासिनी बच्ची को गोद मे लेकर आई और उसने एक जूठी थाली खीचकर जहा तक हो सका, गिरी हुई खिचडी बटोरने लगी।

बच्चे ने शायद सहायता करने के लिए कहा कि मा, मैं ऐसे ही खा लूगा। पर सुहासिनी को यह बात इतनी खराब लगी कि वह बरस पडी—लोग तो मेज़ पर बैठकर काटा-चम्मच से खाते है, उनके घुटनो पर नैपकिन रखा रहता है और यह अभागा लडका कहता है कि मैं मिट्टी पर ही खिचडी खा लूगा। चल उठ

पर उठते-उठते लडके ने तीन-चार कौर जल्दी-जल्दी खा लिए। सुहासिनी की आखो मे आसू आ गए थे, पर उसने लडके को घसीटते हुए बिस्तरे पर बैठा दिया और फिर कलछुल से जहा तक हो सका, फर्श की धूल बचाकर खिचडी उठा ली। फिर उसे भूखे लडके के सामने रखा और वह स्वय बैठकर खिचडी ठण्डी करके बच्ची को मीज-मीजकर खिलाने लगी। यदि वह स्वय खिचडी खाती, तो पता लगता कि वह

६

रमा ने अरुण से कहा—देखा उस बदमाश औरत को ? आजकल गरीब से गरीब औरत भी बच्चा जनने के लिए अस्पताल चली जाती पर नीरा अस्पताल नही जा रही है।

अरुण ने दाढी पर साबुन लगाते हुए कहा—मौसी जिस प्रकार से बदतर सौन्दर्य-चर्या कर रही है, उससे वह बिदक गई होगी, नही तो किसे भला अपनी जान प्यारी नही है ? कितना कुछ किया जाए, अस्पताल मे जितनी सावधानी बरती जा सकती है, उतनी घर मे कभी नही हो सकती, पर मौसी ने भी तो हद कर दी, इस उम्र मे लिपस्टिक लगाने लगी है। मै उनके चेहरे की ओर ताक ही नही पाता क्योकि हसी आने का डर बना रहता है।

रमा ने नीरा की आलोचना करने के लिए इस प्रसग को छेडा था। उसे यह डर नही था कि इस प्रसग को ऐसा बदला जा सकता है कि वह मौसी के विरुद्ध जाकर पडे। ऐसा जानती तो वह यह प्रसग छेडती ही नही, बोली—पुरुष जैसा चाहता है, नारी को वैसा ही नाचना पडता है। मौसी के लिए तो यह जीवन-मृत्यु का सग्राम है। यदि वह इस युद्ध मे सभी अस्त्रो को काम मे ला रही हैं, इसमे आश्चर्य क्या है ?

अरुण ने दाढी छीलनी शुरु कर दी थी और शायद इस समय ऐसे स्थान पर दाढी बना रहा था, जहा नए ब्लेड से रक्तपात होने का डर था, इसलिए वह कुछ बोला नही। फिर बोलने को था ही क्या ? सारा मामला इतना कष्टकर और उलझा हुआ था कि उसपर जितनी कम बातचीत की जाए, उतना अच्छा था। डाक्टर माथुर से लेकर नीरा और मौसी सभी ऐसे बर्ताव कर रहे थे, जैसे मनुष्य एक घिनौने पशु के अतिरिक्त कुछ न हो, स्वार्थसिद्धि के अतिरिक्त जिसका कोई आदर्श न हो। इन सारी बातो से जिन्दगी पर आस्था की कोर कटती है न कि उसमे चार चांद लगते है। वह अपने विचारो मे खो गया। रमा ने समझा कि अरुण ने शायद उनका दृष्टिकोण अपना लिया, बोली—डाक्टर माथुर पर पहरा देने की फिक्र मे नीरा को अपनी जान की परवाह नही रही। उस

से आधुनिक वनती हो, पर तुम लोगो का मन विल्कुल परदादियो और परनानियो के स्तर मे है। मैने वार-वार तुम्हे समझाया कि पश्चिम मे केवल अभिनेता ही नही, वडे-वडे साहित्यकार तथा दार्शनिक चार-चार वार शादिया करते है। अवश्य एक साथ नही। वहा इससे न तो कोई नौकरी से उखडता है, और न नोवल पुरस्कार मिलने मे ही कोई दिक्कत होती है।

—पर डाक्टर माथुर ने तो एक साथ दो वीवियाँ रखी है।

इसपर अरुण तैश मे आ गया, वोला—तुम्ही जानती हो कि यदि मौसी पर वह व्यभिचार या और कोई अभियोग लगाकर उन्हे तलाक दे देते, यह तो वकीलो के वाए हाथ का खेल होता है, तो वह मौसी के ही लिए खराव होता। डाक्टर माथुर जितनी जायदाद देने को कह रहे हैं, कानून से उससे कही कम जायदाद मिलती।—कहकर वह गुसलखाने मे घुस गया और उसने खटाक से दरवाजा वन्द कर लिया।

रमा यह अच्छी तरह जानती थी कि अरुण जो कुछ कह रहा है, वह ठीक है, पर अरुण के मुह से यह सही वात उसे न जाने क्यो रुचती नही थी। यदि अरुण इसके विरुद्ध मत को सामने रखता, तो स्वय वह इसी मत का प्रतिपादन करती, पर अरुण जव मौसी के विरुद्ध कोई वात कहता था तो उसके मन मे एक अज्ञात आशका सिर उठाकर खडी हो जाती थी, यह कसी आशका थी, जिसकी रूपरेखा का उसे कुछ पता नही था। और वह उस आशका के कारण वहुत दुखी हो जाती थी। ठीक है, पश्चिम मे विवाह एक ठेके के रूप मे हो चुका है, जिसे अक्सर लोग तोड देते है। औद्योगिक रूप से सवसे आगे वडे हुए देश अमेरिका मे चार शादियो पर एक तलाक होता है और इसे कोई वुरा नही मानता, पर भारत की अपनी सस्कृति है, भारत अमेरिका की दिशा मे नही जा सकता।

इसपर अरुण कह चुका था—यह भारतीय सस्कृति एक तमाशा है। पिछडेपन तेरा नाम भारतीय सस्कृति है। जव हमारा देश औद्योगिक रूप से उन्नत हो जाएगा, तव यहा भी लोगो के विचार वदल जाएगे और कथित भारतीय सस्कृति वाली सिह की खाल के नीचे गधे का जो शरीर छिपा हुआ है, वह सामने आ जाएगा यद्यपि उसे तुम नही देखती। और

मूर्ख स्त्री ने यह नही सोचा कि कही वह मर गई तब तो मौसी के लिए पूरी तरह मैदान ही साफ हो जाएगा ।

अरुण ने फिर भी कुछ नही कहा । तब रमा ने परिस्थिति अनुकूल जानकर पूरी खबर बताई, बोली—नीरा ने बहुत कोशिश की है कि मौसी महीने भर के लिए कही चली जाए, तो वह आराम से अस्पताल जाए, पर मौसी उसकी चाल समझ गई और वह बोली, मै तो हिन्दू स्त्री हू, कहा जाऊगी, मुझे तो यही पडी रहना है, यही मरूगी ।

अरुण एक बार दाढी बना चुका था, अब वह दूसरी बार कूची से साबुन लगा रहा था । लगाते-लगाते वह एकाएक हस पडा, बोला—बडी अजीब बात है ।

—क्या अजीब बात है ?

अरुण फिर हसता हुआ बोला—डाक्टर माथुर की कैसी छिछालेदर हो रही है । दोनो स्त्रिया उन्हे बहुत घटिया दर्जे का जीव समझती है । मौसी समझती है कि वह नए ढग से साडी बाधकर और मुह पर ढेर-सा पाउडर और रग पोतकर उनको अपने वश मे कर सकती है और नीरा जिसने निरे प्रेम मे डाक्टर माथुर से शादी की है, यह समझती है कि वह ऐसे है कि जरा देर मे ही बदल जाएगे । यह सच है कि नीरा ने डाक्टर माथुर से शादी करके बहुत साहस का परिचय दिया । उसे बहुतो का विरोध, विशेषकर अपने परिवार का विरोध, सहना पडा, पर डाक्टर माथुर ने तो इस शादी के लिए अपना सब कुछ यहा तक कि नौकरी भी बाजी पर लगा दी थी । चावला ने उन्हे उखाडने मे कोई कसर नही रखी थी । यदि यह साबित नही होता कि नीरा पहले से डाक्टर माथुर से प्रेम करती थी और मिलने की सुविधा अधिक पाने के उद्देश्य से इस कालेज मे आई थी, तब तो वह उखड ही जाते ।

रमा ने उत्तर मे कहा—तुम तो ऐसे कह रहे हो जैसे उनका उखड जाना कोई बडी सार्वजनिक विपत्ति होती । ऐसा आदमी उखड जाता, तो दूसरो को कुछ नसीहत हो जाती ।

अरुण ने देखा कि फिर से वही पुराना तर्क चालू होने वाला है । फिर भी उसने उठते-उठते कुछ झुझलाहट के साथ कहा—तुम लोग ऊपर

से आधुनिक वनती हो, पर तुम लोगो का मन बिल्कुल परदादियो और परनानियो के स्तर मे है। मैंने बार-बार तुम्हे समझाया कि पश्चिम मे केवल अभिनेता ही नही, वडे-वडे साहित्यकार तथा दार्शनिक चार-चार चार शादिया करते है। अवश्य एक साथ नही। वहा इससे न तो कोई नौकरी से उखडता है, और न नोवल पुरस्कार मिलने मे ही कोई दिक्कत होती है।

—पर डाक्टर माथुर ने तो एक साथ दो वीवियाँ रखी है।

इसपर अरुण तैश मे आ गया, वोला—तुम्ही जानती हो कि यदि मौसी पर वह व्यभिचार या और कोई अभियोग लगाकर उन्हे तलाक दे देते, यह तो वकीलो के वाए हाथ का खेल होता है, तो वह मौसी के ही लिए खराब होता। डाक्टर माथुर जितनी जायदाद देने को कह रहे हैं, कानून से उससे कही कम जायदाद मिलती।—कहकर वह गुसलखाने मे घुस गया और उसने खटाक से दरवाज़ा वन्द कर लिया।

रमा यह अच्छी तरह जानती थी कि अरुण जो कुछ कह रहा है, वह ठीक है, पर अरुण के मुह से यह सही वात उसे न जाने क्यो रुचती नही थी। यदि अरुण इसके विरुद्ध मत को सामने रखता, तो स्वय वह इसी मत का प्रतिपादन करती, पर अरुण जव मौसी के विरुद्ध कोई वात कहता था तो उसके मन मे एक अज्ञात आशका सिर उठाकर खडी हो जाती थी, यह कसी आशका थी, जिसकी रूपरेखा का उसे कुछ पता नही था। और वह उस आशका के कारण वहुत दुखी हो जाती थी। ठीक है, पश्चिम मे विवाह एक ठेके के रूप मे हो चुका है, जिसे अक्सर लोग तोड देते है। औद्योगिक रूप से सवसे आगे वडे हुए देश अमेरिका मे चार शादियो पर एक तलाक होता है और इसे कोई वुरा नही मानता, पर भारत की अपनी सस्कृति है, भारत अमेरिका की दिशा मे नही जा सकता।

इसपर अरुण कह चुका था—यह भारतीय सस्कृति एक तमाशा है। पिछडेपन तेरा नाम भारतीय सस्कृति है। जव हमारा देश औद्योगिक रूप से उन्नत हो जाएगा, तव यहा भी लोगो के विचार वदल जाएगे और कथित भारतीय सस्कृति वाली सिह की खाल के नीचे गधे का जो शरीर छिपा हुआ है, वह सामने आ जाएगा यद्यपि उसे तुम नही देखती। और

बातो मे मत जाओ, पुरुष और स्त्री के सम्बन्ध को ही लो। भारतीय सस्कृति मे पुरुष चाहे जितनी शादिया कर सकता था, पर स्त्री यदि छ वर्ष की उम्र मे विधवा हो गई तो वह विधवा ही बनी रहती थी। इसके अलावा घाते मे सती-प्रथा थी, जिसे अग्रेजो ने बन्द किया। यदि अग्रेज नही आते और राम मोहन पैदा न होते, तो शायद धर्म मे हस्तक्षेप न करो, इस बहाने से वह भोडी प्रथा अब तक चालू रहती।

रमा इन बातो की जुगाली करते हुए पति के खाने की तैयारी करने लगी। मौसी पर दुर्भाग्य का पहाड क्या टूटा, वह स्वय मझधार मे पड गई। जब से वह घटना हुई, तब से पति-पत्नी मे प्रेम का वह मधुर सम्बन्ध, जैसे किसी चट्टान से टकरा गया था, अब वह इस बात को अपने से स्वीकार नही करना चाहती थी। वह हर पुरुष को, यहा तक कि अरुण को सम्भव डाक्टर माथुर के रूप मे देखने लगी थी। इससे पहले डाक्टर माथुर का जीवन बडा प्रेममय था। सुरेश विशेषकर इला पर वह जान देते थे, मौसी के बारे मे यह मशहूर था कि मौसा उन्हे एक दिन के लिए मायके जाने नही देते थे। और वह कितना बदल गए कि नीरा दाल-भात मे मूसरचन्द बनकर आ गई और अब वह मा भी बनने जा रही है। डाक्टर माथुर चाहते नही थे कि कोई बच्चा हो, पर नीरा ने जबर्दस्ती अपनी बात मनवाई। उसने ऐसा यह सोचकर किया होगा कि बच्चे की मा बन जाने से अपना बल बढेगा और वह मौसी को सम्पूर्ण रूप से घर से बाहर बुहार देने मे समर्थ होगी। पर मौसी भी ऐसी जाहिल और बेवकूफ है कि यह सब कुछ नही समझती और बगाली ढग की साडी बाधकर, लिपस्टिक लगाकर मौसा को मोहित करने मे लगी हुई है।

अरुण नहाते समय कुछ गाता था। यह गाना हमेशा रमा के मन मे एक गुदगुदी पैदा करता था। उसे लगता था जैसे यह इस बात की सूचना दे रहा हो और घोषणा कर रहा हो कि सब कुछ ठीक है, मै ठीक हू, मेरा पुरुषत्व ठीक है, बच्चा ठीक है, नौकरी ठीक है, सब ठीक है। इस नहाने का और इसके साथ के सगीत का नौकरी के साथ सारी सुख-समृद्धि के साथ बहुत सीधा सम्बन्ध है। पानी गिरने की आवाज, साथ-

साथ सगीत की आवाज। अन्दर एक ठडक पहुचाती थी।

अरुण खा-पीकर चला गया। न रमा ने फिर वह विषय छेडा और न अरुण ने। अरुण तो जाकर अपने सह-अध्यापको और छात्रो मे सारी बात भूल जाएगा पर रमा उसी पर झीकती रहेगी। सच तो यह है कि अरुण मौनी के विषय को किसी प्रकार महत्त्वपूर्ण मानता ही नही था, वह तो उसपर ऐसे तर्क करता था जैसे यह अखबार मे प्रकाशित कोई खबर हो, जिससे उसकी नाडी का कोई सम्बन्ध न हो।

७

सुहासिनी ने विद्यानिवास को भी अपने पति के सम्बन्ध मे बताया। सुनकर विद्यानिवास को कोई आश्चर्य नही हुआ। उन्होने पूछा—तुमने भाभी से भी कह दिया ?

—हा, मैंने उनसे भी कह दिया पर खिचडी पर लात मारकर चले जाने की घटना तो बाद की है। रात भर वह लौटा ही नही।

विद्यानिवास चिन्तित हो गए, बोले—तुमने उससे कहा था कि ज़मानत ज़ब्त हो जाएगी ?

—हा, हमने कहा था, पर वह बोला मुझे झासा मत दो। ज़मानत करनी ही नही पडी, उन लोगो के कहने से ही काम बन गया। मैंने किया ही क्या था कि पुलिस वाले मुझे पकडते। वे तो रोब-दाब दिखा रहे थे, मिल जाता तो कुछ घूस भी ले लेते, पर यहा घूस देने वाला कौन था।

विद्यानिवास को आश्चर्य नही हुआ कि वह जान गया कि जमानत नही दी गई थी। पर घूस तो दिया गया था और इस सम्बन्ध मे सबसे बडी बात यह थी कि धीरे-धीरे सुहासिनी के वेतन से वह रकम वसूली भी जा रही थी। कही सुहासिनी भी तो यह नही समझ रही है कि बाबू लोग झासा-पट्टी देकर उससे हर महीने दस रुपये मार रहे हैं। बोला—बडा बदमाश लगता है। हवालात के अन्दर किस तरह गिडगिडा रहा था और अब कैसे शेर बन रहा है।—कहकर उन्होने सुहा

चेहरा पहले दफे ध्यान से देखा कि कही वह भी अपने पति से सहमत तो नही है। अरुण ने व्यर्थ मे इस मामले मे डाला। ऐसे दुष्टो को तो जेल मे ही रहना चाहिए। बाहर रहकर वह कौन-सा उद्देश्य सिद्ध कर रहे है ? बीवी-बच्चो को सताता है, सारे पैसे नशे मे बरबाद करता है, शराब औरतो मे रात गुजारता है और ऊपर से पडित जी बना फिरता है।

विद्यानिवास ने कहा—जाओ काम करो, मै कुछ सोचकर बताऊगा। हा, अगर वह तमाशा देखना चाहता है तो मैं उसे फौरन गिरफ्तार करवा सकता हू। मुझसे इस बीच दरोगा जी ने भी यह शिकायत की थी कि वह रात को दुष्ट लोगो मे घूमता है। मैं इतना ही कह दू कि अब उस पर मेरा सरक्षण नही है, तो वह फौरन गिरफ्तार हो जाए। तुम कहो तो मैं तमाशा करके दिखा दू।

सुहासिनी बोली—उसका तो उसी वक्त से पता नही है, जब से वह खिचडी पर लात मार के चला गया।

विद्यानिवासी ने अधैर्य के साथ कहा—ऐसे मैने बहुत देखे है। वह तुम्हारे लिए गायब है, पर पुलिस को अच्छी तरह पता होगा कि वह कहा है। या तो जुआडियो मे होगा, या कही शराब पीकर पडा होगा।

सुहासिनी ने प्रतिवाद करते हुए कहा—नही, वह मिल मे गया होगा। कभी नौकरी का नागा नही करता, यही एक अच्छी बात है।

विद्यानिवास ने फिर से सुहासिनी की ओर देखा कि यह अजीब औरत है। अभी तक यह मूर्खा उसमे गुण ही ढूढ रही है। उसने इसे इतना सताया, यहा तक कि कल लडको का खाना छीनकर उन्हे बाहर खदेड दिया और फिर उनकी पकी-पकाई खिचडी पर लात मार दी। फिर भी बडे गौरव से कहती है, मिल मे जरूर गया होगा, जैसे मिल मे जाकर वह जो कमाई करता है, वह इसके किसी काम आती है। उन्होने तीसरी बार सुहासिनी की ओर गौर से देखा और यो वह जिस प्रकार साधारण लगती है, देखा असल मे वैसी नही है। कही पर उसमे कोई छोटा-सा सोना है जो भीतर-ही-भीतर इस साधारण और रोजमर्रा होने से रोकता है, जैसे कि वैसे पुरुष की पत्नी को होना चाहिए। बोले—जाओ, काम पर जाओ, मै सोचूगा।

फिर भी सुहासिनी वहा से नही हटी, तो विद्यानिवास ने उसे फिर ध्यान से देखा, वोले—जाती क्यो नही हो ? मै आज जरूर दरोगा जी से वात करूगा और वह जैसा कहेगे वैसा ही करेगे।

सुहासिनी ने बहुत ही दवते हुए कहा—वह तो यही कहेगे कि उसे गिरफ्तार करा दीजिए।

—तो करा दूगा। यह तो वाये हाथ का खेल है।

सुहासिनी वोली—साहव, मै यह नही चाहती कि उसे गिरफ्तार कराया जाए। उसके रहने से फिर भी सिर पर एक साया तो बना रहता है।

विद्यानिवास ने अब की वार सुहासिनी की ओर बहुत व्यग्य और कुछ झुझलाहट के साथ देखा—वडा भारी साया है कि रात-रात-भर पता नही लगता। वदमाश औरतो के साथ रात काटता है और लडको का खाना छीनकर उन्हे घर से निकाल वाहर करता है।

सुहासिनी सोचने लगी कि इसे भी वह वात वताऊ या न वताऊ कि मैं अछूत स्त्री हू और वह ब्राह्मण। लगा कि उसका कोई असर नही होगा क्योकि दिल्ली मे कोई ब्राह्मण को नही पूछता, बोली—आप कुछ ऐसा करिए जिससे वह एकदम सुधर जाए। मैं और कुछ नही चाहती।

—उसे तो ब्रह्मा भी नही सुधार सकते। वह केवल एक ही वात से ठीक हो सकता है कि उसकी नौकरी चली जाए, ताकि उसे शराव पीने और वदमाशी करने के लिए पैसा न मिले। यह तो मैं फौरन करा सकता हू। इससे भी नही मानेगा तो उसे वडे घर भिजवा दूगा।

इसपर सुहासिनी लगभग विलविलाती हुई वोली—नही साहव, नही। नौकरी जाएगी तो वह मेरे सारे पैसे ले लिया करेगा। अभी तक तो यही समझौता है कि वह मुझसे पैसे नही मागता यानी बहुत कम मागता है।

विद्यानिवास फौरन इसका समाधान पेश करते हुए वोले—जब ऐसा करेगा तो मैं उसे गिरफ्तार करवा दूगा, तुम क्यो डर रही हो ?

पर सुहासिनी ने आखो मे आसू लाते हुए कहा—अच्छी वात है। मैं आप लोगो से कुछ नही कहूगी। मुझपर जो कुछ पडेगा, उसे सहूगी।

कहकर वह काम करने लग गई और विद्यानिवास सोचते रह गए कि यह कैसी औरत है कि सारे दुर्गुण होते हुए भी यह अपने पति का कल्याण चाहती है और एक मेरी पत्नी है कि मुझपर तरह-तरह के अकुश रखती है। यदि मै उसके साथ इतना अन्याय करू जितना जगन्नाथ करता है, तो वह मुझे जेल तो क्या फासी पर चढवाना चाहेगी। मेरी पत्नी तो मुझे रुपये कमाने की एक मशीन भर समझती है। उसकी कोशिश यही रहती है कि सारे पैसे या तो उसपर खर्च हो, या उसके लिए जमा रहे, बाकी बातो से उसे कोई सरोकार नही। वह स्वय जितने पैसे मास्टरनी के रूप मे कमाती है, उन सबको साडिया, पाउडर, लिपस्टिक, गहनो पर खर्च करती है। और यह औरत ऐसी है कि इसे पति से कुछ नही मिला, केवल अपमान और दु ख मिला, फिर भी वह उसे किसी प्रकार की हानि पहुचाना नही चाहती। और यह औरत मेहरी कहलाती है। यद्यपि शायद अच्छी जात की है और हमारी औरते शरीफ कहलाती है। उस दिन विद्यानिवास ने कालेज मे सारी बात अरुण से बताकर कहा—अब बताओ क्या किया जाए ? यह तलाक के लिए एक आदर्श मामला है। पर सुहासिनी से पूछो, वह तलाक नही चाहती, वह क्या चाहती है यह मेरी समझ मे नही आता। जीवन विचित्र है।

अरुण ने कहा—शायद ही कोई स्त्री यह जानती हो कि वह क्या चाहती है। कहना तो नही चाहिए क्योकि कहने पर मैं दकियानूस समझा जाऊगा, पर कहना पडता है कि यह जो धारणा है—स्त्री आदम की एक पसली से बनी, वह ठीक लगती है। अगर सुहासिनी नही समझ पाती कि वह क्या चाहती है, तो इसमे कोई आश्चर्य की बात नही। पर हमारी मौसी यानी डाक्टर माथुर की पहली पत्नी भी नही जानती कि वह क्या चाहती है। वह अब लिपस्टिक लगाकर अपने पति को मोहित करना चाहती है।

—यह तो कुछ हद तक समझ मे आता है, क्योकि मौसी रोटी के लिए डाक्टर माथुर पर निर्भर है पर सुहासिनी किसी प्रकार भी उस दृष्टि पर निर्भर नही है। वह स्वतन्त्र स्त्री है, पर वह भी अपने बदमाश पति से अलग होना नही चाहती।

दोनो मित्र कालेज के कॉमन रूम मे जिस समय बैठकर इस प्रकार वत-कही कर रहे थे, उस समय सुहासिनी का घर ढूढकर कुछ शरीफ लोग टैक्सी पर आए हुए थे, बोले—यह काशी के पडित जगन्नाथ का घर है ?

उस समय सुहासिनी घर पर नही थी। केवल दोनो बच्चे घर पर थे। टैक्सी तथा शरीफ और धनी लगने वाले लोगो को देखकर मुहल्ले वाले सहायता के लिए आगे बढ आए। एक मुहल्ले वाले ने कहा—हा, हा, इसीमे जगन्नाथ रहता है, जो मिल मे पानी पिलाता है और उसकी बीवी आया का काम करती है।

टैक्सी पर आए हुए दो सज्जनो मे से एक, जिसकी उम्र लगभग बीस-बाईस साल थी, बोले—मैं तो पडित जगन्नाथ को खोज रहा हू'

वर्णन सुनकर उस युवक को विश्वास हो गया था कि वह गलत जगह पर आ गया है, आखो-ही-आखो मे युवक ने यही बात अपने अधेड साथी से कही, बोला—मैं तो काशी के पडित जगन्नाथ को खोज रहा हू, जिनका पाच साल से पता नही है।

मुहल्ले वाले को भी सन्देह हो गया, बोला—साहब, मैं पडित-वडित तो जानता नही। यहा एक जगन्नाथ जरूर रहता है, जो मिल मे पानी पिलाता है और उसकी बीवी आया है। ये दोनो उसी के बच्चे हैं।

उस युवक ने बडे बच्चे की तरफ देखा तो पहली दृष्टि से उसकी आखे एक बार चमक उठी। उसे लगा कि इस लडके से भैया के बचपन के फोटो का बहुत सादृश्य है। और भैया के ही क्यो, अपने बचपन का फोटो भी इसी से मिलता-जुलता है, पर जल्दी ही पहली दृष्टि मे देखी हुई वह ममता, चारो तरफ की गन्दगी तथा इस बस्ती की बदबू मे खो गई। उसने बडे बच्चे से पूछा—तेरा नाम क्या है ?

—मेरा नाम मुनुआ है।

उस युवक को, जिसका नाम विश्वनाथ था, बहुत बुरा लगा कि क्या ऐसा हो सकता है कि भैया ने इस गन्दगी और बदबू मे रहने के लिए अपने पूर्व जीवन से नाता तोड दिया हो ? ऐसा नही हो सकता। यदि उसका वश

चलता तो फौरन टैक्सी मे बैठकर भाग जाता, पर पिता जी की मृत्यु के बाद से माता जी ने घर मे इस कदर वावैला मचा रखा है कि उसे भाई की तलाश मे निकल पडना पडा और अब वह एक गन्दे और अजीब कुण्ठा-ग्रस्त एक लडके के सामने खडा था, जो शायद उसका भतीजा था। कहा अपने खानदान के और मिलने-जुलने वालो के लडके और कहा यह मैले-कुचैले कपडे, सो भी फटे चीथडो मे लिपटा हुआ यह लडका और लडकी। डाटकर बोला—मुनुआ कही नाम होता है ? तेरा नाम क्या है ?

लडका डर गया, क्योकि उसे इस आगन्तुक की आवाज मे कही अपने बाप की आवाज मालूम पडी। वह पीछे हट गया, बोला—घर पर कोई नही है।

मुहल्ले वालो का कौतूहल बहुत बढ चुका था, इतना कि बच्चे के साथ आगन्तुक का सम्वाद उन्हे समय का अपव्यय लग रहा था। उसी व्यक्ति ने, जिसने पहले आगे बढकर बात की थी, कहा—क्या जगन्नाथ ने कही कुछ कर डाला है ? आप लोग कौन है ? पुलिस के आदमी है ?

इस युवक को यह प्रश्न बहुत बुरा लगा। बोला—मै पुलिस का आदमी नही हू, मैने आई० ए० एस० मे परीक्षा दी है।

मुहल्ले वाले का कौतूहल और बढ गया, बोला—आप जगन्नाथ को क्यो खोज रहे है ? वह तो मिल मे पानी पिलाता है, आपको देखकर ही मै समझ गया था कि आप बडे आदमी है।

विश्वनाथ के साथ का अधेड व्यक्ति हसकर बोला—आप उनके कोई मिलने वाले है ?

वह व्यक्ति पीछे हट गया, बोला—नही-नही, मै किसीका मिलने वाला नही हू। एक दफे जगन्नाथ गिरफ्तार हो चुका है, इसलिए मैने समझा कि शायद वह कोई और मामला कर चुका है। तीन-चार दिन से वह इधर देखा नही गया।

विश्वनाथ ने उस अधेड व्यक्ति की तरफ ध्यान से देखा और दोनो मे आखो-आखो मे कुछ बात हुई। विश्वनाथ ने अब मुहल्ले वाले उस व्यक्ति की तरफ से बिल्कुल मुह फेर लिया और उस बच्चे से पूछा—बेटा, यह बताओ, तुम्हारे घर मे तुम्हारे बाप की कोई तस्वीर है ?

लडका प्रश्न समझ नही पाया, बोला—घर मे कोई नही है, मा काम पर गई है ।

विश्वनाथ समझ गया कि अन्तिम निर्णय अभी नही हो सकता, बोला—तुम्हारा बाप किस मिल मे काम करता है ?

लडका इस सम्बन्ध मे भी कुछ बता न सका, बोला—वह तीन-चार दिन से रात को नही आए ।

विश्वनाथ ने निराश होकर अपने साथी की ओर देखा । तब वह अधेड व्यक्ति आगे बढ आए और बच्चे से बोले—मैं तुम्हे ढेर-सी मिठाई दूगा । यह बताओ कि तुम्हारी मा कहा काम करती है । मेरे साथ टैक्सी पर बैठो और वहा हमे ले चलो ।

लडके ने मिठाई पाने और टैक्सी पर चढने की लालसा से प्रोत्साहित होकर कहा—घर कौन देखेगा ?

उस अधेड व्यक्ति ने घर के अन्दर झाकने की चेष्टा करते हुए कहा —अच्छी बात है, यह (अपने साथी को दिखाकर) यही रहेगे, तुम मुझे ले चलो ।

मुहल्ले वाले कल्पना के घोडे को बुरी तरह दौडा रहे थे । पहले तो वे समझ रहे थे कि जगन्नाथ पर कोई विपत्ति उतरी है, पर अब उन्हे कुछ ऐसा ख्याल आया कि शायद जगन्नाथ को लाटरी का कोई इनाम मिल गया और उन्हे डर हुआ कि एकाएक इस गरीब लोगो के मुहल्ले का सबसे कम सम्मान प्राप्त व्यक्ति कही सबसे सम्मानित व्यक्ति न हो जाए । किसी मुहल्ले वाले का सम्मान रातो-रात बढ जाए, यह भला वे कैसे सह सकते थे । पता नही कितना मिला है ? दस हज़ार, लाख, दो लाख, पाच लाख । वह व्यक्ति जो बातें कर रहा था, आगे बढकर बोला—मैं बताता हू कि वे कहा काम करते है । मैं वह मिल भी जानता हू । मैं भी टैक्सी मे चलता हू ।

पर विश्वनाथ ने आज्ञामूलक ढग से उसे मना कर दिया, बोला—मैं यही खडा हू । यह बच्चा हमारे मामा जी के साथ जाएगा । वही घर बताएगा ।

थोडी ही देर मे सुहासिनी को लेकर टैक्सी लौट आई, पर असल मे वे सुहासिनी से मिलने नही आए थे बल्कि मिलने आए थे जगन्नाथ

से। जब टैक्सी खडी हुई तो सुहासिनी यह समझ नही पाई कि इन बडे लोगो का स्वागत कैसे किया जाए। वह मन-ही-मन यह भी अनुमान नही लगा पा रही थी कि उनका आना उसके लिए भलाई का सूचक है या बुराई का। कई दिनो से जगन्नाथ का पता नही था, वह जो खिचडी पर लात मार कर चला गया था, तब से नही लौटा था। सुहासिनी को विश्वास था कि जगन्नाथ यहा आए या न आए, काम पर जरूर जा रहा होगा, क्योंकि उसने सभी तरह की बदमाशिया की, पर काम पर जाना कभी नही छोडा, पर उसने अपने इस विश्वास को टैस्ट नही किया था, शायद इस भय से कि पूर्ण विश्वास के साथ-साथ कुछ अविश्वास भी था कि सम्भव है अब की बार उसने काम छोड दिया हो। छोड दिया होगा तो जाएगा कहा, इसलिए उसने अपने मन को यही समझाया था कि वह काम पर जा रहा होगा।

टैक्सी से उतरते ही उसने सामने खडे विश्वनाथ को पहचान लिया और विश्वनाथ ने उसे पहचान लिया। मुहल्ले वाले सब जा चुके थे, पर दूर से उनकी निगरानी जारी थी। सुहासिनी ने आते ही यह अनुभव कर लिया कि वातावरण मे कुछ तडपन है और यह भी उसने देख लिया कि विश्वनाथ उसे पहचान कर खुश नही हुआ। विश्वनाथ शायद चाहता था कि यह जगन्नाथ उसका भाई जगन्नाथ साबित न हो।

सुहासिनी को पहली बार अपने लगभग मैले-कुचैले कपडो पर लज्जा हुई। यह युवक जो बहुत अच्छे कपडो मे सवार खडा था, यह उसका देवर है ऐसा सोचते हुए उसे लगा कि उसके कपडे ही उसके और उसके बीच रगडे सिद्ध हो रहे है। उसकी आखे अपने बच्चो पर गई, लडको की नाक के नीचे पपडी जम गई थी। उसने दौडकर जल्दी से उसे पोछा और जैसे विश्वनाथ को उतना ही जितना अपने को तसल्ली देते हुए कहा—हम लोगो की शादी आर्यसमाजी ढग से इलाहाबाद मे हुई थी। पडित महेन्द्रनाथ शास्त्री ने शादी कराई थी।

इस वक्तव्य ने विश्वनाथ और उसके मामा को काठ मार गया। उनके माथे पर और बल आ गए, क्योंकि उनके निकट यह स्पष्ट हो गया कि केवल चल देने का प्रश्न नही है, मामला उससे कही अधिक जटिल

और गहरा है। विश्वनाथ ने सुनी-अनसुनी करके कहा-- वह कहा है ?

सुहासिनी की आखो के सामने वह दृश्य नाच गया, जब भूखे बच्चो की खिचडी पर लात मार जगन्नाथ झूमता हुआ निकल गया था। जैसे उसने कोई शेर मारा हो पर इन लोगो को वे सारी बाते बताने की आवश्यकता नही है। बोली—वह तीन-चार दिन से घर नही आए।

आर्यसमाजी ढग से महेन्द्रनाथ शास्त्री द्वारा शादी कराई जाने की खबर पाकर विश्वनाथ तथा उसके मामा के माथे पर जो सिलवटे पड गई थी, वे दूर हुई। शादी हुई हो या न हुई हो, इससे कुछ आता-जाता नही है। अब दोनो मे कटाव पैदा हो चुका है। काम कुछ कठिन नही रहेगा। विश्वनाथ ने पूछा—वह किस मिल मे काम करते है ?

सुहासिनी ने बता दिया। दोनो आगन्तुक फिर से टैक्सी पर सवार हो गए और मामा जी ने लडके से आख नही मिलाई, क्योकि उन्होने ढेर-सी मिठाई वाला अपना वादा न तो पूरा किया था न पूरा करने का कोई इरादा था। लडका निराश होकर मा के साथ भीतर चला गया और पडोसी समझ नहा पाए कि मामला क्या है। यदि ये पुलिस के लोग थे, उन्होने डाट-डपट क्यो नही की और यदि ये खुशखबरी लाए है, तो उन्होने सुहासिनी से वह बात बताई क्यो नही ?

विश्वनाथ टैक्सी मे बैठा-बैठा सोच रहा था। मामा जी ने कहा—मालूम होता है, आसानी से काम बन जाएगा।

पर विश्वनाथ यह सब नही सोच रहा था, वह यही सोच रहा था कि भैया ने कैसे इस प्रकार रहना स्वीकार किया। इसमे कोई सन्देह नही कि सुहासी उस इलाके की सबसे सुन्दर लडकी थी। अब भी उस खण्डहर मे पुराना तत्व मौजूद था। अब वह ठुमक-ठुमक कर अठखेलिया करती हुई चलती नही थी, पर अब भी पुरानी बात बहुत कुछ बाकी थी, अलबत्ता वह दब गई थी। माना कि वह सुन्दरी थी और ढग के कपडे-लत्ते पहनने पर अब भी सुन्दरी लग सकती है, पर इस प्रकार गन्दे वातावरण मे एक कोठरी मे रहना यह कहा का प्रेम है ? इतिहास मे ऐसा बार-बार हुआ है कि लोगो ने प्रेम मे पडकर राजपाट पर लात मार दी, पर प्रेम के लिए पेड के नीचे बस जाना तो समझ मे आता है, पर ओह !

वातावरण में कैसी बदबू बसी हुई थी, दम घुट रहा था इसीमें वह रहते हैं और पांच-छः साल से रहते हैं क्योंकि वे बच्चे बता रहे हैं कि भैया कब भागे थे। जब वह भागे थे यानी जब वह रात को घर नहीं लौटे, तो चारों तरफ खोज कराई गई कि कहीं गंगा जी में डूब तो नहीं गए, क्योंकि तैरने का भैया को शौक था।

रात बारह बजे तक जब जगन्नाथ नहीं लौटे, तो उनके पिता राय-साहब पंडित ऋषभचरण ने पुलिस में खबर दी। विश्वनाथ तो सो गया, पर मा-बाप दोनों जागते रहे। सवेरे अभी-अभी विश्वनाथ जगा ही था कि खट-खट करते हुए दो-तीन पुलिस वाले आ गए। विश्वनाथ चौकन्ना हो गया। कौन आया था, पता नहीं, पर उसकी आवाज से मालूम हुआ था कि वह कोई अफसर है। वह व्यक्ति बोला—रायसाहब, जगन्नाथ के साथ-साथ एक भगिन के भागने की भी रिपोर्ट आई है। पता लगा है कि दोनों एक साथ गए।

विश्वनाथ की मा ने पूछा—भगिन ?

पर रायसाहब ने मौका नहीं दिया कि पुलिस अधिकारी उत्तर दे। बोले—बस-बस, खत्म कीजिए। मुझे उसका पता मिल गया।

विश्वनाथ ने इतना ही देखा और सुना कि उसी समय मा वहां से निकल आई और रायसाहब दरवाजा बन्द करके पुलिस वालों के साथ कुछ बातचीत करते रहे। फिर पुलिस वाले वहां से निकल गए। विश्व-नाथ के कान अभी खड़े थे। यद्यपि इस बीच वह दातुन खत्म कर चुका था और सामने पुस्तक रख कर पढ़ने का बहाना भी कर रहा था। उस अधिकारी ने निकलते समय कहा—मैं समझ गया। मैं दोनों रिपोर्ट कटवा देता हूं।

रायसाहब बोले—नहीं-नहीं मेरी रिपोर्ट तो काट दीजिए और भगी की रिपोर्ट रहने दीजिए। सिर्फ उसमें इतना जोड़ दीजिए कि लड़की, उम्र २३ साल।

पुलिस अधिकारी बोला—मैं समझ गया। यह तो मेरे लिए और आसान है। दैनिक यह है कि आपकी रिपोर्ट हमने दर्ज ही नहीं की थी।

टैक्सी मोड़ पर मोड़ ले रही थी। मामा जी तो पहली बार किसी

आए थे, वडे ध्यान से सडको और मकानो को देख रहे थे, फिर एकाएक बोल पडे—रात की गाडी से तीनो चल देगे।

विश्वनाथ समझ नही पा रहा था कि कैसे चल देगे। पर जब भी वह समझ नही पा रहा था, तभी उसके मन पर कील ठोककर कोई कहता था—और इस स्त्री का क्या होगा ? इन बच्चो का क्या होगा ?

विश्वनाथ ने कहा—मामा जी, सुहासी का क्या होगा, बच्चो का क्या होगा ?

मामा जी ऐसे बेकार प्रश्न के लिए तैयार नही थे। बोले—क्या होगा, इसका हमे कोई ठेका है ? जब वह भागी थी तो मुझसे या रायसाहब से पूछकर भागी थी कि आज हम सोचे कि उसका क्या होगा, उसके बच्चो का क्या होगा ? फिर वह तो कमाती है।

—तुम्हे यह चिन्ता क्यो सता रही है ?

—सता नही रही है, पर सोच रहा हू कि भैया ने बहुत गलत काम किया था।

मामा जी एकाएक अपने भाजे की पीठ ठोकते हुए बोले—बहुत खूब ! तुमको नसीहत हो गई, यह अच्छी बात है, नही तो रायसाहब तो

मामा जी की बात को बीच मे ही काटकर विश्वनाथ ने कहा—रहने दीजिए, आपको तो मौका मिल जाए तो बस पुरानी बातें छेड देते हैं। इस प्रश्न को सुलझाइए, सो नही, बेकार की बातो मे उलझ रहे है।

मामा जी कुछ भी उद्विग्न न होकर बोले—वही तो मैं कहने जा रहा था, सो तुमने कहने नही दिया। मैं तो यही कह रहा था कि गिर कर उठना यही बडे लोगो की विशेपता होती है। जब तीन दिन से नही आया तो यह साफ है कि कोई भयकर झगडा हुआ होगा। मुझे तो बस यही डर है कि कही जगन्नाथ काशी न पहुच गया हो, तो हम लोगो का आना ही व्यर्थ हो।

विश्वनाथ को फिर भी तसल्ली नही हुई। बोला—वाह, आप तो ऐसे बात कर रहे है जैसे कोई रात को देर करके आया हो। पर इस बीच पाच-छ साल गुजर गए, शादी हुई, दो बच्चे हुए, इन्हे छोडकर जाना कोई हसी-खेल है ?

मामा जी ने इसका उत्तर नही दिया क्योंकि उत्तर देने मे बहुत-सी कटु बाते कहनी पडती । वह चुपचाप दिल्ली देखते रहे । उनका अन्तर्मन बाग दे रहा था कि जब गलती सरजद हुई, तो उसे सुधारने के लिए किसी न किसीका बलिदान तो करना ही पडेगा, चाहे जगन्नाथ का बलिदान किया जाए और चाहे सुहासी का यानी सुहासी और उसके बच्चो का ।

टैक्सी आकर मिल मे पहुच गई । वहा जगन्नाथ को खोजने मे कोई दिक्कत नही हुई । जगन्नाथ ने इट्रेंस तक पढने के बाद ही पढना-लिखना छोड दिया था और आवारागर्दी करते हुए घूमता था । वह सहज ही मे मिल के छोटे तबके के कर्मचारियो मे अपने ब्राह्मणत्व और शराब पीने की आदत की बदौलत घुल-मिल गया था ।

जब जगन्नाथ ने अप्रत्याशित रूप से देखा कि उसके सामने उसका छोटा भाई और मामा खडे है और छोटे भाई ने बढकर उसके पैर छुए तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ । वह सहसा समझ नही सका कि इसका अर्थ क्या है और ये आए कैसे । जब मामूली बातचीत हो गई और यह बता दिया गया कि मा के कहने पर ही वे लोग आए है, तो मामा और विश्वनाथ मे दृष्टि-विनिमय हुआ कि अभी पिता जी के देहान्त की बात बताई जाए या नही । टैक्सी के सामने सडक मे खडे होकर यह बात बताने की नही थी, इसलिए मामा जी ने तपाक से फैसला करते हुए कहा —चलो, हमारे होटल मे, वही बातचीत होगी ।

तीनो टैक्सी पर सवार हो गए और जक्शन और फतेहपुरी के बीच एक होटल मे पहुचे । न तो मामा जी ने और न विश्वनाथ ने सुहासी और उसके बच्चो के बारे मे कोई बात पूछी और न जगन्नाथ ने ही इस सम्बन्ध मे कुछ कहा । दोनो पक्ष इस प्रसग को इस प्रकार बचाते रहे, मानो कोई बच्चा हुआ ही न हो और शादी हुई ही न हो । मामा जी ने होटल का कमरा खोलकर अपना धुला हुआ कुर्ता-पायजामा जगन्नाथ को देते हुए कहा—जाओ, नहा लो । इन कपडो को गठरी मे बाधकर रख दिया जाएगा ।

जगन्नाथ को अपने कपडो पर शर्म आ रही थी । विशेषकर इस कारण कि इस बीच होटल के बैरे उसे इस प्रकार कई बार घूर गए थे कि होटल की कुर्सियो पर बैठकर वह गुस्ताखी कर रहा है । यद्यपि वह

स्वय कुछ नही पढा था, पर इस बीच उसे यह जो मालूम हुआ था कि छोटा भाई आई० ए० एस० होने जा रहा है इसलिए उसे और भी बुरा लग रहा था। वह फौरन ही गुसलखाने मे घुस गया और साबुन मल-मलकर देर तक नहाता रहा। उसके बाद मामा जी के कपडे पहनकर वह बाहर निकलता हुआ बोला—आपके कपडे मुझे बिल्कुल फिट आए, इसके माने यह है कि आप मोटे हो गए क्योकि याद है न कि मैने आपकी नाइलोन की कमीज उडाई थी, वह मुझे फिट नही आई तो मुझे लौटानी पडी।

मामा जी की जीभ पर ये शब्द आ गए—कमीज तो लौटी पर उसके सोने के बटन नही लौटे।—पर मामा जी ने इन शब्दो को मुह से बाहर आने नही दिया क्योकि अब पिता की मृत्यु की खबर देनी थी। जब जगन्नाथ गुसलखाने मे था, उसी समय मामा जी ने यह फैसला किया था कि गुसलखाने से निकलते ही समाचार दे दिया जाए। पर अब जब कि शून्य की घडी बिल्कुल सिर पर आ चुकी थी, वह झिझकने लगे। उन्हे सहसा घुटन महसूस हुई और उन्होने खिडकी खोल दी और सूर्य को ढूढने की व्यर्थ चेष्टा की क्योकि सामने पतली-सी गली के उस पार इतने ऊचे मकान थे, जिनके पीछे सूर्य कही अधकार मे अन्तिम छलाग लगाने के लिए पेग भर रहे थे, बोले—अजीब सब मकान बने है। हमारा तो भाई ऐसी जगह पर दम घुटता है। आज ही रात को चले चलो।

खिडकी खुली रही। इसी बीच विश्वनाथ के साथ जरा-सा दृष्टि-विनिमय हुआ। विश्वनाथ तैयारी के रूप मे रुआसा हो चुका था, क्योकि अभी पिता जी को मरे तीन महीने भी नही हुए थे। मा तो अब भी जब-तब रो पडती थी। मामा जी ने विश्वनाथ के रुआसे चेहरे को देखा और वह एकाएक कह उठे—पहले खाना मगाओ भाई। दोपहर से टैक्सी मे घूम रहे है। कही कुछ खाने को नही मिला। पहले खाना मगाओ। फिर अर्थपूर्ण ढग से विश्वनाथ ने कहा—देखा जाएगा, खाना मगाओ।

थोडी ही देर मे खाना आ गया और तीनो खाने पर जुट गए। खाते-खाते मामा जी को एकाएक सुहानी के उस बच्चे की याद आई, जिसका चेहरा ढेर-सी मिठाई पाने की आशा से चमक उठा था और

इतना चमक उठा था कि अपने मैले-कुचैले फटे चीथडों के बावजूद वह बीस साल पहले के अपने बाप की तरह लगा था, जिसे मामा जी, जो उन समय नवजवान थे, गोद में खेलाया करते थे। उन्हे एकाएक हिचकी आई, तो उन्होंने खाना रोक दिया। विश्वनाथ बोला—मामा जी, क्या बात है, तबियत तो ठीक है ?

मामा जी खाने लगे, बोले—कोई बात नही है। योंही हिचकी आई।—कहकर जबर्दस्ती हंसते हुए बोले—तुम्हारी मामी जी मुझे याद कर रही होंगी। वह समझती है कि मै इतना नादान हू कि या तो रेल के नीचे कट जाऊंगा या कोई ठगकर मेरा सूटकेस लेकर चलता बनेगा कि उन्हींके नाविकत्व की बदौलत हमने यह वैतरणी पार की है। उनकी पूछ का सहारा छूटते ही मैं भवसागर के मगरमच्छों की खुराक बन जाऊंगा।

पर हिचकी फिर आई और साथ-साथ याद आया लड़के का वह चेहरा जो मिठाई के नाम मात्र से चमक उठा था। नाराज होकर बोले—यह क्या खाना है ? बहुत रद्दी है। कडवा लग रहा है। मैं अब नहीं खाऊंगा।

पर जगन्नाथ खूब खाए जा रहा था, जैसे उसे बहुत दिनों से भरपेट खाना न मिला हो। विश्वनाथ भी अब खाना बन्द करना चाहता था, पर यह सोचकर कि ऐसा करना भाई को मजबूर करना होगा जिनको शायद वर्षों से ऐसा खाना नहीं मिला होगा। भला मिल में पानी पिलाकर और मजदूरी का काम करके कितने पैसे आते होंगे और क्या खाना मिलता होगा। पर यह सब तो भैया का अपना ही दोष था। पढ़े नहीं, लिखे नहीं, आवारागर्दी करते रहे और अब ऐसे हो गए है कि भाई कहके मानने में लज्जा लगती है। खैरियत यह है कि सिवा माता जी और मामा जी के किसी को मालूम नहीं है कि इस तरह भगिन की लड़की को लेकर भागे है। सब लोगों को यही कहा गया है कि जगन्नाथ साधु हो गए और हिमालय में (हाय हिमालय पर जाकर कितने ढूंढ़ अपने वाले संन्यासि ठिकाना पकड़े रहते है) तपस्या कर रहे है। समाज-समुद्र पर इस महा झूठ की आंच को कायम रखने के लिए इतना भूर

का यह ईंधन डाला जाता था कि अभी अमुक आया था, जिसने जगन्नाथ को देखा, अमरनाथ के रास्ते मे, पहाडी गुफाओ मे। लम्बी दाढी, वाल बढे हुए चेहरा सूखा हुआ गले मे रुद्राक्षो की माला, कुशासन पर बैठे हुए। नाम भी कुछ भला-सा है—आत्मानन्द या रामानन्द। कही लोगो को मालूम हो जाए कि भगिन से शादी कर ली, तो छठी का दूध याद आए। भागना या भगाना तक तो गनीमत है, क्योकि सभी बडे आदमी ऐसा करते हैं, पर तोवा-तोवा, शादी करना! समाज भगिन की लडकी को भगाने की क्षमा कर देगा, पर वह शादी के अपराध को कभी क्षमा नही करेगा और आई० ए० एस० की परीक्षा मे वैठने के नाते जो लोग अपनी सुन्दरी, सुशिक्षिता कन्याओ को लेकर उसके गले मढने की कोशिश कर रहे है, वे सव के सव उडनछू हो जाएगे।

मामा जी तो उठकर हाथ भी धो आए और जगन्नाथ तथा विश्वनाथ खाते ही रहे। मामा जी ने सिगरेट सुलगा ली, पर उसमे भी कोई रस नही आया वल्कि धुए के अन्दर उसी वच्चे की शक्ल उभरने लगी। मामा जी ने भी अपनी नौजवानी के दिनो मे एक कथित छोटी जाति की लडकी से प्रेम किया था। मामा जी अव याद करना नही चाहते थे कि वह किस जाति की लडकी थी। सच तो यह है कि कभी किसी ने उसकी जाति इन्हे वताई नही थी, क्योकि यह घर की महरी की लडकी थी। पर उस प्रेम को इस प्रकार पुष्पित और पल्लवित होने का मौका नही मिला था। नही तो, क्या पता? इसी तरह का एक वच्चा पैदा होता और उसे छोड देना पडता। मामा जी ने दोनो भाजो को खाते हुए देखा और अपने ने कहा—नही-नही, मैं कभी ऐसा नही कर सकता। यह अनुचित होता। मामा जी को वह महरी की लडकी वहुत याद आती थी, नाम अच्छा-सा था, पर अव याद नही पडता। शायद मोहनी हो। अव तो यह भी याद नही पडता कि क्यो वह प्रेम अपने तार्किक उपसहार तक पहुच नही सका। खुद ही कही चले गए या वही कही चली गई या और कुछ हुआ, पर इतना स्मरण है कि जीवन का वही एकमात्र प्रेम था। वाद को शादी भी हुई, वाल-वच्चे भी हुए, पर वह रस नही वरसा, जो उन दिनो आया था। उनसे यदि कोई लडका होता, तो उसे छोडा कैसे जा सकता

गया, डमता गया, खून पीता गया और अन्त मे वह मर गए। मैं कैसा नालायक हू। भाई आई० ए० एस० हो रहा है और मैं मिल मे पानी पिलाता हू, कुकर्म करता हू। मेरे ही कारण वह मर गए।

कहकर वह धाड मारकर रोने लगा, इतना रोने लगा कि विश्वनाथ भी उसे समझाने लगा। बोला—नही भैया, वह तुम्हारे कारण नही मरे, उन्होने तो एक दिन भी तुम्हारा नाम नही लिया।

—नाम नही लिया, तभी तो मैं कहता हू कि उनका दिल मेरे ही नाम से भरा था, वह किसीको अपना घाव दिखाना नही चाहते थे। कभी मेरा नाम नही लेते थे, पर मेरा दिल कहता है कि मेरे ही कारण वह मर गए। मैं बडा पापी हू, मैंने अपने पिता की हत्या की

कहकर वह फिर रोने लगा। मामा जी समझे थे कि जगन्नाथ कुछ न कुछ शोक व्यक्त करेगा, पर इतना ? इसकी उन्हे भी आशा नही थी। सम्भव है कि यह जो बात कर रहा है, वह ठीक है। क्योकि उसी दिन से जब से यह भागा था, तब से रायसाहब अन्तर्मुखी हो गए थे। ऊपर से वैसे ही बने रहे पर भीतर ही भीतर कोई चीज उन्हे कचोटती जा रही थी। बोले—बिल्कुल नही, वह तुम्हारे कारण नहीं मरे। सबको एक दिन मरना पडता है। जो हो गया, सो हो गया, अब तुम्हारी माता जी बहुत दुखी हैं। तुम आज रात की गाडी से हम लोगो के साथ चले चलो। नहीं तो कहीं ऐसा न हो कि सुजाता दीदी भी चल बसे।

पर जगन्नाथ ने कोई बात नही सुनी और उसी तरह अपने को पितृ-हन्ता बताता और रोता रहा। यह प्रक्रिया घण्टो चली, यहा तक कि मामा जी ने घडी देखी तो गाडी का वक्त हो रहा था। एकाएक बोल पडे—चलो, स्टेशन चले चले। बिल मगाओ चुकता कर ले। अब मुश्किल से गाडी पकड पाएगे।

पर जगन्नाथ ने जाने का कोई उत्साह नहीं दिखाया। बोला—मैं अपना पापी मुह किसीको नही दिखाऊगा। मैं यही मर जाऊगा।

विश्वनाथ ने इस आशा से बिल मगाकर पैसे दे दिए कि दो मिनट मे सब काम हो जाएगा और भैया अन्त तक चलने पर राजी हो जाएगे, पर बिल दे दिया गया, बिस्तर बाध लिया गया, यहा तक कि कुली

आ गए, होटल का नौकर बख्शीश के लिए आ गया, फिर भी जगन्नाथ ने चलने का नाम नहीं लिया। जब मामा जी ने अधैर्य होकर कहा कि अब तो बिल्कुल समय नहीं है, तब जगन्नाथ ने कहा—मैं उठ नहीं पा रहा हूं, मुझसे चला नहीं जा रहा है। मैं रास्ते में ही मर जाऊंगा और यों नहीं मरूंगा तो रेल की खिड़की से कूद पड़ूंगा। पितृहन्ता को जीने का कोई अधिकार नहीं है। आप लोग जाइए, मैं नहीं जा सकता

मामा जी की आंखें घड़ी पर लगी हुई थीं, वह बोले—भई, तुम्हारी माता जी परेशान हो रही होंगी। एक बार तो चले चलो। फिर चाहे लौट आना। बिल्कुल समय नहीं है। उठ खड़े होओ। हिम्मत करो

जगन्नाथ ने खड़े होने की कोशिश की पर वह लड़खड़ा कर गिरने को हुआ और यही रट लगाता रहा कि मैंने पिता जी की हत्या की है और मुझे जीने का अधिकार नहीं है।

मामा जी एकदम आपे से बाहर हो रहे थे। वह नाराज होकर बोले—भई, अच्छा तमाशा रहा। जो तुम इतने पितृ-भक्त हो तो उस समय तुमने ऐसा काम क्यों किया?

इसपर जगन्नाथ ने फिर उठने की कोशिश की, पर वह सफल नहीं रहा। तब उसने स्वयं ही विश्वनाथ को इशारे से बुलाया और उसके कान में कुछ कहा। तब वह दौड़कर उस होटल बैरा की तरफ गया जो बख्शीश के लिए खड़ा था। उसने मना किया, दोनों में कुछ बहस हुई और विश्वनाथ ने जल्दी कुछ रुपए दिए, तब जाकर वह लौटा तो उसके हाथ में एक अद्धा था, और एक गिलास। मामा जी यह सब देख रहे थे, पर वह कुछ बोले नहीं। क्योंकि वह किसी भी दाम पर गाड़ी पकड़ना चाहते थे, चाहे गाजियाबाद से ही पकड़नी पड़े। जगन्नाथ ने जल्दी-जल्दी शराब पी। उसके जर्द पड़े हुए चेहरे पर धीरे-धीरे ललाई आई। अब उसका चेहरा वैसा रुआंसा नहीं था। थोड़ी ही देर में वह बिल्कुल दूसरा आदमी हो गया। पर वह आदमी नहीं था जो रो और चीख रहा था। पीने पर अब भी अद्धे में कुछ बाकी रहता था। जगन्नाथ वह अद्धा और गिलास लेकर उठा और बोला—आप लोग जाइए। मेरा जाना नहीं हो सकता। रायसाहब कृष्णचरण का लड़का जगन्नाथ मर

गया है। मैं दूसरा आदमी हू। मै शराब के बिना जी नही सकता। मै जा नही सकता।

उसके कथन मे अन्तिमता का इतना जबदस्त पुट था कि मामा जी और विश्वनाथ समझ गए कि जाए तो इसे छोडकर ही जा सकते है नही तो आज जाना नही हो सकता। दोनो का आखो ही आखो मे इशारा हुआ, दोनो वाहर चले गए। विश्वनाथ सीधे तारघर चला गया, मामा जी कमरे मे लौटे, वोले—सुजाता दीदी को तार दे दिया गया। हम लोग तो तुमको लेकर ही जाएगे।

जगन्नाथ वह अद्धा खाली कर चुका था। अव उसने कुर्सी पर पहले से अच्छी तरह जमते हुए कहा—आप हमको लेकर ही जाएगे, इसका क्या मतलव है?

मामा जी वोले—इसका मतलव है कि दो दिन, चार दिन, दस दिन, महीना, दो महीना, जितना भी लग जाए, हम यहा रहेगे और तुमको लेकर ही चलेगे।

अव वह रोने-चीखने वाला, अपने को पापी वताने वाला जगन्नाथ विल्कुल पर्दे पर से हट चुका था। अव जो आदमी वैठा हुआ था, वह वडा गम्भीर, सुलझा हुआ और भारी-भरकम व्यक्तित्व का ऐश्वर्यशाली लगता था। वह वोला—मुझे लेकर ही चलेगे? यानी मेरी वीवी और वच्चो को भी लेकर चलेगे?

—तुम तो उन्हे पहले ही छोड चुके हो। तीन रात से घर नही गए हो, यदि मैं उसे तुम्हारा घर कह सकू।

वह सुलझा हुआ आदमी जो सामने वैठा था, वोला—चाहे मैं दो साल न जाऊ, पर वही मेरा घर है, क्योकि वहा मेरी वीवी और मेरे वाल-वच्चे रहते है, उन्हे मैं कैसे छोडू?

मामा जी को इस प्रकार तर्क की आशा नही थी, विश्वनाथ ने मूर्खतावश वह शराव पिला दी, तो यह दूसरा ही आदमी हो गया। वोले—अभी तो मैं केवल तुम्हे लेने आया हू। केवल तुम्हीको ले जाऊगा।

—इन तीन प्राणियो को नही, जो मुझपर निर्भर है?—कहकर

उसने मामा जी को घूर दिया।

मामा जी बोले—चाहो तो उन्हें कुछ रुपए दे जाओ, पर उनके यहाँ ले जाना कई कारणों से उचित नहीं है। मुझे और किसी से मतलब नहीं है पर सबसे बड़ा कारण यह है कि तुम्हारी माता जी को धक्का लगेगा और वह शायद इसे बर्दाश्त न कर पाएँ। वह बराबर रामसाहब से कहती थी कि तुम अलग भागे हो और सुहासी अलग भागी है। तुम दोनों के साथ-साथ भागने की बात मनगढ़न्त है।

वह गुस्सा हुआ आदमी एकाएक मुँह बनाकर बोला—मैं जानता हूँ, तुम सब लोग मेरी बुराई करते होंगे कि मैं एक भंगिन लेकर भागा, पर माफ करना मामा जी, उसे ठीक से कपड़े पहना दिए जाएँ और ठीक से खाना भर खाने को मिले तो भंगिन की वह छोकरी कम-से-कम हमारी मामी जी से अच्छी ही रहेगी।

मामा जी समझ गए कि शराब बोलने लगी है न कि जगन्नाथ, फिर भी उन्हें बुरा मालूम हुआ क्योंकि भीतर कुछ कुरेद रहा था, जिसके साथ जगन्नाथ के इस वक्तव्य का कहीं तारतम्य बैठ गया। वह कुछ नहीं बोले और अँधेरे के साथ विश्वनाथ के आने की प्रतीक्षा करने लगे। वह पछता रहे थे कि विश्वनाथ को न भेजकर खुद ही तार देने जाते तो ठीक रहता। तब कम-से-कम मामी पर कही हुई बात सुननी नहीं पड़ती जो दुर्भाग्य से सच्ची थी। यह मानना ही पड़ेगा कि जगन्नाथ ने सौन्दर्य ठीक से परखा था। उसमें कोई कसर नहीं थी। जगन्नाथ कहता जा रहा था—मैंने उसपर इतनी ज्यादती की जितनी कि कोई कर सकता है फिर भी उसने मुझे कभी कोई कड़ा शब्द नहीं कहा। मैं जेल पहुँच गया तो उसने अपने बाबूजी की खुशामद कर मेरी रिहाई कराई। कहा तो यही कि जमानत पर छुड़ाया है, पर मैं जानता था कि जमानत पर नहीं छूटा था, मुझे पन्द्रह रुपया घूस देना पड़ा था, जिसे वह नौकरी करके अपनी तनख्वाह से दे रही है। बोलो मामी जी तुम्हारे लिए यह करेंगी? मेरा ख्याल तो यह है कि यदि तुम खून के मामले में गिरफ्तार हो गए तो मामी जी मायके चली जाएँगी और तुम्हारा नाम कभी नहीं लेंगी।

जगन्नाथ ने उठकर पानी पीया, फिर बोला—पिता जी मर गए

तो बला से। वह समाज के नेता थे, छुआछूत के विरुद्ध लेक्चर देते थे। मैंने क्या ऐसी बुराई की कि आप मर गए ? मैंने बाकायदा शादी की है कोई रखैल नही रखी। फिर काहे को मर गए ? सुहासी गरीब घर की जरूर है, पर उसे ठीक से कपडे पहना दिए जाए

मामा जी बार-बार दरवाजे की तरफ देख रहे थे कि कब लावा की तरह गरम, जलते हुए, फफोले पैदा करते हुए इस भाषा से पिंड छूटे। सच तो है उन बच्चो का क्या दोष है, पर उन्हे खेलने के लिए सामग्री नही मिलती, खाने के लिए मिठाई नही मिलती, रहने के लिए बढिया जगह नही मिलती। तो क्या जगन्नाथ अब, जबकि उसका पिता मर गया है, जायदाद का हिस्सा मागेगा और खुल्लमखुल्ला उस भगिन के साथ रहेगा अपने पैतृक मकान मे ? नही, नही, यह तो बहुत ही खराब बात होगी। इनकी तो कोई बहन नही है, पर अपनी आफत आ जाएगी। लोग कहेगे, हाय, न जाने क्या-क्या कहेगे। रायसाहब को घसीटेंगे, मुझे घसीटेंगे और नतीजा यह है कि मेरी लडकियो की, जो कतई इस काबिल नही है कि अपनी शादी अपने-आप करें शादी नही होगी। जगन्नाथ उन्ही बातो को बार-बार दुहरा रहा था, पर विरोध न होने के कारण वह धीरे-धीरे उस नदी की तरह होता जा रहा था, जिसके बहाव के मार्ग मे कोई बाधा नही आती। बोलते-बोलते एकाएक वह जाकर मामा जी की खाट पर (बिस्तर तो बध चुका था) लम्बा हो गया और थोडी ही देर मे उसके खर्राटे सुनाई पडने लगे।

यह विश्वनाथ कर क्या रहा है ? इतनी देर हो गई, वह आता क्यो नहीं ? मेरी खाट भी छिन गई और आज रेल से जाने से रह गए सो अलग। मामा जी को बहुत बुरा लग रहा था। अब उन्हे ऐसा लग रहा था कि वह फजूल ही इस मामले मे पडे। विश्वनाथ आता, सुजाता दीदी आती, दोनो अपना मामला सुलझाते। वह जाकर विश्वनाथ की खाट पर लेट गए और उन्हे पता नही लगा कि कब वह सब चिन्ताओ से मुक्त करने वाली निद्रा देवी की गोद मे पहुच गए।

जब विश्वनाथ लम्बा तार देकर आया, तो उसने देखा कि दोनो सो रहे है और उसके लिए कोई जगह नही है। सोचा उनको जगाऊ, पर जगा-

कर क्या होता । गाडी छूट चुकी थी तार जा चुका था, अब केवल समस्या इतनी रह गई थी कि कहा सोया जाए ? होटल वालो से कहते तो वे एक चारपाई और दे जाते, पर एक तो सारा बिल दिया जा चुका और दूसरे चारपाई का अलग चार्ज होता, जो रात को रहने के चार्ज से अलग होता । तो क्या वह कुर्सी पर ही रात काटे ? वह भाई के बगल मे सो सकता था, पर हवा मे बुरी तरह शराब की बू सिमक रही थी । पिता जी मर गए, माता जी परेशान है, इसने जिस औरत को भगाया, उसकी चार दिन मे कोई खबर नही मिली और यह आदमी ऐसे सो रहा है, जैसे ससार मे न तो कोई दुख हो, न क्लेश हो, न कोई समस्या हो । उसे बडी घृणा हुई जैसे पैर के नीचे ताजी भाप देती हुई टट्टी आ गई हो और वहा पानी का अता-पता न हो । मा ने फजूल जिद की । उन्हे यह समझना चाहिए था कि उनका एक लडका मर गया है, पर उस हालत मे मा से यह कैसे कहा जाता ? वह यही समझती कि सम्पत्ति मे हिस्सा देना पडेगा, इसलिए मै ऐसा कह रहा हू । मा ने तो ऐसा नही कहा पर दूसरो ने कहा । लडको के निकट पिता की मृत्यु बडी बात नही थी । बडी बात थी कि इनने धन का इतना हिस्सा मिलेगा । तमाशा देखने वाले हर मौत को जो कि उनके घर मे नही होती, एक अत्यन्त साधारण घटना मानते है, जैसे उनसे किसीका सरोकार न हो, जैसे वह उसीको हुई हो और हो सकती हो, जिसे मौत आई है ।

विश्वनाथ ने बत्ती बुझा दी, दरवाजा बन्द कर लिया और वह कुर्सी पर ही सो गया, पर जब वह सवेरे उठा तो उसने देखा कि वह मामा जी के कमरे मे सोया हुआ है और मामा जी नाराज होकर कह रहे थे — तूने रात भर मुझे सोने नही दिया और अब सवेरे-सवेरे [illegible] भगा मारा । [illegible] का [illegible] अजीब ही रहा ।

विश्वनाथ हडबडाकर उठ बैठा और फिर कुर्सी पर जा बैठा । उसे भी अभी नींद नहीं आई थी, पर जिसके कारण उसकी नींद हराम हुई थी वह मजे से खर्राटे ले रहा था और ऐसा लग रहा था कि अभी बहुत देर तक वह सोता ही रहेगा । विश्वनाथ ने जमुहाई ली, सोचा कि [illegible] पर [illegible] भी [illegible] था और [illegible] भी । [illegible] देखकर [illegible]

गुस्सा आया कि दोनो इस तरह गैरजिम्मेदारी से सो रहे थे। उसे बडा क्रोध आया और उसने बारी-बारी से दोनो को बडे जोर से धक्का दिया और कहा—आठ पचास मे कालका चलती है, उसमे बैठ जाए, मुगलसराय से काशी जाने कितनी ही गाडिया और बसे जाती हैं। उसमे सवार हो लेगे। सीधी गाडी नही है तो न सही। आप लोग फौरन उठिए, मै चाय मगाता हू।

पर दोनो मे से किसीने हिलकर भी यह जाहिर नही किया कि उनके कान मे कुछ गया। वे पूर्ववत् खर्राटो की भाषा अलापते रहे। विश्वनाथ ने फिर भी चिल्ला-चिल्लाकर होटल व्वाय को बुलाया और चाय आ आर्डर दिया कि शायद इससे इनके कानो मे कुछ जू रेगे, पर ये ऐसे निकले कि इन्होने किसी प्रकार चू भी नही की। जगन्नाथ तो गैरजिम्मेदार है ही, पर मामा जी घर जाने के नाम पर भी नही उठे, इसका उसे बहुत आश्चर्य रहा। पर वह कुछ कर नही सकता था। वह मुह-हाथ धोकर घटनाओ की प्रतीक्षा करता रहा। जब चाय आ गई, तो उसने गुस्से के मारे किसी को आवाज नही दी और अकेले ही चाय पीता रहा। अब उसकी तबीयत हो रही थी कि आठ पचास की गाडी से वह खुद निकल जाए और इन लोगो को इसी प्रकार सोने दे। आखिर मामा जी जब पिता जी के मरने के बाद से घर के अभिभावक बन रहे है, तो यह उचित ही है कि वह इस मुसीबत को झेलें, ओढे, बिछाए, जैसा मन मे आए वैसा करे। मेरा काम मैंने कर दिया—भैया का पता लगाकर मामा जी के सिपुर्द कर दिया। अब मामा जी जाने और उनका काम जाने। बन्दा तो जाता है।

मामा जी जब उठे तो दिन काफी चढ चुका था। वह रात की बात भूल गए थे। सोचा, पता नही कैसे सोचा कि उस खाट पर विश्वनाथ सो रहा है और यह नही सोचा कि क्यो मै विश्वनाथ की खाट पर सो रहा हू। थोडी ही देर मे जब नीद अच्छी तरह खुली, तो उन्हे सारी बात याद आई। मुह का स्वाद कडवा था, दिल का भी। वह मामी जी वाली बात सचमुच उन्हे चुभ गई थी, पर विश्वनाथ कहा गया? अरे, यह तो सोचा ही नही? क्या विश्वनाथ रात को लौटा ही नही? कुछ

धुंधली याद आई कि रात को विश्वनाथ उनके साथ लेटा था, पर यह गलत होगा क्योंकि विश्वनाथ का तो कहीं पता ही नहीं है। गुसलखाना खोलकर देखा तो उसमें भी कोई नहीं था। अरे, तो वह लौटा ही नहीं? एक लड़का मिला, तो दूसरा गायब हो गया। सुजाता दीदी क्या कहेगी? उसके पास कई सौ रुपये थे, कहीं इस कारण दिल्ली के बदमाशों ने उसे मार-कूट तो नहीं डाला। मामा जी ने गुसलखाने से निकलकर जगन्नाथ को बड़े जोर से झकझोरा और कहा—अरे भाई, मैं दिल्ली का कुछ नहीं जानता हूं। रात से तुम्हारा भाई गायब है। उसे तार देने भेजा था, तब से नहीं लौटा और हम दोनों सो गए। कुछ पता ही नहीं लगा। उठो, जल्दी से उसकी तलाश करो।

जगन्नाथ अपनी नींद को पवित्र मानता था। इस नींद के पीछे उसने पकी-पकाई खिचड़ी की देगची पर लात मार दी थी। फिर भी भाई के खो जाने के नाम से वह चौंककर उठ बैठा और खीजकर मामा जी को बिना देखे ही बोला—गायब हो गया? वह कोई दुधमुंहा बच्चा थोड़े ही है। कल मजिस्ट्रेट बनेगा, जिले का मालिक। —कहकर उसे एकाएक जैसे कुछ याद आ गया, बोला—हां ठीक-ठीक याद आ रहा है। वह नहीं लौटा तो मेरी खाट पर कौन सोया था? मुझे बड़ी गर्मी लगी, इसलिए मैंने उसे खाट से धक्का देकर उतार दिया। कौन था, क्या था, यह तो मालूम नहीं क्योंकि फौरन ही नींद ने घेर लिया।

मामा जी को यह लांछन बुरा लगा। वह समझे कि मुझे कह रहा है बोले—मुझे कुछ याद है, मैं विश्वनाथ के बिस्तरे पर लेट गया। तुम्हारे पास कौन लेटा होगा। हां, मेरे पास विश्वनाथ लेटा, ऐसा मुझे भ्रम हुआ था पर वह तो भ्रम था, क्योंकि वह होता तो गया कहां?

जगन्नाथ ने चमककर मामा जी का मुंह देखा, बोला—हां, आपने पहली बार अक्लमन्दी की कही कि था तो गया कहां?

दोनों में सलाह हुई और दोनों चिन्तित हो गए। जगन्नाथ अपने मन में यह विचार आने नहीं देना चाहता था, पर एक बार यह विचार [illegible] लेकिन मन के एक दूर कोने में कौंध गया कि भाई को गुण्डों ने मार दिया तो जायदाद उसके हिस्से में आ गई। बोला—वह कहीं जा [illegible]

सकता। कही शौकीन तो नही है कि विस्तरे मे जगह न देखकर कही ऐसी जगह सोने को चला गया हो जहा हमेशा रात-अतिथि का स्वागत होता है ?

इसी प्रकार बातचीत हो रही थी कि होटल का नौकर चाय पूछने आया और उसने बताया कि छोटे साहब आठ पचास की गाडी से बनारस गए। आप दोनो के लिए कहा है कि आप लोग रात की गाडी से आ जाए।

सुनकर दोनो एक-दूसरे का मुह ताकने लगे। मामा जी बोले—जब रहना ही पड रहा है तो मुझे दिल्ली दिखा दो। हम लोग रात को लौट जाएगे।—साथ ही लहजा बदलकर कहा—हम कल पहुच जाएगे, गनीमत है। पर यह चला कैसे गया ?

जगन्नाथ को यह बहुत ही बुरा लगा कि मामा जी ने यह ध्रुव सत्य करके मान लिया कि वह उनके साथ जा ही रहा है। एक मिनट पहले जब उसको यह सन्देह हुआ था कि शायद गुण्डो ने भाई को मार डाला है और वही राय साहब की पूरी जायदाद का मालिक हो गया है, तो उसने घर लौटने का निश्चय किया था यानी निश्चय उसके मन मे कौंध-सा गया था, पर अब जब कि यह मालूम हो चुका था कि भाई गाडी पर सवार हो चुका है और अब मीलो निकल गया है, तो जल्दी मे इस प्रकार किसी निश्चय पर पहुचने की आवश्यकता नही थी। कुछ लोग होते हैं जो मुह के सामने शराब का गिलास पाते ही गट-गट पी जाते हैं, पर वह हौले-हौले जुडा-जुडाकर पीना पसन्द करता था। शराब के सम्बन्ध मे उसने जो नीति रखी थी, वही जीवन के सम्बन्ध मे भी रखी थी। जीवन जायका लेकर, चटखारे ले-लेकर जीने के लिए है न कि गटक जाने के लिए। उसने कहा—पहले चाय-वाय तो मगाओ, फिर और बाते होगी।

इसी समय उसका ध्यान चाय के उन बर्तनो की ओर गया जिन्हे होटल का नौकर उठा रहा था। उसने देखा कि उसमे तीन प्याले हैं। बडा आश्चर्य हुआ। नौकर से बोला—तीन प्याले क्यो है ! क्या और कोई था ?

नौकर ने कहा—उन्होने आप लोगो के लिए भी चाय मगाई थी,

धुधली याद आई कि रात को विश्वनाथ उनके साथ लेटा था, पर यह गलत होगा क्योंकि विश्वनाथ का तो कही पता ही नही है। गुसलखाना खोलकर देखा तो उसमे भी कोई नही था। अरे, तो वह लौटा ही नही ? एक लडका मिला, तो दूसरा गायब हो गया। सुजाता दीदी क्या कहेगी ? उसके पास कई सौ रुपये थे, कही इस कारण दिल्ली के बदमाशो ने उसे मार-मूर तो नही डाला। मामा जी ने गुसलखाने से निकलकर जगन्नाथ को बडे जोर से झकझोरा और कहा—अरे भाई, मै दिल्ली का कुछ नही जानता हू। रात से तुम्हारा भाई गायब है। उसे तार देने भेजा था, तब से नही लौटा और हम दोनो सो गए। कुछ पता ही नही लगा। उठो, जल्दी से उसकी तलाश करो।

जगन्नाथ अपनी नीद को पवित्र मानता था। इस नीद के पीछे उसने पकी-पकाई खिचडी की देगची पर लात मार दी थी। फिर भी भाई के खो जाने के नाम से वह चौककर उठ बैठा और खीजकर मामा जी को बिना देखे ही बोला—गायब हो गया ? वह कोई दुधमुहा बच्चा थोडे ही है। कल मजिस्ट्रेट बनेगा, जिले का मालिक। —कहकर उसे एका एक जैसे कुछ याद आ गया, बोला—हा ठीक-ठीक याद आ रहा है। वह नही लौटा तो मेरी खाट पर कौन सोया था ? मुझे बडी गर्मी लगी, इसलिए मैने उसे खाट से धक्का देकर उतार दिया। कौन था, क्या था, यह तो मालूम नही क्योकि फौरन ही नीद ने घेर लिया।

मामा जी को यह लाछन बुरा लगा। वह समझे कि मुझे कह रहा है, बोले—मुझे खूब याद है, मै विश्वनाथ के बिस्तरे पर लेट गया। तुम्हारे पास कौन लेटा होगा। हा, मेरे पास विश्वनाथ लेटा, ऐसा मुझे भ्रम हुआ था, पर यह तो भ्रम था, क्योकि वह होता तो गया कहा ?

जगन्नाथ ने अचकचाकर मामा जी का मुह देखा, बोला—हा, आपने पहली बार अकलमन्दी की कही कि था तो गया कहा ?

दोनो मे सलाह हुई और दोनो चिन्तित हो गए। जगन्नाथ अपने मन मे यह विचार आने नही देना चाहता था, पर एक बार यह विचार मानसिक गगन के एक दूर कोने मे कौध गया कि भाई को गुण्डो ने मार दिया तो जायदाद अपने हिस्से मे आ गई। बोला—वह कही जा नहीं

सकता। कही शौकीन तो नही है कि बिस्तरे मे जगह न देखकर कही ऐसी जगह सोने को चला गया हो जहा हमेशा रात-अतिथि का स्वागत होता है ?

इसी प्रकार बातचीत हो रही थी कि होटल का नौकर चाय पूछने आया और उसने बताया कि छोटे साहब आठ पचास की गाडी से बनारस गए। आप दोनो के लिए कहा है कि आप लोग रात की गाडी से आ जाए।

सुनकर दोनो एक-दूसरे का मुह ताकने लगे। मामा जी बोले—जब रहना ही पड रहा है तो मुझे दिल्ली दिखा दो। हम लोग रात को लौट जाएगे।—साथ ही लहजा बदलकर कहा—हम कल पहुच जाएगे, गनीमत है। पर यह चला कैसे गया ?

जगन्नाथ को यह बहुत ही बुरा लगा कि मामा जी ने यह ध्रुव सत्य करके मान लिया कि वह उनके साथ जा ही रहा है। एक मिनट पहले जब उसको यह सन्देह हुआ था कि शायद गुण्डो ने भाई को मार डाला है और वही राय साहब की पूरी जायदाद का मालिक हो गया है, तो उसने घर लौटने का निश्चय किया था यानी निश्चय उसके मन मे कौंध-सा गया था, पर अब जब कि यह मालूम हो चुका था कि भाई गाडी पर सवार हो चुका है और अब मीलो निकल गया है, तो जल्दी मे इस प्रकार किसी निश्चय पर पहुचने की आवश्यकता नही थी। कुछ लोग होते है जो मुह के सामने शराब का गिलास पाते ही गट-गट पी जाते हैं, पर वह हौले-हौले जुडा-जुडाकर पीना पसन्द करता था। शराब के सम्बन्ध मे उसने जो नीति रखी थी, वही जीवन के सम्बन्ध मे भी रखी थी। जीवन जायका लेकर, चटखारे ले-लेकर जीने के लिए है न कि गटक जाने के लिए। उसने कहा—पहले चाय-वाय तो मगाओ, फिर और बाते होगी।

इसी समय उसका ध्यान चाय के उन बर्तनो की ओर गया जिन्हे होटल का नौकर उठा रहा था। उसने देखा कि उसमे तीन प्याले हैं। बडा आश्चर्य हुआ। नौकर से बोला—तीन प्याले क्यो है ! क्या और कोई था ?

नौकर ने कहा—उन्होने आप लोगो के लिए भी चाय मगाई थी,

पर वहुत चिल्ला-चिल्ली करने पर भी आप लोग टम-से-मस नही हुए। इसलिए वह नाराज होकर आज शाम तक का विल चुका कर चले गए। पहले तो कुछ लिखकर दे रहे थे, फिर लिखा हुआ फाड डाला और मुझे सदेश देकर चले गए। आप लोगो के लिए कुछ लाऊ ?

मामा जी को यह जानकर खुशी हुई कि विश्वनाथ शाम तक का विल चुका गया है, वोले—शाम तक के खाने का भी विल दे गए ?

नौकर वर्तन उठा चुका था, वोला—नही, सिर्फ सवेरे की चाय तक के पैसे मैनेजर साहव को दिए और अपना सामान लेकर चले गए।

जगन्नाथ चौका, उसने अपने कपडो की तरफ देखा तो उसे याद हो आया कि खैरियत है कि ये कपडे मामा जी के है, यानी मामा जी से और भी कपडे मिल सकते है। पुराने ढर्रे के आदमी है, एक रात के सफर मे भी चार-छ जोडी कपडे लेकर चलते होगे। विश्वनाथ की तरह नए युग के फटीचर नही है कि एक चेज लिया और साहव सफर पर चल पडे। वोला—पहले गरम चाय लाओ, खूव गरम हो, फिर निपट कर ठीक से चाय पीऊगा। मक्खन, टोस्ट, फल का रस, विस्कुट, जैम-जैली, अण्डे जो कुछ भी हो, लेते आना, वडी भूख लगी है। दवा पीने से नीद खूव आई—कहकर उसने नौकर को आख मारी।

मामा जी परिस्थिति समझ चुके थे। विश्वनाथ उन्हे अच्छी मुसीवत के दलदल मे फसा गया। जो चला ही गया, तो रुपए क्यो लेता गया ? अव अपनी अन्टी से खर्च करना पडेगा और जैसा कि होता है, ये पैसे वापस नही मिलने के। शर्मा-शर्मी मे मागेगे नही और नतीजा यह होगा कि कोई देगा भी नही। रुआसे होकर वोले, जैसे उनको किसी ने तमाचा मारा हो—विश्वनाथ के पास ही सारी रकम थी, अव क्या होगा ?

सुनकर होटल का नौकर ठहर गया, क्योकि वह एक तजर्वेकार नौकर के नाते जानता था कि ऐसे लोग वुरे होते हैं, जो आते तो एक साथ है, पर अलग-अलग जाते है। ऐसा एक किस्सा हाल ही मे हुआ था कि अन्तिम आदमी ने पहले वालो का विल देने से इन्कार किया, कहा—उनसे तो यो ही रेल मे जान-पहचान हुई थी। कमरे का किराया कम देना पडेगा, इस नाते एक कमरे मे ठहर गया था, मुझे उनसे कोई

वास्ता नही। मैं अपना हिस्सा देने से इन्कार नही करता।

जगन्नाथ ने भाप लिया था कि मामा जी के पास अलग पैसे है और वह किसीको पता नही होने देते कि पैसे कहा है। पर उसने यह अनुमान कर लिया था कि कही जेब मे सेपटीपिन से टका हुआ या बन्द होगा क्योकि उसने उन्हे रात के समय एक सेफ्टीपिन बहुत सावधानी से रखते हुए देखा था। मामा जी के इन्कार से वह विचलित नही हुआ, बोला—आपके पास नही हैं तो मेरे पास तो रुपये दो रुपये है। चाय तो मैं पीऊगा ही। इसके बिना मेरी तबीयत साफ नही होती। आप तो ऐसे ही काम चला लेते होगे।—कहकर उसने नौकर की तरफ एक अठन्नी फेकते हुए कहा—मेरे लिए तो एक प्याली खूब गरम चाय ले आ और जो-जो चीज़ मैं मागूगा, उसके नकद दाम दूगा।

मामा जी को जगन्नाथ के ये वाक्य बुरे लगे, विशेषकर केवल एक प्याली चाय का आर्डर देना। पर वह तो अपनी बातो से ही बध गए थे, बोले—अच्छी बात है मैं बाथरूम जाता हू, तुम चाय-वाय पीकर तैयार हो लो।

मामा जी भीतर चले गए। जब वह बाहर आए तो जगन्नाथ चाय पी चुका था और अब एक गज़ल गुनगुना रहा था—

कुछ बात ऐसी है कि चुप हू,
वर्ना क्या बात कर नही आती।
कोई उम्मीद बर नही आती।

उसने मामा जी से आख नही मिलाई। मामा जी ने कहने को तो आवेश मे कह दिया था कि विश्वनाथ सब पैसे ले गया, पर अब वह पछता रहे थे, क्योकि जब गहराई से सोचा तो इस झूठ का निभना मुश्किल था। जो पैसे नही है तो दिन-भर खाएगे क्या? और रेल वाले कोई ससुर नही लगते है कि दोनो को मुफ्त मे काशी तक ले जाएगे। कुछ समझ मे नही आ रहा था कि कैसे अपने ही झूठ के चगुल से निकला जाए, क्योकि दूसरो के झूठ के पजे से निकलना तो आसान होता है, पर अपना झूठ तो ऐसा होता है कि मर्ज़ बढता ही जाता है, ज्यो-ज्यो दवा की जाती है। कहा तो परिवार की पवित्रता का झण्डा कन्धे पर लेकर आए

थे, जगन्नाथ को लौटाने और कहा अपने ही बनाए हुए ऐसे चौकट मे उलझ गए कि जगन्नाथ ऐसे पतित और दुश्चरित्र मेढक को भी उनकी सूड पर कूदने-फादने का मौका मिल गया। पर ममझ मे नही आ रहा था कि कैसे क्या हो, इतने मे जगन्नाथ ने अदालत मे जिस तरह फैसला सुनाया जाता है, उस तरह से अन्तिमता के लहजे के साथ कहा—मै तो चलता हू, आपके साथ मुझे भूखो नही मरना है।

मामा जी को आश्चर्य हुआ, आश्चर्य ही नही हुआ, एक धक्का-सा लगा कि इसने इतनी ही देर मे अपना विचार बदल दिया। उन्हे शक हुआ और उन्होने अपने सूटकेस की तरफ देखा तो उसके ताले का पता नही था। वह घबडाकर पागल की तरह सूटकेस की तरफ लपके तो देखा कि कुण्डा समेत ताला गायब है। बहुत अच्छी तरह याद पडता है कि बाथरूम मे जाते समय कनखी से ताला देख लिया था और फिर अण्टी मे चाबी है यह टटोल कर तब वह भीतर बाथरूम मे गए थे और अब यहा ताला ही गायब है। बोले—अरे, इसका तो ताला ही गायब है।

जगन्नाथ ने इस कथन की ओर पहले तो ध्यान नही दिया, यानी यह दिखाया कि ऐसी कोई बात नही जो ध्यान देने योग्य हो, पर जब उसे लगा कि उसे सम्बोधित करके ही यह वक्तव्य दिया गया है तो वह बोला—ऐसा कई बार हो जाता है। कुली लोग बक्सो को इतने जोर से घसीटते हैं कि ताला ही उड जाता है।

कह कर वह उठने को हुआ। मामा जी घबडा गए कि विश्वनाथ तो अब तक गाज़ियाबाद से भी आगे निकल चुका होगा और यहा इस बेईमान और चोर के हवाले फसा गया, बोले—बाथरूम मे जाते समय मैने देखा था कि इसमे ताला लगा था।—कहकर उन्होने उन्हीके कपडे पहने हुए जगन्नाथ को बडे ज़ोर से घूरा।

पर जगन्नाथ इससे कतई विचलित नही हुआ, बोला—आपको तो सफर का तजर्बा नही है। यहा तो भुक्तभोगी हैं। यह गनीमत समझिए कि सूटकेस मौजूद है, नही तो दिल्ली के स्टेशन से माल ऐसे गायब होता है जैसे कि गधे के सर से सीग।

मामा जी ने पुनरावृत्ति करते हुए रुआसे स्वर मे कहा—मैने तो

अभी ताला अपनी आखो से देखा था ।

जगन्नाथ बोला—ऐसा ही लगता है। अच्छा, यह बताइए, सूटकेस मे क्या-क्या चीज थी ?

जगन्नाथ ने निर्लज्जता के साथ कहा—यदि आपकी सारी चीजे सूटकेस मे मिल गई, तब तो आप मानेगे कि कुलियो ने सूटकेस घसीटते हुए ताला तोड डाला ?

मामा जी ने हामी भर दी, पर वह समझ गए कि उन्हे किसी-न-किसी प्रकार के जाल मे घसीटा जा रहा है। बोले—यह-यह चीज मौजूद थी ।

कहकर एक फेहरिस्त गिना दी, तो जगन्नाथ ने सूटकेस खोलकर सारी चीजे निकाल दी, फिर बोला—अब कहिए !

मामा जी पहले कह चुके थे कि मेरे पास कुछ रुपया नही है, फिर भी अब शून्यविन्दु आया जानकर वह छलाग लगा गए और बोले—इसमे कुछ रुपये भी थे !—कहकर वह सूटकेस खोलने लगे, पर रुपये कही नही मिले । बोले—इसमे कुछ रुपये थे ।

—अभी तो आपने कहा कि आपके पास कुछ रुपया नही है ?

मामा जी अब दूसरी रौ पर चल चुके थे, बोले—मेरा मतलब यह थोडे ही था कि कुछ नही है। दस-बीस रुपये तो पडे होते ही हैं जो मौके-बेमौके काम आते रहते है ।

जगन्नाथ शठता की हसी हसते हुए बोला—दस-बीस ही थे न ?

मामा जी भी चूकने वाले नही थे बोले—लगभग सौ रुपये थे । मुझे और तुम्हे जाना भी तो है। इसीके लिए तो आए थे। विश्वनाथ ने बडा धोखा किया कि हम लोगो को सोता छोडकर चला गया ।

जगन्नाथ बोला—अब क्या होगा ?

मामा जी ने एकदम से हमला करते हुए कहा—रुपये तुमने लिए है, तुम्हारी आदत बहुत खराब हो गई है। तुम्हे शरम नही आती कि तुम्हारे पिता जी इतने बडे आदमी थे, तुम्हारी माता जी इतनी सीधी हैं और तुम्हारा भाई आई० ए० एस० होने जा रहा है और तुम इस तरह हो। लाओ, रुपये निकालो ।

जगन्नाथ इस लाछन से बिलकुल नाराज नही हुआ, बोला—देखिए, आप शरीफ है इसलिए कि आपने जिन नौकरानियो आदि के साथ व्यभिचार किया, आपने उनसे शादी नही की, आपकी शराफत का यह नमूना है कि बहनोई मर गया तो बहन के खर्च पर दिल्ली की सैर करने आए है, आपकी शराफत यह है कि आपने अभी कहा कि मेरे पास रुपये नही है, क्योकि आपको डर था कि मै आपके पैसो से डबल रोटी, अण्डा, मक्खन और दोपहर को अण्डा खाऊगा, और हम चोर, बेईमान, रजील इसलिए हो गए कि हमने जिस लडकी से इश्क किया उससे शादी कर ली और अब मैने आपको झूठा साबित करने के लिए रुपये निकाल लिए तो आप झूठे साबित होकर मुझे चोर कह रहे हैं।—कहकर उसने अप्रत्याशित रूप से वह मनीबैग निकाल दिया जो उसने निकाला था, बोला—इसमे एक सौ इक्कीस रुपये है। यह आपका मनीबैग तो होगा नही, क्योकि इसमे तो दस-बीस नहीं, एक सौ इक्कीस रुपये है।

मामा जी ने उछलते हुए मनीबैग ले लेने की कोशिश की, पर जगन्नाथ ने झट से मदारी की तरह फुर्ती से मनीबैग खीच लिया। मामा जी बोले—देखो, भीतर मेरा नाम लिखा होगा।

—नाम नही लिखा है। —जगन्नाथ ने बडे आत्मविश्वास के साथ कहा।

मामा जी उत्तेजित होकर बोले—तो तुमने वह हिस्सा ही फाड डाला होगा। लाओ, मुझे रुपए लाओ, मै वापस जाता हू। तुम जाओ या न जाओ।

जगन्नाथ समझ गया कि मामा जी बहुत क्रुद्ध हो चुके है, बोला—अच्छा, समझौता कर लीजिए, झगडा करने मे कोई फायदा नही।

—समझौता कैसा?

जगन्नाथ सिर खुजलाकर बोला—जब दो शरीफ आदमी लडते है तो वे समझौता कर लेते है। शरीफ और रजील मे यही तो फर्क है। एक बात बताइए कि आप इतना कष्ट करके मुझसे लडने तो नही आए। लाइए हम लोग समझौता कर ले, जैसा कि शरीफो के नाते करना चाहिए। शरीफ आदमी आखिर तक झगडा नही करते।

मामा जी समझ गए कि फिर उनके लिए कोई जाल प्रस्तुत हो रहा है, नाराज होकर वोले—समझौता कैसा ? मेरी थैली लाओ।

—समझौता किसे कहते है, आप जानते है। आप आधी दूर आए, मैं आधी दूर जाता हू, वल्कि आपका कुछ फायदा ही कराता हू। साठ रुपये मेरे हुए और एकसठ रुपये आपके।

मामा जी इसपर वहुत नाराज हुए, वोले—तू वचपन से ही अपने परिवार को कष्ट देता रहा है। तेरी नालायकियो का कोई अन्त नही है। मैं जाकर कह दूगा कि तू मर गया। अव तुझसे हम लोगो का कोई वास्ता नही।

जगन्नाथ उठने लगा, वोला—यही वात है तो मैं जाता हू, यो मैं चाहता था कि समझौता हो जाता, तो कम से कम शाम तक तो मिल वैठते। मैं जैसा हू, वह आपसे छिपा नही है और आप जैसे है, वह भी मुझसे छिपा नही है। कुछ आपकी वाते तो यहा आकर खुली। सुहासिनी की मा से आपका ताल्लुक था, सम्भव है, सुहासिनी आपकी ही वेटी हो!

मामा जी इस प्रकार के लाछन से वहुत रुष्ट हुए, वोले—तुम हर एक को अपनी तरह समझते हो, यह वहुत बुरी वात है। लाओ रुपया लाओ, मैं जो भी गाडी पूरव जाती होगी, उसीमे सवार हो जाऊगा।

पर जगन्नाथ ने नही सुना, उसने कमरे से वाहर पैर रखना चाहा इसपर मामा जी ने लपककर उसे पकड लिया, वोले - मैं पुलिस वुलाऊगा, तुम इस तरह नही जा सकते। तुमने समझ क्या रक्खा है ?

जगन्नाथ इसपर फिर से कुर्सी पर वैठ गया, वोला—मै तो समझौता व सहअस्तित्व मे विश्वास करता हू। आप ही एक पर एक ज्यादती करते जा रहे है। पहली वात तो यह है कि आपके चोर कहने से ही मैं चोर नही हो जाता। फिर यह भी तो सोचिए कि आप माता जी की मानसिक शान्ति के लिए मुझे लिवाने आए थे न कि मुझे गिरफ्तार करवाने और एक नौजवान आई० ए० एस० अफसर का मुह काला करवाने। मुझे डर है कि यदि आप मुझपर चोरी लगाएगे तो उस आई० ए० एस० अफसर को अपनी नेकनामी का ख्याल रखकर भरी अदालत मे यह कहना पडेगा कि इस सूटकेस का मालिक मैं ही हू। इसलिए ताला

तोडने या रुपया लेने का कोई प्रश्न ही नही उठेगा। आप शायद समझ गए होगे कि मैं क्या कहना चाहता हू। सोच लीजिए, पुलिस बुलाएगे, झझट करेंगे तो रुपया तो एक भी नही मिलेगा, वह तो मालखाने मे जमा हो जाएगा, आपको काशी से तार देकर रुपये मगवाने पडेंगे, तब आप लौट पाएगे। यो समझौता कर लीजिए तो आपको मुफ्त मे एकमठ रुपये मिल रहे है, जिनमे आप दिल्ली की सैर करने के बाद काशी लौट सकते हैं। बहनोई के पैसे से तो आप फर्स्ट क्लास मे आए हो, पर अपने पैसो से तो तीसरे दर्जे मे जाएगे न ? फिर क्या चिन्ता ?

मामा जी समझ गए थे कि जाल से निकलने का कोई मौका नही है, फिर भी उनको समझौता शब्द पर बडा गुस्सा आया, बोले—समझौता कैसा ? रुपये तो मेरे है, समझौता यही क्या कम है कि मैं रुपये ले लू और तुझे जेलखाना न भेजू।

जगन्नाथ फिर उठ खडा हुआ और अबकि उसने शायद यह दिखाने के लिए कि वह किसी हद तक जाने को तैयार है, आस्तीन चढा ली, उस कमीज़ की जो मामा जी की थी।

मामा जी यो तो पुलिस की धमकी दे रहे थे, पर पुलिस से वह घबडाते थे और हाथापाई, विशेषकर इस प्रदेश मे, तो उनके लिए अकल्पनीय थी। वह एक क्षण तक हतबुद्ध से हो गए और समझ नही पाए कि क्या करें। विश्वनाथ को कोसने से काम नही चलने का था। इस समय तो फौरन कुछ फैसला करना जरूरी था। वह समझ चुके थे कि वह कुछ कर नही सकते थे यानी जो कुछ कर सकते थे, उससे समस्या सुलझने के बजाय उलझ जाती और विश्वनाथ और दीदी के सामने मुह दिखाने लायक नही रह जाते। एकाएक नरम पडकर बोले—अच्छा साठ रुपये लो और पिण्ड छोडो।

जगन्नाथ ने फौरन साठ रुपये गिनकर रख लिए और मनीबैग तथा बाकी रुपये मामा जी को देकर जगन्नाथ बोला—लो मै जाता हू। मुझे ड्यूटी मे जाना है। मामा जी को अब याद आया कि वह किस कार्य के लिए आए थे और वह कार्य किस प्रकार बनते-बनते रह गया था। यह तो ऐसे था जैसे माल से भरा जहाज आकर बिल्कुल किनारे पर डूब जाए।

विश्वनाथ को क्या कहेगे ? दीदी को क्या कहेगे ? किस तरह साठ रुपये गए, इसकी वात तो अपनी वीवी को भी नही कह सकते, क्योकि वह वर्षों चिढाएगी । यह खून का घूट तो पी ही जाना पडेगा । वोले—अव तो तुम्हारी आत्मा शान्त हो गई । अव जल्दी क्यो करते हो, अक्ल की वात करो । एक दफे मै तुमको तुम्हारी मा के सामने पहुचा दू, उसके बाद फिर मेरा कोई कर्तव्य नही रहता । डरो मत, मै तुम्हे अपने पैसे से ही ले जाऊगा, दिन-भर खाना-पीना भी होगा । हा, यो दूसरे दर्जे मे जाते, अव तीसरे दर्जे मे जाएगे । सो तुम लोगो का कल्याण हो तो मेरा भी कल्याण है ।

पर जगन्नाथ ने स्पष्ट कह दिया—मै जा नही सकता । विश्वनाथ खामख्वाह चला गया । गलती की या सही काम किया, मुझे यहा का सारा कारोवार चुकता करने के लिए फौरन एक हजार रुपया चाहिए, तभी मै जा सकता हू ।

मामा जी चाहते तो वहुत थे कि इसे लिवाकर दीदी के सामने पेश कर दे, पर वह समझ गए कि अभी यह नही हो सकता, इसलिए उन्होने कहा—अच्छी वात है । तुम सारी वाते एक पत्र मे लिख दो, मै विश्वनाथ को दे दूगा । वह मन होगा, रुपया लेकर खुद आएगा, नही तो रुपये भेज देगा ।

जगन्नाथ साठ रुपये लेकर और मामा जी के कपडे पहनकर, जैसा कि वह रात से पहने हुए था, वहा से निकल पडा और सीधे एक ताडीखाने मे पहुचा । उसने कितना पीया इसका उसे कुछ पता नही । जव वह अगले दिन दिन चढे जगा तो उसने अपने को एक पेड के नीचे लेटा हुआ पाया । उसकी जेव मे एक रुपया था, जिसे उसने जान-वूझकर रखा था, गायव था, पर उसके जूतो के अन्दर उसके रुपये थे । उसने कौन रुपये कमाये थे । वह खूब हसा कि चोर को एक रुपये ने सन्तोष करना पडा ।

९

पोस्टमैन की आहट पाकर ही नीरा दौडी, और जो भी पत्र मिले सबको उसने अपनी साडी मे छिपा लिया। वह पहचान गई थी कि एक पत्र सुरेश के यहा से आया है। डाक्टर माथुर कालेज जा चुके थे इसलिए उसने दरवाजा बन्द कर लिया। कुछ देर तक दरवाजे के पास खडी होकर सुनती रही कि किसीने देखा तो नही कि उसने सारे पत्र ले लिए। वह तो क्या देखेगी, पर इला से डर लगता है। पर खैरियत है कि वह चुडैल भी इस समय नहीं है।

उसने दरवाजे के सामने एक कुर्सी अडा दी और चारो तरफ फिर देखकर सुरेश का पत्र खोलने लगी। इधर से जो पत्र सुरेश को जाते थे। वह उनका कुछ सुराग नही पाती थी, पर कुछ दिनो से वह उधर से आने वाले पत्रो की टोह मे रहने लगी थी। यो तो उसने डाक्टर माथुर के मन पर पूरी तरह विजय प्राप्त कर ली थी, अब वह भूलकर भी सौत जया या उसकी पुत्री इला की तरफ देखते नही थे, यद्यपि उस बुढिया ने, हा-हा-हा-हा, इधर किस प्रकार शूर्पणखा की तरह सजना शुरू किया था।

पत्र बडी कठिनाई से खुला। वह चाहती थी कि कोई ऐसा लिखित प्रमाण हाथ लगे जिससे डाक्टर माथुर को मजबूर किया जाए कि वह इन दोनो को घर से निकाल बाहर करे और हमेशा के लिए काटा दूर हो। वह सरसरी निगाह से पत्र पढ गई, पर उसमे कोई भी बात ऐसी नही थी जिसकी व्याख्या वाछित ढग से की जा सके। हा, अरे, यह तो सूझा ही नही, इस पत्र मे तो वही बात है जो वह चाहती है और इसके लिए डाक्टर माथुर की सहायता की आवश्यकता नही है। सुरेश ने खुद ही लिखा है कि मुझे लखनऊ मे नौकरी मिली है, वेतन कानपुर से कम है, पर स्वतन्त्रता तो मिलेगी। जब से यहा आया हू बिल्कुल परतन्त्र हो गया हू। उठते-बैठते ससुर साहब की हा-मे-हा मिलाना पडता है। उनकी अनुपस्थिति मे उनके मेहमानो के साथ, जिनकी तादाद बहुत होती है, बेकार मे घण्टो बातें करनी पडती हैं, उन्हे चाय पिलानी पडती है। ससुर साहब स्वय जब होते है तब भी इन लोगो से ऊबकर 'मैं आता हू' कहकर भीतर

चले जाते हैं, तब उनको बहलाना पडता है।

सुरेश ने लिखा था कि अगले रविवार को मै पहली गाडी से, रेल या बस जो भी मिले, लखनऊ जा रहा हू और वहा मकान न मिले तो कमरा ढूढ ही लूगा और सोमवार को नई नौकरी ज्वाइन कर लूगा। मै वहा पहुचते ही पत्र दूगा और तुम इला को लेकर आ जाना। हमे कम से कम दो कमरे चाहिए, पर एक कमरे मे भी गुजर कर लूगा, क्योकि शिप्रा को तब तक यही छोड दूगा। मेरा पत्र पाते ही तुम आ जाना। बिस्तरा आदि बाधना शुरू कर दो।

यहा तक पढकर नीरा को कुछ खटका-सा हुआ, कही यह बिस्तरा भी कोड वर्ड तो नही है ? शायद मा-बेटे ने मिलकर षड्यन्त्र किया हो कि घर की जितनी भी कीमती चीज़े हैं, सब इस बीच बटोर ली जाए, पत्र का शायद यही आशय है। यो तो सारी चीज़ो को ताले के अन्दर रख दिया गया है, बस केवल सौत की बहुत निजी चीज़े ही उसके कमरे मे हैं। रहा यह कि कोई गुलदान या पुस्तक या ऐसी कोई छोटी-मोटी चीज इन लोगो ने पहले ही उडा ली हो और उन्हे बक्स मे बन्द कर रखा हो तो पता नही।

सुरेश ने आगे लिखा था—तुम्हे यह सुनकर खुशी होगी कि शिप्रा के प्रोत्साहन के बिना मै हाथ-पैर न मारता या मारता भी तो इतनी जल्दी न करता। इस कारण वह सब तरह से सहयोग देने को तैयार है। वह कहती है कि हर शनिवार रात को तुम आ जाया करो और फिर सोम-वार सवेरे की गाडी से चले जाया करो। ऐसा तब तक करो जब तक कि कोई मकान न मिल जाए। इस तरह खर्च भी बचेगा और यहा कद्र भी बढेगी।

नीरा पढती जाती थी पर उसकी समझ मे कुछ भी नही आ रहा था कि समस्या क्या है। बस, शिप्रा की यह तारीफ उसे अच्छी नहीं लग रही थी। पता नही कैसे उसे यह लग रहा था कि शिप्रा की तारीफ मे उसके प्रति भर्त्सना अन्तर्निहित है। सुरेश के प्रति विद्वेष का कोई कारण नही था, पर उसे कुछ ऐसा लग रहा था कि सुरेश के साथ शादी न होकर उसकी बाप डाक्टर माथुर से शादी हुई, इसमे जैसे कही पर सुरेश की ही

बदमाशी है। उसने स्वय जान-बूझकर, बल्कि डाक्टर माथुर को मजबूर कर, उनसे शादी की थी, पर । आगे वह सोच नही सकी।

पत्र के अगले हिस्से मे उसे कोई रस नही आया, बस यही मालूम पडा कि जिस बात को वह घुमा-फिराकर प्रयास करके करना चाहती थी, वह स्वय ही सिद्ध होने जा रही है। यदि यह पाप यहा मे कट गया, तो वह सब तरह से निश्चिन्त हो सकती है, यहा तक कि अस्पताल भी जा सकती है। डाक्टर माथुर और कुछ भी हो, रूप के इतने पारखी है कि भूख और अभाव मे भी जया पर नही गिरेंगे। इतनी तो उनसे आशा की जा सकती है, पर क्या पता, वह चुडैल पैर-वैर पकड ले ।

इसलिए उसका यहा से टल जाना ही सबसे अच्छा है। अब फिक्र यह हुई कि कैसे जल्दी से यह चिट्ठी दी जाए और जल्दी से ये लोग यहा से रफूचक्कर हो जाए। ये उधर गए कि वह भी अस्पताल गई।

उसने पत्र को उसी प्रकार से तह किया जैसे वह तह किया हुआ था। कापी फाडकर चार पृष्ठो मे पत्र लिखा गया था। दोनो पत्रो को पिन मे जोडा नही गया था, इसलिए यह डर था कि कही एक बाहर न रह जाए इसलिए नीरा ने अपना सारा ध्यान अपनी उगलियो मे केन्द्रित किया और कई बार गिना—एक दो। फिर पत्र को मोड के अनुसार तह कर भीतर रखा और गोददानी से नाममात्र की गोद लेकर उसे इस प्रकार चिपकाया कि मालूम न पडे कि दोबारा चिपकाया गया। फिर उसने पत्र साडी मे छिपाकर दरवाजा खोला। देर तक आहट लेती रही, जैसे हमारे जवान हिमालय पर चीनी हमलावरो की आहट लेते होगे और फिर जब उसे पूरा विश्वास हो गया कि न कोई देख रहा है, न कोई सुन रहा है, तो वह जया के कमरे के सामने गई, और उसने दरवाजे के सामने चिट्ठी डाल दी। यो इस कार्य मे कोई बुराई नही थी पर उसके मन मे चोर होने के कारण वह हडबडाई और इस प्रकार हडबडाई कि अपनी साडी मे निपटकर गिर पडी, तो भीतर से इला निकल आई और दौडकर उसे सहारा देती हुई बोली—क्या हुआ ? क्या हुआ ?

नीरा को यह बहुत बुरा लगा और गिरने का सारा दोष इला पर डालती हुई बोली—देर से पोस्टमैन चिट्ठी डाल गया, तुमसे यह भी नही

होता कि अपनी चिट्ठी ले लो। लो, यह चिट्ठी पडी है। पता नही किसकी चिट्ठी है।

इला ने चिट्ठी नही देखी थी। वह एकदम से गिद्ध की तरह चिट्ठी पर झपटी। हाथ मे चिट्ठी लेते ही बोली—भैया की चिट्ठी है।

वह नीरा का अस्तित्व बिल्कुल भूल गई जिससे नीरा खुश हुई और दोनो अपने-अपने कमरो मे चली गई।

नीरा सोचने लगी। मानो वह प्रत्यक्ष देख रही हो कि मा-बेटी चिट्ठी पढ रही हैं। देखना यह है कि इनकी प्रतिक्रिया क्या होती है।

पर अगले दिन तक (अगले दिन रविवार पडता था) जब चिट्ठी की कोई प्रतिक्रिया दिखाई या सुनाई नही पडी यानी सामान बटोरने का कोई ढग नही मालूम पडा तो उससे नही रहा गया और ज्योही डाक्टर माथुर किसी बोर्ड की मीटिंग मे चले गए, नीरा ने यह समझकर भी कि बहुत अजीब बात कर रही है, इला को बुलाकर पूछा—क्या सुरेश यहा आ रहा है ?

जान-बूझकर उसने प्रश्न को वह रूप दिया जो इला की आखो मे उसके लिए स्वाभाविक था। इला बोली—नही-नही, वह अब यहा कभी नही आने के। वह तो ससुराल से भी जा रहे है।

—कहा जा रहा है ?

—लखनऊ मे एक अच्छी नौकरी मिली है, क्वार्टर बहुत बडा है, उसीमे जा रहे हैं।

नीरा के मन मे पत्र खोलकर पढने के लिए यदि विवेक का कुछ दर्शन था, तो वह दूर हुआ। वह मन-ही-मन हसी, बोली—अच्छा, यह बात है।

वह पूछना तो चाहती थी कि तुम लोग भी वहा जाओगी, पर पूछ न सकी और रसोईघर की तरफ चली गई। वहा वह खडे-खडे अपने लिए टेर-सा दूध डालकर कोको बनाती रही और सोचती रही। उसकी समझ मे नही आया कि बडा-सा क्वार्टर न मिला हो न सही, बेटे के बुलाने पर यह यहा से टलेगी या नही ? यदि नही टलेगी तो यह इसकी बदमाशी है। इसका उद्देश्य यह होगा कि प्रसव के समय कोई दुर्घटना हो तो रास्ता साफ हो जाए। मा-बेटी, दोनो किस तरह से घूरती है जैसे

मौका मिले तो निगल जाए। अब इन्हे किसी तरह निकालना ही पडेगा। वह कुर्सी पर बैठकर कोको पीती रही और यही सोचती रही कि कैसे इस अन्तिम लडाई मे विजय प्राप्त की जाए। सोचती रही, सोचती रही, पर कुछ समझ मे नही आया। उस वक्त प्रेमातुरता मे, प्रेम के कारण ही उसने शादी की थी न कि डाक्टर माथुर की गाडी या बैंक बैलेन्स देखकर, यह सब कुछ नही देखा। उस समय तो वह डाक्टर माथुर को जीतने मे ही अपने शौर्य और शक्ति की पराकाष्ठा मान रही थी, एक भव्य, सुन्दर, सुपुरुष व्यक्ति को एक औरत से छीन लिया, यही केवल उसकी दृष्टि मे था। उस समय डाक्टर माथुर को किसी दुर्बल मुहूर्त मे इसके लिए राज़ी करा लेना चाहिए था कि इनको घर से निकाल देगे या नही तो दूसरे घर मे रहेगे। पर वह मौका तो चूक गया। अब जब चिडिया खेत चुग गई, तो पछताने से क्या होता है ?

उसने कोको मे और एक चम्मच चीनी डाली। वह अभी कोको पी ही रही थी कि डाक्टर माथुर आ गए और जो लडका वर्षा होने के कारण रेनी डे की छुट्टी हो गई, इस नाते आधा भीगकर घर आया हो, उसकी तरह खुश होकर बोले—बोर्ड का कोरम ही नही पूरा हुआ।

पर नीरा ने इसका कोई उत्तर नही दिया और बोली—मैने अन्त तक अस्पताल जाने का निश्चय किया है।—कहकर उसने ऐसे ताका मानो इसका तुरन्त कोई विशेष असर होना ही चाहिए।

डाक्टर माथुर ने कहा—ठीक है, मै अभी टेलीफोन से सारी व्यवस्था किए देता हू। जरूरत पडते ही कमरा मिल जाएगा। ड्राइवर को तो मैने पहले से ही घर मे सोने के लिए कह दिया है।

नीरा इससे सन्तुष्ट नही हुई, बोली—घर ?

—घर जैसे चल रहा है, वैसे चलेगा।

इसपर नीरा एकाएक बहुत क्रुद्ध हो गई, बोली—जैसे चल रहा है, वैसे कैसे चलेगा ?

डाक्टर माथुर ठीक समझ नही पाए कि आपत्ति किस विन्दु पर है, इसलिए वह चुप रहे। उन्हे नीरा की यह बात खटकी थी कि स्वय कोको पी रही है और कम-से-कम औपचारिक रूप से पूछ लेती कि तुम कुछ

लोगे या आप कुछ लेगे ? क्योकि वह कभी उन्हे तुम कहती थी, कभी आप। अब जो एकाएक युद्ध छेड दिया और सो भी पता नही किस बात पर, तो उन्हे बहुत आश्चर्य हुआ। ऐसी हालत मे चुप्पी ही सबसे अच्छी बात थी, पर नीरा ने स्वय ही पूरी बात स्पष्ट कर दी, बोली—मैं उस-पर घर छोड नही सकती।

डाक्टर माथुर सब समझ गए, बोले—उपाय क्या है ? मैं तो पहले ही कह चुका हू कि मैं यह तो कह नही सकता कि तुम चली जाओ।

—आप तो कुछ भी नही कर सकते।—कहकर नीरा ने मुह फुला लिया और उसके चेहरे से ऐसा लगने लगा कि उसके साथ जितना अन्याय हुआ है, इतना इसके पहले ससार मे किसी स्त्री के साथ नही हुआ। बोली—आप तो कुछ भी नही कर सकते, पर मैं तो अपने घर को लुटने नही दे सकती। क्या पता मेरी गैरहाज़िरी मे ताला तोडकर मेरी सब चीजे लेकर चलती न हो जाए। वह तो दिन-रात बेटी के साथ दरवाज़ा बन्द करके खुसुर-फुसुर किया करती है, पता नही क्या षड्यन्त्र करती रहती है। पता नही कब भाभई का कौन-सा पहाड हमपर टूट पडे।

डाक्टर माथुर कुछ कहना चाहते थे, पर वह जानते थे कि कहना व्यर्थ है। वह दो स्त्रियो से घनिष्ठ परिचय प्राप्त करके इस नतीजे पर पहुच चुके थे कि और कुछ भी हो, स्त्रिया बुद्धि से परिचालित नही होती। वे तो रक्त के अन्दर के छल्लो से परिचालित होती हैं। सक्षिप्त रूप से बोले—यह कैसे हो सकता है ? मैं रहूगा।—कहकर शायद उन्हे यह ज्ञान हुआ कि अपने रहने का आश्वासन बहुत कम वकत रखता है, इस-लिए उन्होने कहा—नौकर रहेगा, ड्राइवर रहेगा।

इसपर नीरा पहले से और अधिक बिगड गई, बोली—आप जान-कर भी अनजान बनते है। नौकर, ड्राइवर सबकी सुहानुभूति उसके साथ है। मुझे तो वे जैसे कही से उडकर आई हुई अनधिकारिणी पापिष्ठा समझते है।

डाक्टर माथुर को भागने का एक रास्ता दिखाई पड गया, बोले—क्या किसीने ऐसी कोई गुस्ताखी की है ?

नीरा पहले से अधिक नाराज़ होकर बोली—आपको तो कुछ भी

दिखाई नही देता। आपके ही सामने वे उसे बडी मा जी कहते है और मुझे छोटी मा जी कहते है। यह कौन-सा बोलने का तरीका है ? वे जैसे मुझे हमेशा याद दिलाते रहते है कि असल मे मैं कुछ भी नही हू, अनधिकारिणी हू।

डाक्टर माथुर को यह सुनाई नही पडा कि इस टिप्पणी पर क्या कहा जाए क्योकि समर्थन करने मे खतरा था और न समर्थन करने मे तो और भी अधिक जोखिम था। बोले—ये लोग पुराने ज़माने के हैं। इसलिए ऐसे बोलते है। इनको क्या मालूम कि युग बदल गया है।

—आपको भी तो नही मालूम।

डाक्टर माथुर ने चिल्लाकर कहा—मेरे लिए एक प्याली चाय लाओ।

चाय की इच्छा उनमे विशेप नही थी, पर चाय पीने मे एक प्रकार से एकाकित्व मे कमी तो आ जाती। टीका के रूप मे उन्होने कहा—सचमुच ये लोग बडे गैरज़िम्मेदार हो गए हैं। मैं आया हू, मुझे चाय को भी नही पूछा।

—और वहा घडी-घडी चाय, कोको, दूध पहुचाते रहते है।

बात बिल्कुल झूठी थी, क्योकि नीरा ने थोडा सम्हलते ही यह सब मना कर दिया था और अब केवल सवेरे-शाम दो बार चाय जाती थी, कोको आदि तो कभी जाता ही नही था। कोको का डब्बा तो नीरा के शयनकक्ष मे रहता था। डाक्टर माथुर यह सब जानते थे। उन्होने कहा—हू।

वह कुछ दिनो से यह अनुभव कर रहे थे कि यह एक म्यान मे दो तलवार ठीक नही। अरुण के ज़रिए से वह कई दफे अपनी पहली पत्नी को कहला चुके थे कि अलग घर ले लो, अपने रुपए ले लो, पर जया ने इस सम्बन्ध मे कुछ फैसला नही किया था और मामला घिसटता-टलता चला जा रहा था। यह एक ऐसे घाव की तरह हो गया था, जो भीतर ही भीतर मवाद पैदा कर रहा था, फूटता नही था। आपरेशन के बिना वह फूटता दिखाई नही देता था और डाक्टर माथुर आपरेशन से घबराते थे क्योकि उन्हें छुरी पकडनी नही आती थी। उनके निकट प्रश्न बहुत सीधा-सादा था। मिया-बीवी जब तक एक साथ रहते थे रहते थे, अब जब मिया

। दूसरी बीबी कर ली, तो पहली पत्नी चाहे जो कुछ करे, उसका पहला
र्त्तव्य यह था कि वह इस अपमानजनक स्थिति से निकले। यूरोप मे
रोज ऐसा होता है। कभी पति पत्नी को छोडता है, कभी पत्नी पति को
छोडती है, मुकदमे चलते है, विशेष शोर नही होता, कानूनी अधिकार ले-
कर दोनो अलग हो जाते हैं। पर यहा अजीब हालत है। जो लोग आधुनिक
हा तक कि ऐंग्री यगमैन बनते हैं, जैसे अरुण अपनी छात्रावस्था मे था,
भी ऐसी घटना पर बहुत उत्तेजित हो जाते हैं। अरुण के द्वारा जया
ो भेजे हुए वे सन्देश व्यर्थ गए थे और अब यह विस्फोट हो रहा है।

डाक्टर माथुर निराश होकर बोले—तो तुम क्या समाधान बताती
? मैं उन्हे निकाल तो सकता नही।

नीरा यह जानती थी। सच तो यह है कि इस सम्बन्ध मे शादी के
हले ही डाक्टर माथुर ने सब कुछ स्पष्ट कर दिया था। उन्होंने कह
या था कि मैं उन्हे न तो निकाल सकता हू और न उनकी सम्पत्ति से
हे वचित कर सकता हू।

नीरा ने इसमे प्रेम की कमी पाई थी, पर उस समय यह नही मालूम
ा था कि उससे कुछ आएगा, जाएगा। उस समय यह लगा था कि
 स्त्री का पति छीन लिया और उसे दिखा-दिखाकर उसके पति को
गना—यही चरम (दुर्भाग्य से स्त्री के लिए वह शब्द ही नही है)
पार्थ है। इस स्थिति के अन्दर बर्तन-भाडे, गुलदान, पुस्तको की मिल्कि-
और उन्हे प्रतिद्वन्द्विनी द्वारा चुराकर भागने की सम्भावना आदि
ई बात सुझाई नही पडी थी। ये बातें तो अब धीरे-धीरे सामने आ
ा हैं। अब विशेषकर इसलिए कि घर छोडकर जाने की स्थिति आ
है और पहले जो समाधान किया था कि अस्पताल न जाऊगी, वह
ने स्वार्थ की दृष्टि से अनुचित है। जब आप नही रहे, तो फिर बाकी
ें रहें या न रहे। पर अब तो ऐसे करना है कि आप भी रहें और
ी चीजे भी रहे। चीजो का भी उतना मोह नही है, जितना कि यह
कि कही अनुपस्थिति का फायदा उठाकर मा-बेटी फिर से डाक्टर
र पर छा न जाए, ताकि जब लौटें तो मालूम हो कि ऊट ने तम्बू
कब्ज़ा कर लिया और अब अपने लिए स्थान ही नही रहा।

नीरा बिना कुछ कहे डाक्टर माथुर को चाय पीते हुए छोडकर उठ गई। रविवार था इसलिए दबाव बराबर जारी रहा। डाक्टर माथुर पछताते रहे कि बोर्ड की मीटिंग न सही, कही और ही जाकर लच तक समय काट आते। उन्होंने देखा कि एक बज गया है और रसोइया दो बार बुला चुका है, फिर भी नीरा नही उठी। वह समझ गए कि वही मामला है। किसी तरह हाथ-पाव जोडकर नीरा को खाने की मेज पर बैठाया। दोनो मे से किसीने फिर उस विषय पर बातचीत नही की, पर दबाव बराबर जारी रहा और उसका वोल्टेज इस प्रकार बढता रहा कि खाने के बाद नीरा कराहती भी रही। डाक्टर माथुर विश्वविद्यालय की राजनीति मे प्रवीण थे। बडे-बडे धुरन्धरो को नीचा दिखा चुके थे, उपकुलपति भी उनसे भय खाते थे, पर यह एक ऐसा मामला था, जिसका मीजान वह नही बैठा पा रहे थे।

क्या जया से कह दिया जाए, अरुण के जरिए से ही सही, की भई, अब तुम्हारा यहा कोई काम नही। तुमपर हम कोई दोष नही लगाते। बस यह है कि नीरा मुझे ज्यादा पसन्द है इसलिए मै अब तुम्हारे साथ नही उसके साथ घर बसाना चाहता हू। जिस दिन नई शादी हुई, उस दिन तक की सारी नकद रकम ले लो और पिण्ड छोडो। अदालत इससे ज्यादा नही देगी, यहा तुम्हारा बना रहना न तुम्हारे लिए भला है न और किसीके लिए। पर यह कहते बुरा लगता था और सच तो यह है कि अरुण के ज़रिये यह कहा भी जा चुका था। अरुण ने स्वय भी इस विषय मे ज़ोर लगाया था, क्योकि उसके विचार भी वही थे जो एक सुसभ्य आधुनिक के होने चाहिए कि जब तक भीतर से नाता है अन्दर का सोता जारी है, तब तक एक छत के नीचे रहना ठीक है, पर जब सोता सूख गया या यो कहना चाहिए कि जब सोते ने दूसरा मुह अपना लिया, जिसकी दिशा और है, तो फिर महज अग्निसाक्षी करके भावरो के हवाले की सूखी डाल पर जो किसी भी समय चर्राकर टूट सकती है, बनी रहना कोई अक्ल की बात नही है।

शाम की चाय का समय भी आ गया, फिर गाठ उसी प्रकार पडी हुई मिली। उसे फिर खुशामद के द्रावकपूर्ण स्वरल मे हल किया गया।

सन्ध्या समय डाक्टर माथुर के मन मे एक समाधान आया। उसका आना था कि डाक्टर माथुर खुश हो गए। उन्होने नीरा से कहा—जब वह यहा पर है, तो क्यो न वह भी तुम्हारे साथ अस्पताल जाए ?

नीरा समझ नही पाई कि किसके विषय मे कहा जा रहा है। उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से डाक्टर माथुर को देखा तो वह बोले—जब तुम अस्पताल जाओ, तो साथ-साथ पहली मिसेज माथुर भी अस्पताल जाए। हम ऐसी व्यवस्था कर देंगे। इला आकर घर से चीज-वस्तर ले जा सकती है या नौकर ले जा सकते हैं।

नीरा को यह प्रस्ताव बहुत पसन्द आया यद्यपि उसे साथ ही यह डर भी लगा कि कही यह बेहोशी या असावधानता की हालत में कुछ खिला-पिला न दे। पर पति के साथ सौत का यहा रहना तो बहुत ही खतरनाक था। उसने फौरन प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, पर बोली—वे राजी हो तब न।

—राजी कैसे नही होगी ?

डाक्टर माथुर ने चिल्लाकर इला को बुलाया और बिना किसी प्रकार राय लिए सक्षेप मे कह दिया कि जब भी यह अस्पताल जाए, तुम दोनो इनके साथ चली जाना। मैं इसकी सारी व्यवस्था किए देता हू।

इला कभी बाप की बहुत लाडली थी पर उसने हा-ना कुछ नही कहा, न तर्क किया, न कुछ पूछा। बस, बात खत्म होते ही चली गई। नीरा इस निर्णय से बहुत खुश हुई, पर उसे सन्देह था कि शायद वे डाक्टर माथुर की बात न मानें। कहा तो बिल्कुल बोलचाल बन्द थी और कहा एकदम तीमारदारी के लिए नौकरानी की तरह साथ मे अस्पताल जाना। पर वह यह समझ गई कि यदि इन लोगो ने बात नही मानी, तो डाक्टर माथुर के मन मे उनके प्रति जो थोडी-बहुत कर्तव्य-भावना है, वह दूर हो जाएगी, दोनो मे फिर से मेल होने की बात तो स्वप्न ही हो जाएगी। अभी वह फौरन अस्पताल जा भी नही रही थी। दोनो पक्षो के लिए सोच-विचार करने का बहुत समय था। नीरा खुश हुई कि उसने शवाधार मे एक और कील जड दी। अब मुर्दा कैसे उखडेगा और भला कैसे खडा होगा ?

१०

यो जगन्नाथ कई दिनो से नही आया था, पर जब विश्वनाथ और उसके मामा आए और रहस्यजनक ढग से गायब हो गए, तो सुहागिनी को बहुत चिन्ता हुई। इसके पहले भी कई बार जगन्नाथ गायब हो जाता था। दो-दो, तीन-तीन दिन उसका कुछ पता नही लगता था, पर अन्त तक वह लौट आता था। अब की बार भी यही आशा थी, पर विश्वनाथ और उसके मामा के आने से उस आशा पर पानी फिर गया था। जहा तक वह समझती थी, जगन्नाथ के पिता और अन्य रिश्तेदार उसे वापस लेने को तैयार नही होगे, फिर ये आए क्यो ? वर्षों से इन लोगो ने कोई खबर नही ली थी और अब एकाएक क्या सोचकर प्रकट हो गए थे ? महज कौतूहल तो नही हो सकता। उनके रगढग से ज्ञात होता था कि इससे अधिक कुछ था, पर वह अधिक क्या था ? क्या उन्हे जगन्नाथ मिला और मिला तो क्या बातचीत हुई ? नतीजा क्या रहा ? इसी उधेडबुन मे उसे रात को नीद नही आई और सवेरे जब उठी, तो उसने तय किया कि इस रहस्य का पता लगाना है। जगन्नाथ से उसे कोई सुख नही था, फिर भी वह था तो एक सहारा। अब वह कहा, किससे सहायता प्राप्त करेगी ? किसके कारण लोग उससे डरेगे ? यहा तो सभी उसे निगलने को मुह बाए हुए बैठे थे।

वह सवेरे नियमानुसार बच्चो को खिला-पिलाकर और उनके लिए खाना रखकर निकल पडी। पहले अरुण बाबू के घर पर गई। वह काम करती रही और यह सोचती रही कि जगन्नाथ के भाई के आने की बात रमा से कहे या नही। कभी सोचती कि बता देना चाहिए, कभी सोचती कि बताने से क्या लाभ है, अपनी ही हेठी होगी और फायदा कुछ नही होगा। वह तो शायद यही कहे- गया तो आफत टली, अब तुम अपने बच्चो को पालो। उससे तुम्हे कौन सा सुख था, जो तुम अफसोस करोगी ?

इस परामर्श की दिशा से वह बखूबी परिचित थी, पर यह परामर्श एकदम अग्राह्य था, यह बात वह कैसे समझाती। वह काम करती रही,

काम करती रही और जब काम कर चुकी, तो उसने समय पूछा। हा, इस वक्त तक जगन्नाथ जहा भी होगा, वहा से मिल मे पहुच गया होगा। चाहे वह रात भर ताडी पीकर बेहोश रहे, पर सवेरे नहा-धोकर मिल मे जाना उसके लिए ऐसा ही नित्य कर्म था, जिससे वह कभी चूकता नही था। सुहासिनी उसकी इस आदत से बहुत अच्छी तरह परिचित थी और जाने क्यो इस कारण वह आशा करती थी कि कभी इसी सास से वह सुधरेगा। वह काम खत्म करके मिल की तरफ चली, पर रास्ते मे अध्यापक विद्यानिवास का घर पडता था, सोचा कि यहा भी काम खत्म करती चलू। यो तो यहा का काम बहुत लम्बा है, यहा की माई जी जल्दी छोडने वाली नही है, पर उसने सोचा जितना मिल मे जाना टले, उतना ही अच्छा है, क्योकि पता नही क्या खबर मिले तो एकदम से जी खराब हो जाए।

वह अध्यापक विद्यानिवास के घर मे गई तो वहा माई जी का पता नही था। विद्यानिवास ने कहा—आज सुबह की गाडी से वह चली गई, दो दिन के लिए।—कहकर उन्होने शुभ सूचना-सी देते हुए कहा—मै दो दिन तक एक मित्र के यहा खाऊगा, तुम बस आकर झाडू-बाडू लगा जाना।

सुहासिनी का काम बहुत जल्दी समाप्त हो गया और वह जाने को हुई। वह जल्दी जाना तो नही चाहती थी, क्योकि उसे डर था कि मिल मे यही खबर मिलेगी कि वह बनारस चला गया, तो उसके लिए बहुत ही दुखदायी होगा, दुखदायी इस माने मे तो नही कि वह भूखो मरेगी, बल्कि जगन्नाथ के रहते भूखो मरने की ज्यादा सम्भावना थी, जैसे कि उस दिन बच्चो की हालत हुई थी, जब उसने खिचडी पर लात मारी थी। वह दरवाजे से निकलने लगी तो देखा कि दरवाजे पर भीतर से ताला लगा है। एकाएक वह समझ नही पाई कि क्या मामला है, कही स्वप्न तो नही देख रही है। इतने मे उसने देखा कि सामने विद्यानिवास खडे है और बहुत अर्थपूर्ण ढग से हस रहे है। बोले—मैने दरवाजा बन्द कर दिया ताकि बाहर से कोई न आ पाए।

सुहासिनी समझ गई कि विद्यानिवास क्या चाहता है, बोली—नही,

आप मुझे जाने दीजिए।

इसपर विद्यानिवास उसके सामने हाथ जोडकर खडे हो गए और बोले—मै सब जानता हू। वह कई दिन से घर नही आया है, फिर तू उसके पीछे क्यो पडी है ? एक-न-एक दिन वह जेल जाएगा और फिर तू अपने को वेश्यालय मे पाएगी। उससे अच्छा है कि तू मेरी हो जा। मै तुझे अलग से महीने मे काफी रुपए दे दिया करूगा। तू अगर एक दफे प्रेम कर चुकी है, तो मेरे साथ भी कर, देख इसमे क्या आनन्द आता है। मै तुझे ऐसी दवा लाकर दूगा कि लडका आदि नही होगा।

इसी प्रकार वह अनर्गल तरीके से न जाने क्या-क्या कह गए, पर सुहासिनी बहुत रुखाई के साथ बोली—मुझे जाने दो, नही तो मै चिल्लाऊगी। मै वैसी औरत नही हू।

विद्यानिवास ने और भी बहुत तरह से समझाया, ऐसे-ऐसे ढग मे समझाया जो सुहासिनी की बुद्धि के बाहर थे, बोले—पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, यह सब कल्पना है, इनमे कुछ तत्त्व नही है। तुझे अगर उससे डर है, तो मै पुलिस वालो से कहकर उसे जेल मे भिजवा दूगा। तू मेरी बन जा, मै तुझे बहुत आराम से रखूगा।

पर सुहासिनी एकदम पागल-सी हो गई। उसने दरवाजा पकडकर जोर-जोर से भडभडाना शुरू किया। यहा तक कि बाहर कुछ आहट मालूम हुई। तब विद्यानिवास के कान खडे हुए और उसने घबडाकर ताला खोल दिया। ताला खोलते-खोलते उसने गिडगिडाकर सुहासिनी से प्रार्थना की कि तुम किसीसे कोई बात न कहना, नही तो मै कही का नही रहूगा।

सुहासिनी ने इसका कोई उत्तर नही दिया और धनुष मे छूटे हुए तीर की तरह बाहर निकल गई। विद्यानिवास जडीभूत होकर वही खडे रहे। उन्हे लगा कि वह पता नही क्या करे। कही अरुण से न कहे, तो और मुसीबत बने, पर सबसे बडी मुसीबत तो बनेगी जब यह श्रीमती से कहेगी। पर इसे श्रीमती से मिलने ही क्यो दिया जाएगा। मै ही क्यो न इसपर चोरी का इल्जाम लगा दू जैसा कि सभी शरीफ आदमी करते है, ताकि यह यदि कुछ भी कहे, तो उसका कुछ असर न हो। मै यह कहूगा

कि श्रीमती को बाहर गया हुआ जानकर यह रसोई के कुछ वर्तन लेकर जा रही थी, तो मैने इसे वुरी तरह डाटा और पुलिस का डर दिखाया, इसपर इसने यह इल्जाम लगाया कि मै उसके साथ जवर्दस्ती करना चाहता था। यह विचार अच्छा है। वह कपडे पहनकर कॉलेज की तरफ रवाना हो गया।

११

मामा जी साठ रुपया जुर्माना देकर इतने दु खी हुए कि फिर वह दिल्ली की सैर करने गए ही नही और होटल मे ही सोकर दिन गुजार दिया। जव वह चलने लगे, तो उनका ख्याल था कि केवल खाने-पीने का ही विल देना पडेगा, पर विल मे एक दिन का कमरा-किराया भी लगाया हुआ था जिससे उनका मन और दु खी हो गया। यह सारी यात्रा ही विल्कुल वेकार रही। वेकार न रहती, यदि सवेरे विश्वनाथ इस तरह से निकल न जाता। उसके सामने जगन्नाथ काफी हद के अन्दर रहा, पर उसके जाते ही वह अपने रुद्र, घिनौने रूप मे प्रकट हुआ। नाहक मे साठ रुपये ले लिए और वोला कि यह समझौता है।

यो मामा जी कभी तीसरे दर्जे मे सफर नही करते थे, पर आज तो तीसरा दर्जा उनके सिर पर नाच रहा था। जगन्नाथ साथ चलता, तो भी तीसरे दर्जे मे ही जाना होता और अव व्यर्थ मे अर्थहानि के कारण तीसरे दर्जे मे चलना पड रहा है।

जो कुछ हुआ सो हुआ, अव मामा जी के सामने प्रश्न यह था कि क्या लौटकर पूरी वात वताई जाए ? पूरी वात वताना तो एक तरह से अपने ऊपर मूर्खता का ठप्पा लगवाना होगा, क्योकि पहली वात तो यह माननी पडेगी कि झूठ वोले कि मेरे पास कुछ नही है, दूसरी वात यह है कि जव जानते थे कि जगन्नाथ अव वह जगन्नाथ नही है, तो उसे अकेले रखकर गुसलखाने मे क्यो चले गए ? यह कोई नही देखेगा कि कोई वात-की-वात मे अच्छा-खासा ताला टूट जाने की आशंका कैसे कर सकता

था। जितनी भी सफाई दी जाए, कुछ लाभ नही होगा। विश्वनाथ यही कहेगा कि मामा जी, आप बडे बुद्धू निकले।

सो बुद्धू तो निकल गए। इसमे कोई शक नही। सोच रहे थे कि सारी सैर विश्वनाथ के मत्थे होगी सो ऊपर से जुर्माना देकर आ गए। सम्बन्ध ऐसा है कि पैसा माग भी नही सकते। अव्वल तो यह कहना ही बडा भोडा लगेगा कि जगन्नाथ ने इस तरह 'समझौता' करके उल्लू बनाया। उससे यदि उसकी बदमाशी साबित होती है तो उससे कही बढकर अपनी मूर्खता प्रमाणित होती है। यह सब करके भी यदि उसे साथ ले जा पाते तो कुछ नामवरी होती, आगे कुछ और सिलसिला चलता, पर यहा तो मझधार मे बधिया बैठ गई।

मामा जी जब अकेले अपनी बहन के घर पहुचे, वह सामान आदि घर रखकर कपडा बदलकर आए थे, तो सब लोगो ने आश्चर्य किया कि जगन्नाथ क्यो नही आया ? पर मामा जी ने उसी समय आई हुई अनुप्रेरणा से परिचालित होकर कहा—वाह मै जब आठ बजे नीद से उठा, तो मैने देखा कि तुम दोनो भाई गायब हो, सब सामान के, इसलिए मैने समझा कि तुम लोग सवेरे की गाडी से चल चुके हो। मालूम हुआ कि बिल भी दे गए हो, इससे और समर्थन हुआ। मैने कहा कि अब तो गाडी छूट ही गई है, इसलिए मैने कुतुबमीनार आदि देख लिया और अब मै आ रहा हू। क्या जगन्नाथ रास्ते मे भाग लिया ?

विश्वनाथ बोला—वाह, मै आप दोनो को जगाता रहा, पर जब आप लोग किसी तरह नही जगे, तो मै आप लोगो को छोडकर चला आया और बेयरा से कह दिया कि आप लोग शाम की गाडी से आ जाए। क्या उसने मेरा सन्देश आपको नही दिया ?

—सन्देश दिया। दिया क्यो नही ? उसने यह कहा था कि दोनो चले गए और शाम की गाडी से आप चले आए।

विश्वनाथ ने अपनी मा के साथ दृष्टि विनिमय किया पर मा ने कुछ उत्साह नही दिखलाया, मामा जी से बोला—तो भैया ने बेयरा को उल्टी बात पटा दी होगी, नही तो मै तो उसे साफ कह आया था। फिर गाडी का समय भी कहा था ? मुझ ही को मुश्किल मे गाडी मिली।

यह स्पष्ट है कि भैया अब हम लोगो के साथ रहना नही चाहते।

विश्वनाथ की मा कुछ झुझलाहट के साथ बोली—रहना किसे है? तुम्ही कौन मेरे साथ रहोगे? पता नही कहा तैनात होगे। मैने यह सोचा था कि तुम्हारा बडा भाई कम पढा-लिखा है, उसकी एक शादी करा दूगी और वह मेरे साथ पडा रहेगा।

विश्वनाथ पहले ही मा को सुहासिनी और उसके बच्चो के विषय मे बता चुका था कुछ रग चढाकर ही। मा ने इसपर यही कहा था कि मैं कुछ नहीं जानती, दोनो ने भूल की, दोनो ने सज़ा पाई, अब वह अपने घर लौट आए और वह अपने घर लौट जाए।

विश्वनाथ ने इसपर कुछ प्रतिवाद करते हुए कहा था—वह तो अपने घर आ सकती है, पर क्या तुम चाहोगी कि भैया के बच्चे भगी का काम करें? लोग क्या कहेगे?

मा को इसका कोई उत्तर नही सूझा था, चिढकर बोली थी—समाज उन्हें उसके बच्चे नही मानता। इसलिए उनकी मा जो भी करे वही होगा। फिर आज के युग मे भगी और ब्राह्मण क्या, बल्कि भगी के बच्चो के रूप मे उन्हे बहुत-सी सुविधाए मिलेगी, जो उच्च वर्ण वालो को नही मिल सकती। कोई गरीब हो, तो वह भगी या चमार हो तभी उसका भला होगा।

बात यही तक रह गई थी। समस्या जब सामने खडी होकर फुफकारती, तब उसका मन निकाला जाता। अब मामा जी ने जो आकर यह स्थिति बताई, तो यह स्पष्ट हो गया कि अभी तो कोई समस्या नही है। आगे देखा जाएगा। मामा जी ने साठ रुपये का जुर्माना और अन्य किसी प्रकार की कोई बात नही बताई। बस विश्वनाथ पर गुस्सा निकालते हुए बोले—तुम्हारे ही कारण यह सब मुसीबत बनी। यदि तुम उस दिन चोरी से चले न आते, तो न तो वह भाग पाता और न बाकी सारी मुसीबत बनती। एक दफे उसे ले आकर उसकी विधवा मा के सामने खडा कर देते, तो उनपर कैसे न असर पडता?

मामा जी ने जान-बूझकर अन्तिम शब्द कहे थे, क्योकि वह समझ रहे थे कि उनकी दीदी का यही मत है। वह मानती थी कि जगन्नाथ

एक बार आकर खडा हो जाए, तो फिर वह लौटकर उस चुडैल के पास नही जा सकता। मामा जी ने ये शब्द जानकर कहे थे यद्यपि वे बिल्कुल गलत थे। इतना बडा काण्ड, पिता की मृत्यु की खबर दी गई, पर वह ऐसा निकला कि उसने कोई कौतूहल नही दिखाया। लोग पूछते है कि कैसे क्या हुआ, पर इसने तो एक भी प्रश्न नही पूछा और उसी वक्त मे कभी भाई से, कभी मुझसे 'यह लाओ, वह लाओ' करता रहा। उसने अपनी सम्पत्ति के सम्बन्ध मे भी कोई दिलचस्पी नही दिखाई। अजीब बात है कि वह अब उस भगिन पर उतना आसक्त भी नही था, फिर भी उसने सब सुख छोडकर अपनी वर्तमान जिन्दगी कायम रखने का निश्चय किया।

मा ने विश्वनाथ से भगिन तथा उसके बच्चो के सम्बन्ध मे कुछ नही पूछा था। यह शायद अनुशासन के लिए कठोरता थी, ताकि विश्वनाथ कब्जे मे रहे और गलत-सलत शादी न कर बैठे। पर अब विश्वनाथ के चले जाने पर उसने अपने भाई से लडके के सम्बन्ध मे कई ब्यौरे पूछे। उसका विश्वास था कि जगन्नाथ को घर लौटा लाने का काम उस वक्त बहुत आसान था, जब वह भागा था, पर राय साहब किसी भी तरह अपने बडे लडके को क्षमा करने को तैयार नही हुए। मा ने बेटे की तरफ से कहा कि उसे लौटा लाया जाए। जो गलती है वह उस भगिन की है और सम्भव है, इसमे उसके मा-बाप भी शरीक हो। पर राय साहब ने अन्तिम निर्णय देते हुए कहा—मै उसका मुह नही देखना चाहता, मैं उसकी परछाईं से घृणा करता हू। जो बात मेरे खानदान मे कभी नही हुई, वही इसने की। खैरियत है कि हम इसे दबा देने मे समर्थ हुए और इसमे कोई बदनामी नही हुई। पर प्रश्न अकेले बदनामी का नही है, नीति और सदाचार का है।

राय साहब अपनी प्रतिज्ञा पर कायम रह पाए और पुत्र जगन्नाथ का मुह बिना देखे ही मर गए। उनकी इस कडाई की चट्टान के नीचे-नीचे आसुओ की एक अन्तर्धारा प्रवाहित है, यह और किसी को तो नही, उनकी पत्नी सुजाता को मालूम था। शायद उसी भीतरी मवाद के कारण वह ज्यादा जी नही सके और उनकी जीवनी-शक्ति धीरे-धीरे क्षीण होने

लगी। फिर भी किसीको यह शका नही थी कि इतनी जल्दी यह दीवार ढह जाएगी। सुजाता के मन मे तो बडे बेटे के प्रति पक्षपात था ही, इसलिए पति के आख मूदते ही उन्होने भाई और बेटे को राजी किया था कि वे जाकर उसे लिवा लाए, पर अब दोनो जहाज के टकराकर डूबने की, सो भी किनारे से टकराकर डूबने की खबर लेकर आए थे। दोनो की बातचीत और रिपोर्ट सुनकर उन्हे कुछ सन्तोष नही हुआ, लगा कि कही कोई ऐसा तार है, जो ठीक से आवाज नही दे रहा है, पर सडे हुए चूहे की तरह उसका पता नही लग रहा था। विश्वनाथ का कहना था कि मैं दोनो को सोते हुए छोडकर आया था और मामा जी कह रहे थे कि मैं जब उठा तो दोनो गायब थे। अवश्य इन दोनो के बयानो का समन्वय इस प्रकार हो सकता था कि विश्वनाथ दोनो को सोता छोडकर चला आया, फिर जगन्नाथ उठा और वह सटक गया। पर इतनी सारी अजीब बाते एक साथ क्यो हुई। यह तो समझ मे आता है कि विश्वनाथ को लौटना था, क्योकि उसे अगले दिन कही पहुचना था। पर जगन्नाथ को इतनी जल्दी क्या थी। जब वह तीन-चार दिन से उस भगिन के पास नही गया था तो घण्टे-दो घण्टे मे क्या आता-जाता था। वह उठता मामा के साथ चाय आदि पीता फिर कह देता कि भई, मैं जाना नही चाहता। उसे चोरी से भागने की क्या जरूरत थी ?

सुजाता इस गुत्थी को सुलझा नही सकी। जगन्नाथ ने बिल्कुल अजीब आचरण किया। जब वह सुहासिनी के मोह से मुक्त हो चुका, तो फिर दिल्ली मे इस तरह एक नौकर की तरह मिल के लोगो को पानी पिला-कर जिन्दगी बसर करने मे क्या रस मिल रहा था। पिता की मृत्यु पर मा की जो दशा हुई होगी, उसे सोचकर ही वह कम-से-कम आ जाता। स्थायी रूप से नही तो दो-चार दिन के लिए। उसे लौटने से रोकता कौन था ?

सुजाता और गम्भीर हो गई। अब खोल के अन्दर ही रहने लगी। पति की मृत्यु के बाद पुत्र का वियोग जैसे और पैना हो गया था। उन्हे विश्वास था कि यदि पति परलोक से देख रहे होंगे, तो वह यही चाहते होंगे कि जगन्नाथ जल्दी से घर आ जाए, पर उसे बुलाने का अब कोई चारा नही था इसलिए वह मन मारकर बैठ गई।

दो-तीन दिन निकल गए और बात पुरानी पड़ गई। नौकरो को यह बताया ही नही गया था कि मामा और भैया कहा गए है, इसलिए उधर कोई लहर-प्रति-लहर उठी ही नही। राय साहब राज की रक्षा मे माहिर थे, उनकी गिनती उन लोगो मे की जा सकती थी जिनके दांतो का पूरा सेट बनावटी हो, फिर भी पत्नी तक को पता न चले। उनकी पत्नी के नाते सुजाता ने भी जाने कितना कुछ चुपचाप सहा, झेला और पचाया, किसीको कानो कान खबर नही हो सकी।

—क्रि क्रि क्रि क्रि

टेलीफोन की घण्टी एकाएक बज उठी। सुजाता कभी इसमे दिलचस्पी नही लेती थी और न उनका कोई टेलीफोन आता था, यानी बहुत कम। घर मे विश्वनाथ नही था। नौकरो ने टेलीफोन उठाया। एक नौकर दौड़कर आया, बोला आपका टेलीफोन है।

सुजाता को बहुत आश्चर्य हुआ और आश्चर्य से अधिक डर। कही विश्वनाथ को तो कुछ नही हुआ, क्योकि जब मुसीबत आती है तो वह कुनबे लेकर आती है। जल्दी से सुजाता ने टेलीफोन उठाया, तो उधर से मामा जी बोल रहे थे। और भी डर लगा कि कोई बुरी खबर होगी, तभी न टेलीफोन किया है। अधमरी होकर बोली—क्या बात है, राजन ?

राजन कुछ बोले जो सुजाता की समझ मे नही आया। लगा कि जैसे कुछ बुलबुले फुसफुसा गए। और भी त्रास लगा, सिकुड़कर बोली—समझ मे नही आया, क्या बात है बोलो न ?

उधर से राजन ने कहा—कोई बात नही, जगन्नाथ आ गया है।

—आ गया ? कौन ? जगन्नाथ ?

सुजाता ने तीनो प्रश्न इस हड़बड़ाहट तथा आश्चर्य मे किए जिसका असर राजन पर भी पड़ा। सुजाता जिस बात को सबसे ज्यादा चाह रही थी, वही जब घटित हुई तो, वह सबसे ज्यादा घबराई। लगभग बेहोश होने को हुई, हाथ से रिसीवर छूटते-छूटते बचा, क्योकि मन मे जहा जगन्नाथ को लौटकर पाने की प्रबल इच्छा थी, वही एक छिपा भय यह भी था कि कही जगन्नाथ अपनी उस भगिन को और उसके बच्चो को भी लेकर न आ धमके। मामा के ही यहा पहले वह आया, इससे यह

शका और भी प्रबल हुई, बोली—तुम लोग आ जाओ।

कहने को तो तुम लोग कह दिया, पर इस तुम लोग मे वह सुहासिनी और उसके बच्चो को शरीक नही कर रही थी। कहकर टेलीफोन मे फिर से बोली—तुम लोग आ जाओ, मैं तो घर ही पर रहती हू।

अभी वह टेलीफोन से दूर नही गई थी कि सोचा जगन्नाथ के लिए सब कुछ सम्भव है, शायद सुहासिनी को साथ ही लाया हो। पर कैसे लाएगा, क्यो लाएगा, जब तीन-चार दिन से वह उसके पास गया ही नही था, तो उससे उसका क्या सम्बन्ध था, नही वह अवश्य अकेले आया होगा। फिर भी सावधानी अच्छी होती है। वह लौटी और टेलीफोन मिलाकर राजन से बोली—तुम अभी चले नही, अच्छा तुम न आओ, मैं ही आ रही हू।

कुछ और कहने का मौका नही दिया, टेलीफोन बन्द कर दिया। उद्देश्य यह था कि घर मे जगन्नाथ सुहासिनी के साथ न आए, नही तो नौकर बातचीत करेंगे। जब राय साहब ने अपने जीते जी भयकर कष्ट सहकर भी दाहिने हाथ की बात बाए हाथ को पता नही होने दी, तो अब उनकी मृत्यु के बाद जगहसाई कराने से क्या फायदा। अव्वल तो जगन्नाथ सुहासिनी को छोडकर आया होगा। हे काशी विश्वनाथ, माता अन्नपूर्णा, ढुढिराज गणेश, बाबा बटुक भैरव, ऐसा ही हो, उसे सुबुद्धि दो, पर यदि वह ज़िद या मूर्खतावश अपनी रखेली को (विश्वनाथ आदि ने शादी की बात नही बताई थी) साथ मे ले आया हो, तो उसे कहा जाएगा कि तुम आ जाओ और घर पर रहो और उन लोगो को वही पर मामा जी के जरिये से किराए के मकान मे दो-चार मील दूर रखवा दिया जाएगा। राय साहब ने अपनी जवानी मे एक रखेली इसी प्रकार रखी थी, जिसे वह बडी गैबी की तरफ एक बगले मे रखते थे। सुजाता को इसका पता हो गया था, पर वह भी अपने पति से इतना सवा सेर निकली कि उन्होंने कभी राय साहब को यह पता नही होने दिया कि मुझे सब मालूम है। अन्त मे विजय सुजाता की ही हुई थी, क्योकि राय साहब पर एकाएक स्वामी गिरिजानन्द का असर हुआ था और इसी दौरान उन्होंने या तो रखेली को भगा दिया या रखेली

के भाग जाने से ही वह स्वामी गिरिजानन्द के असर मे आ गए थे। जो कुछ भी हो, पूरा पता नही मिला, क्योकि हफ्ते-दो हफ्ते मे ही खबर मिलती थी, मायके के एक पुराने बूढे नौकर के ज़रिये से।

सो जगन्नाथ ने अगर बेवकूफी की है तो उसे भी सम्हाल लिया जाएगा और किसीको कुछ पता होने नही दिया जाएगा। राजन को पता हो गया, सो राजन को तो, ठीक पता नही, राय साहब की उस गलती का भी पता था। वह गुप्त बात पचाना जानता है। खानदानी है। सुजाता जल्दी से तैयार होने लगी।

जगन्नाथ मामा जी के यहा इसलिए आया था कि उसके पास अच्छे कपडे नही थे और मामा जी के कपडे उसे फिट आए थे। उसने मामा जी से लगभग ज़बर्दस्ती साठ रुपये ऐंठे थे, इसका उसे न कोई मलाल था न कोई लज्जा, आकर ही बोला—जाता तो मै घर, पर नौकरो पर बुरा असर पडेगा इसलिए आपके पास आ गया। निकालो न कोई रेशम वाली शेरवानी।

मामा जी उसे देखकर कतई खुश नही हुए क्योकि वह अपने को बहुत चलता-पुर्ज़ा बताते थे, इसलिए वह किसी भी प्रकार यह किस्सा खोलना नही चाहते थे कि उन्हे साठ का झटका दिया गया और वह रोते हुए बनारस आए। बोले—तुम कैसे आ गए? तब तो राजी नही हुए और अब आ गए? खैरियत तो है? वे कैसे है?

जगन्नाथ ने इन प्रश्नो का कोई उत्तर नही दिया, हसकर बोला—मै तो बडा बेवकूफ हू, मुझे आपके साथ आना चाहिए था। मैने घर छोडा, पर सम्पत्ति तो नही छोडी।

अब मामा जी ताड गए कि आने का असली कारण क्या है। सम्पत्ति की बात तो होटल मे भी चली थी, बल्कि विश्वनाथ ने विशेषकर यह प्रलोभन दिया था कि पिता जी तो सब कुछ माता जी के नाम लिख गए है, पर तुम्हारा हिस्सा तो है ही।

पर उस समय जगन्नाथ की अण्टी मे यह बात नही आई थी। मामा जी ने उसे ध्यान से देखा। आखिर यह समझ अब आई तो कहा से आई? कही यह घर लौट गया हो और इसके बच्चो की मा ने इसे

यह समझाया हो, वोले—चलो तुम्हे ले चलते है, अपनी वातचीत कर लेना। मुझे क्या है ?

मामा जी उसे अपने यहा से जल्दी इसलिए टालना चाहते थे कि फिर उस प्रकार के 'समझौते' की नौवत न आए। जो वात की वात मे सूटकेस का ताला तोडकर उसमे से रुपये निकालकर उसका आधा दिन-दहाडे गटक सकता है, वह क्या नही कर सकता ? अभी मामा और भाजे वात कर ही रहे थे कि मामी आ गई। जगन्नाथ को फौरन ही वह वात याद आ गई जो उसने होटल मे वहस करते हुए आवेश की हालत मे मामी के सम्वन्ध मे कही थी, पर उसने जल्दी से उस विचार को दूर भगाते हुए मामी के पैर छू लिए, यद्यपि उसने मामा के पैर न दिल्ली मे छुए थे और न अव छुए थे। उसी समय राजन ने टेलीफोन मिलाया और अपनी वहन के साथ वातचीत के वाद वोला—चलो चले।

इतने मे दूसरा टेलीफोन आया, तो पता लगा कि सुजाता देवी तो स्वय ही आ रही है। सुनकर जगन्नाथ पर वहुत ज़वर्दस्त प्रभाव पडा। उसने मामी से सरलता से कहा—जल्दी से मामा जी के कपडे कहा रहते है, वताओ। मै इस वेश मे मा से नही मिलने का। उन्हे वडा दु ख होगा। मै उन्हे डवल दु ख देना नही चाहता।

मामी को साठ रुपये वाला किस्सा मालूम नही था, इसलिए उसने वैसा ही व्यवहार किया जैसा इतने दिन वाद आए हुए भाजे के साथ करना चाहिए, विशेषकर वडे वाप के वेटे से। वात की वात मे जगन्नाथ ने अपने कपडे चुन लिए और गुसलखाने मे घुसकर पूरा छैला वन गया। वह जानता था कि मा का आना इतनी कोई आसान वात नही है। वह जाने कितने ताले वन्द करेगी, फिर ड्राइवर आएगा, पता नही विश्वनाथ मोटर ले गया हो। इसलिए उसने गुसलखाने के अन्दर मामा जी का प्रिय खुशवूदार तेल का उदारता के साथ मर्दन किया। एक वार तेल लगाकर स्नान किया, फिर उसे सावुन से धोया, इसके वाद जव देखा कि सारा तेल उड गया, क्योकि उसने आधा सावुन खर्च कर डाला था, तो उसने फिर से तेल चुआ कर स्नान किया। मामा जी के दूथ व्रश

को अच्छी तरह धोकर उसीसे दात साफ किए और भविष्य मे इस्तेमाल के लिए उसने टूथ ब्रश, जो बिल्कुल नया लग रहा था, अपनी यानी मामा जी के कोट की जेब मे डाल लिया। जब वह निकला तो बिल्कुल दूसरा आदमी बन गया था। अब वह विश्वनाथ से भी ज्यादा शरीफ लग रहा था। मामा-मामी किसीने उसका स्वागत नही किया। वह समझ गया कि मामा ने इस बीच मामी की चाभी ऐंठ दी है। मामी अब उसे ऐसे देख रही थी जैसे वह घर मे घुसा हुआ कोई चोर या उचक्का हो। किसीने उसे नाश्ते के लिए नही कहा, उल्टे मामा ने कहा—भई, मेरा यह एक ही कोट है, वापस कर देना।

जगन्नाथ बहुत खुश था। बस उसकी खुशी मे यदि कोई कमी थी, तो यह कि अब कुछ अण्डा-टोस्ट आदि मिल जाता। पर मामी जी के चेहरे की ओर देखा तो वह समझ गया कि यह अण्डा देने वाली नही है। पर वह इससे निरुत्साह नही हुआ। एक बार यह सोचा कि जैसे मैने कपडे पहन लिए है, उसी प्रकार से नाश्ता भी कर लू। वह जानता था कि शरीफो की शराफत के रबर को बहुत दूर तक खीचा जा सकता है, पर भीतर ही भीतर मा को विधवा वेश मे देखने का धक्का उसपर ब्रेक के रूप मे काम कर रहा था, फिर भी उसने मामी से कहा—एक रूमाल साफ सा दे दो न! विश्वास रखो, मै सब लौटा दूगा।

मामी ने एक रूमाल दे दिया और अपने काम से चली गई। तब तक सुजाता देवी आ गई और जगन्नाथ मामा जी के साथ दौडकर गया और मा के चरण स्पर्श किए। मा की आखो मे आसू आ गए, पर वह भी निश्चिन्त नही थी। चारो तरफ ताक रही थी कि कही सुहासिनी और उसके बच्चे तो नही है? एक तरफ तो वह चाहती थी कि कोई न दीखे, दूसरी तरफ वह देखना चाहती थी कि सुहासिनी कितनी बडी हो गई। और बच्चो की बात सोचकर वह न तो मन को कडा ही कर पा रही थी और न पिघल ही पा रही थी—जैसा कि भीतर से प्रबल इच्छा-सी हो रही थी। कोई कही दिखाई नही पडा, बस भौजाई जल्दी-जल्दी कुछ तैयारी करती हुई दिखाई पडी। सुजाता

देवी समझ नही पाई कि सुहासिनी आदि आए है कि नही और यदि आए है तो कहा छिपे हैं ? क्या ऐसा हो सकता है कि वे आए हो और मामा-मामी से कहकर जगन्नाथ ने उन्हे छिपा लिया हो, ताकि मा को कष्ट न हो। शायद वे आए ही न हो। मा ने कहा—बेटा, यदि तुम न जाते, तो उनका इतना जल्दी स्वर्गवास न होता।

जगन्नाथ की आखो मे भी घडियाली नही, बल्कि सचमुच आसू आ गए, यद्यपि वह इससे सहमत नही होना चाहता था कि पिता जी की अकाल मृत्यु उसके कारण हो गई। अपने प्रियजनो की दृष्टि मे तो हर व्यक्ति की अकाल मृत्यु ही होती है।

सब लोग भीतर गए। अपनी ननद को देखकर मामी जी को अब अतिथि-सत्कार की बात सूझी और कुछ हद तक रोना-धोना बन्द करने के लिए और कुछ हद तक अपना नया टी-सेट दिखाने के लिए मामी जी ने कहा—अभी जगन्नाथ ने चाय नही पी है। सब लोग खाने के कमरे मे चलिए।

सुजाता ने कहा—अरे, अभी तक नाश्ता नही किया ?

सुजाता ने कुछ खाया नही। कोई उनसे आशा भी नही करता था कि वह कुछ खाएगी। मामा जी पहले ही खा चुके थे और अब दफ्तर की तैयारी थी। जगन्नाथ ने अकेले ही सबकी क्षति-पूर्ति कर दी। वह रस ले-लेकर खाने लगा। सुजाता अभी तक चारो तरफ देख रही थी। वह अब कुछ-कुछ निश्चिन्त हो चली थी कि खैर सुहासिनी तो चुप रह सकती है, पर बच्चे कौन-से बडे है, वे होते तो भला कब चुप रहते ?

मामा जी दो मिनट बैठकर उठ गए, बोले—मुझे तैयार होना है। हम शाम को मिलेंगे।

सुजाता बहुत-सी बाते पूछना चाहती थी, ऐसी बातें जिन्हे बेटे से पूछ नही सकती, विशेषकर जबकि बेटा खूबसूरत भगिन को लेकर भागा हो। वह उसका खाना देखती रही और अनुमान कर रही थी, पर ठीक से कुछ अनुमान नही कर पाई यह उन्हे हमेशा के लिए छोडकर आया है या कि अभी कुछ सम्बन्ध बाकी है ? यदि छोडकर आया है, तो कही वे लोग आ जाए और दुश्मन लोग उन्हे मदद दें, तो वे वहा तक क्या

कर सकते है, इस सम्बन्ध मे कानून क्या है ? यदि वे आकर गडबड करे, तो क्या उसका असर विश्वनाथ पर पडेगा या जगन्नाथ की शादी पर पडेगा ? लोग पूछेंगे कि इतने दिन वह कहा था, तो यही कह देंगे जो गाहे-बगाहे कहा करते थे कि इसे वैराग्य हो गया, वह हिमालय चला गया। स्वामी आत्मानन्द वाली अफवाह मे कुछ दम अब भी था, उसे ज़िन्दा करना असभव नही था।

सुजाता ने कहा—कोट कहा सिलवाया ? यह तो नया कोट मालूम होता है ?

पर जगन्नाथ ने उत्तर दिया—मामी जी, तुम्हारा मक्खन बहुत अच्छा है, लाओ, इधर बढाओ।

सुजाता न तो वे बातें पूछ सकी जो पूछना चाहती थी और न वे बातें कह सकी जो कहना चाहती थी। पति की अकाल मृत्यु के कारणीभूत इस लडके पर क्रोध नही आ रहा था, उलटे कुछ ऐसे लग रहा था, जैसे यह लडका स्वय ही मजबूर हो, अपनी प्रवृत्ति के कारण जो उसे उत्तराधिकार मे मिली थी। दोनो थोडी ही देर मे अपने घर चले गए। जाते समय सुजाता देवी ने सारे कमरे घूमकर और देखने के बाद जब कोई नही मिला तो एकाएक खुश होकर भाई की पत्नी से बोली—आज तुम दोनो बच्चो के साथ रात का खाना मेरे यहा खाना। स्कूल से बच्चे आ जाए तो उन्हे पहले ही भेज देना। कहो तो गाडी भेज दू।

१२

अध्यापक विद्यानिवास घर से यही सोचकर चला था कि सुहासिनी पर चोरी का इल्ज़ाम लगा दूगा, पुलिस मे तो नही दूगा, पर जाते ही आज अरुण से सारी बातें खोलकर कहूगा। उससे यही कहूगा कि तुम भी सुहासिनी को महरी के काम से छुडा दो। पर जब अरुण मिला तो रोज की तरह मिला। विद्यानिवास उसके चेहरे को ताड रहा था कि कही कुछ लक्षण तो नही है ? पर बहुत ढूढने पर भी उसे कोई लक्षण दिखाई नही

पडा, तब उसने सोचा कि उसपर अभियोग क्यो लगाऊ। अरुण से सुहासिनी ने कुछ नही कहा, यह मान भी लिया जाए तो वह मेरी पत्नी से नही कहेगी—इसका कोई ठेका नही है। सम्भव है वह मेरी पत्नी से कहे, उस हालत मे स्थिति बहुत ही खराब हो जाएगी। इसलिए उसने स्वय ही सुहासिनी का प्रसग छेडा। बोला—सुहासिनी कैसा काम करती है ? मुझे तो उसका काम पसन्द नही है।

अरुण छूटते ही बोला—क्यो-क्यो ? वह तो अच्छा काम करती है और बेचारी बडी दुःखी है।

विद्यानिवास को सारी बाते मालूम थी, बोला—हा, उसका पति बदमाश है। वह उसे छोड क्यो नही देती ?

अरुण हहराकर हस पडा, बोला—हमारे देश मे पति ही पत्नियो को छोडते रहे हैं। पत्नियो ने तो अब पति को छोडना शुरू किया है।

इसी प्रकार अब बातचीत समाज और समय पर आ पडी। विद्यानिवास को कुछ विशेष कहना नही था, वह तो केवल इन बातो के ज़रिए थाह ले रहा था, बोला—भाई, मुझे तो ऐसा लगता है कि सुहासिनी का चरित्र भी अच्छा नही है।

—क्यो ? क्यो ? क्या कुछ हुआ है ?

—हुआ कुछ नही। होता ही रहता है। मैं यो ही कह रहा था। मुझे कुछ पसन्द नही है। पर आजकल नौकर मिलते नही हैं, इसलिए भले-बुरे का सवाल ही कम उठता है।

दो-तीन दिन तक दोनो मित्रो मे भेंट नही हुई। इस बीच सुहासिनी विद्यानिवास के यहा बराबर काम करने आ रही थी। वह आकर दरवाज़ा खुला रखती और चुपचाप काम करके चल देती। मकान का दरवाज़ा खुला रखना विद्यानिवास को बहुत बुरा लगा, पर उसने सोचा—किसीसे शिकायत करने से तो अच्छा रहा। जब वह घर पर आती थी तो विद्यानिवास अब उसके सामने ही नही आता था। इसी तरह चल रहा था। जब वह जाती थी तो नेपथ्य मे आवाज लगाती थी—दरवाज़ा बन्द कर लीजिए।

और फिर वह चल देती थी।

विद्यानिवास की पत्नी के आने का दिन हो गया था, पर किसी कारण से वह मायके मे और दो-चार रोज़ रुक गई थी। विद्यानिवास को पूरा विश्वास हो गया कि सुहासिनी ने अरुण या रमा से कुछ नही कहा है। वह सोचने लगा कि चलो, सस्ते छूट गया। यदि वह दरवाज़ा खोलकर काम करती है तो करे, पत्नी के आने पर दो-तीन दिन बाद सारी समस्याओ का हल हो जाएगा।

वह अब चौकन्ना नही रहता था और अध्यापक अरुण से साधारण रूप से मिलता था। इतने मे अरुण ने एक दिन विद्यानिवास से गभीर होकर कहा—सुहासिनी ने रमा से बहुत भयकर बात कही है।

विद्यानिवास को ऐसा लगा कि उसके पैर के नीचे से जमीन एकाएक खिसक गई। तो सुहासिनी ने अपने ऊपर हमले की बात भुलाई नही, उसने केवल युद्ध-विराम कर रखा है। शायद उसकी पत्नी के आने की बाट जोह रही है। रमा से कह दिया तो कोई बात नही। रमा उसका क्या बिगाड सकती है। बहुत होगा अरुण के घर जाएगे ही नही। जहा तक अरुण है, उससे सम्बन्ध मे विशेष फर्क नही आएगा क्योंकि वह तो इस मन का रहा है कि अपने डाक्टर माथुर को नई शादी करके सौत लाने के बजाय उस छाया से ही सम्बन्ध रखना चाहिए था, उससे परिवार का सन्तुलन तो न बिगडता। अरुण ऐसा ही विद्यानिवास से कहा करता था, यद्यपि घर मे शायद वह कुछ दूसरा ही कहता था। उससे तो समझ लिया जाएगा और यदि वह भी बिगाड करे, तो कौन मैं उसके अधीन हू, जो वह मेरा कुछ कर लेगा। मै तो आज तक कभी उसके पास किसी काम के लिए गया नही, वही मेरे पास यह करवा दो, यह दिला दो, यह कहता रहा है। असली मुसीबत तो पत्नी पर से टूटेगी। यदि इस बीच सुहासिनी को अलग भी कर दिया तो वह पूछेगी—क्यों अलग किया, उसने क्या बात की थी। फिर किसी दिन रमा के यहा गई तो वहा से तसदीक कराएगी। इस प्रकार से आफतो की एक शृखला-क्रिया जारी रहेगी।

एक क्षण के लिए विद्यानिवास की आखे झपक गई, क्योंकि ये सारे विचार इसी एक क्षण मे उसे चौंधियाते हुए कौंध गए। सभलकर बोला—कैसी भयकर बात?

कहकर उसने अरुण से आख नही मिलाई और दूसरी तरफ आखे करके बोला—कैसी भयकर बात ?

अरुण ने कहा—मनुष्य-स्वभाव बडा ही विचित्र है और मनुष्य का भाग्य भी बहुत ही अद्भुत है। किसका क्या असली रूप है यह समझ मे नही आता। इसी कारण किसी ईरानी दार्शनिक ने कहा है न कि जब तक अन्त न देख लो तब तक कुछ मत कहो।

विद्यानिवास पत्नी के डर से बहुत सिमट गया था, पर उसे एक साथी अध्यापक से इस प्रकार की सीख और उपदेश अच्छे नही लगे। बडा क्रोध आया कि कुछ कर नही पाए, कोई बात नही हुई और उस औरत ने एक बात कह दी, बस उसीको यह ले उडा, न पूछा न ताछा कि भाई तुमने क्या किया और उसकी बाते सवा सोलह आने सत्य मान ली। अदालते भी तो इस तरह से भागा-भाग मे सत्य का निर्णय नही करती। यदि एक छोटा आदमी कोई बात कह रहा है, पर एक प्रतिष्ठित आदमी उसके विरोध मे कहता है, तो उसकी बात मानी जाती है। यही न्याय का तरीका है। ससार मे आदिकाल से यही बात होती रही है। तभी तो समाज चालू है और निरन्तर प्रगति कर रहा है, यदि नीच लोगो की बात मानकर बडो को खामख्वाह जलील किया जाए, तो समाज एक क्षण भी नही टिक सकता। बोला—मनुष्य का स्वभाव अवश्य विचित्र है पर ऋषियो ने कहा है और सही कहा है कि स्त्रियो के चरित्र को देवता भी नही जानते, तो मनुष्य भला क्या जाने!—कहकर उसने पहली बार अरुण से आखे मिलाई क्योकि अब शास्त्र का नैतिक बल उसे प्राप्त हो गया था, बोला—स्त्रियो को खामख्वाह लोगो ने सिर चढा रखा है। मै तो कहता हू कि सुहासिनी के कारण ही उसका पति बद-मारा हुआ है।

अरुण ने कहा—भई, तुम तो बिना पूरी बात सुने ही अपनी टपली बजाना शुरू कर देते हो। मै शास्त्रो की बात नही जानता, पर मनो-विज्ञान की बात जानता हू। स्त्रियो के चरित्र वाली बात बिल्कुल गलत है। पुरुष भी उतने ही दुश्चरित्र है जितनी कि स्त्रिया। बल्कि इस मामले मे तो दोषी पुरुष ही है।

विद्यानिवास समझ गया कि सारी बात खुल चुकी है, इसलिए निराशा के साहस से वली होकर बोला—हू, तो सुहासिनी ने क्या कहा है, मैं भी ज़रा सुनू। और तुम लोगो ने उसे मान भी लिया।

—मानता कैसे नही! उसने रो-रोकर सारी बात बताई।

—रो-रोकर बताने से झूठ थोडे ही सच हो जाता है ?

—नही, सच नही होता, पर मैं भी कुछ समझता हू, सहजात बुद्धि भी कुछ बताती है।

विद्यानिवास ने केवल हू कहा। उसने कहा, जब सब बाते प्रकट हो गई, तो अब व्यर्थ मे तर्क करने से कुछ फायदा नही, अब डटकर लोहा लेना चाहिए। अच्छा रहता, यदि उसी वक्त उसे चोर करार देकर पुलिस के हवाले कर देते। पुलिस वाले अपने ही है, इसके अलावा प्रतिष्ठित व्यक्ति की ही चलेगी, न कि एक नौकरानी की, जिसके पति के सबन्ध मे पुलिस को पता है कि वह अपराध की सीमारेखा पर विचरता रहता है। कम-से-कम एक दफे तो हवालात की दहलीज की हवा देख चुका है।

अरुण की समझ मे नही आया कि विद्यानिवास इस तरह परेशान क्यो हो रहा है? बोला—भई बात यो है कि आज सवेरे वह आई तो उसने कहा कि उसका पति उसे छोडकर बनारस चला गया। उसके भाई और मामा उसे लिवाने आए थे। तब से वह एक बार घर आया था और वहा से रुपये ऐंठकर चला गया। किसीने उसे रेल पर चढते देखा है।

—तो यह बात थी? विद्यानिवास उस गेद की तरह हो चुका था, जिसकी सारी हवा निकल गई थी, पर अब यह जानकर कि बात उसके सम्बन्ध मे नही है, वह खुशी से फूलकर कुप्पा हो गया, उसे इत्मीनान हुआ और बोला—बस, यही बात है न?

—हा। इसे तुम मामूली समझते हो?

—मामूली नही समझता, पर इतनी ही बात है न, और तो कोई बात नही है? यह तो एक दिन होना ही था। बकरे की मा कब तक खैर मनाती?

अरुण को बडा आश्चर्य हुआ कि उसे सहानुभूति सुहासिनी से नही

बल्कि जगन्नाथ से है। बोला—मालूम है, दोनो की बाकायदा शादी हुई है। वह ऐसे छोड गया जैसे कोई सम्बन्ध ही न हो।

विद्यानिवास अकारण हसता हुआ बोला—क्या तुम शादी देखने गए थे ? अरे, सब ऐसे ही कहते हैं। रेल के डिब्बे मे देखा नही है, सब लोग बडे इत्मीनान से जगह के लिए लडते रहते हैं, मानो सब रेल-कम्पनी के दामाद हो, पर जब टिकट कलक्टर आता है तो कई बगले झाकने लगते है और उनकी कलई खुल जाती है। मेरा तो ख्याल है कि शादी-वादी कुछ नही हुई, बदचलन औरत है और वह बदमाश है।

—वह तो कहती है कि जगन्नाथ किसी ऊचे खानदान का है और उसका भाई कोई बहुत बडा अफसर है। उसका मामा भी बडा आदमी है।

विद्यानिवास को अब इस प्रसग मे कोई रस नही रह गया था। उसने घडी देखी और कहा—मेरा ख्याल मैंने बता दिया, अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने।

इसके बाद विद्यानिवास ने जाकर एक अच्छे रेस्तरा मे नाश्ता किया, फिर वह रोज की तरह बस से नही बल्कि टैक्सी से अपने घर पहुचा और एक पुस्तक लेकर पढने लगा। कोई चिट्ठी नही आई थी। अभी कई दिन अकेले रहना था। खैर इतने दिन कट गए तो ये दिन भी कट जाएगे। पढने-लिखने वाले के लिए दिन काटना कोई मुश्किल बात नही है। उसने एक पत्रिका उठा ली और उसे पढने लगा। पढते-पढते बिल्कुल शाम हो गई और उसने बत्ती जला ली।

उसने अभी बत्ती जलाई ही थी कि दरवाज़ा खोलकर सुहासिनी भीतर आई। उसने रोज़ की तरह दरवाज़ा खुला छोड दिया। विद्यानिवास को यह बात पसन्द नही आई। इसका आदमी इसे छोड गया फिर भी यह सती बनती है। बने, इससे कुछ लेना-देना नही है, पर यह दरवाज़ा इस आक्रमणात्मक ढग से खोलकर क्यो रखती है ? यह बहुत ही अपमानजनक है, मानो दरवाज़ा मुह बा कर यह कह रहा है—विद्यानिवास, तुम दुश्चरित्र हो। जबकि सच्चाई यह है कि यह औरत किसी शरीफ आदमी के साथ भागकर आई है। कहती है कि उससे ब्याह हुआ है। सब गप्प है। इसका कोई सबूत नही है। खामख्वाह उस आदमी को

बदनाम करती है। वह पहले शरीफ रहा होगा, पर इसके साथ भागा, इस नाते उसमे जो आत्मग्लानि पैदा हुई उसीके कारण वह शराबी और बदमाश हो गया।

वह धम्म्-धम्म् करके उठा और किताब हाथ मे लेकर ही उसने जाकर दरवाजा बन्द कर दिया। सुहासिनी ने यह देखा, पर वह कुछ बोली नही, कुछ चौकन्नी ज़रूर हो गई।

वह पूर्ववत् अपना काम करने लगी। विद्यानिवास उसके सामने आकर खडा हो गया और बोला—मैने सुना जगन्नाथ तुम्हारा पैसा लेकर भाग गया है?

सुहासिनी बर्तन माजती रही, उसने कुछ नही कहा, पर विद्यानिवास ने कहा—छोड गया तो छोड गया, तुम परेशान क्यो हो? दुनिया मे मर्दों की कमी थोडे ही है।

सुहासिनी बर्तन माज चुकी थी और अब उन्हे धो रही थी। एक-एक करके उसने बर्तन धोए, फिर उन्हे भीतर ले जाकर रखा। चूल्हा जलाने जा रही थी कि विद्यानिवास ने कहा—कोई ज़रूरत नही, मै खाकर आया हू।

पत्नी को और रिश्तेदारो को खुश रखने के लिए उसे स्वय पाक का ढोग रचना पडता था। बहुत प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल के होने के कारण यह समझा जाता था कि होटल का खाना ठीक नही है और दिल्ली मे मिलने वाले पहाडी नौकरो की जाति का कोई पता नही, क्योकि पूछने पर सभी अपने को ऊची जाति के बताते है।

विद्यानिवास कभी-कभी नाम के वास्ते खाना पका लेता था और वह शाम के समय अक्सर कही खा आता था या दूध, फल, डबल रोटी बिस्कुट आदि खाकर सो जाता था। उसे यह सब ढोग बिल्कुल पसन्द नही था। पर करना पडता था। बोला—आज मै खा आया हू, रात को दूध पी लूगा, तुम रहने दो।

सुहासिनी ने स्टील की डेगची मे दूध चढा दिया और जाने लगी, विद्यानिवास ने कहा—जब तुम्हारी शादी हुई है, तो वह भाग कैसे गया? तुमने उसे भागने क्यो दिया?

इसपर सुहासिनी कुछ कह न सकी और आगे वढ गई। पता नही इस बीच क्या-से-क्या हुआ—सुहासिनी ने एकाएक देखा कि वह विद्यानिवास के आलिगन मे है और विद्यानिवास पागल की तरह उसे चुम्बन कर रहा है। क्या हो रहा है, समझ पाते ही सुहासिनी ने विद्यानिवास के कन्धे का जो भी हिस्सा दात के सामने आया उसे बडे जोर से काट लिया। विद्यानिवास दर्द से छटपटाकर अलग हो गया, बोला—देखो मै जवरदस्ती नही करता, पर तुम अच्छी तरह सोच लो कि तुम्हारी स्थिति क्या है। वह तो बडे आदमी का बेटा था, वह तो चला गया, अब लौट के नही आने का। तुम मान जाओ। यही नौकरी करती रहो, मै तुम्हे ऊपर से सौ-पचास रुपये देता रहूगा। जब-तब मौका निकालकर मिलूगा। सोचकर देखो, क्यो वेकार मे जिन्दगी खराव करती हो ?—कहकर उसने काटे हुए स्थान मे हाथ लगाया तो वहा से थोडा-थोडा खून निकल रहा था, वोला—तुमने यह क्या किया ? अब मै वीवीजी को क्या जवाब दूगा ? ये दाग तो साफ-साफ दातो के दाग हैं, इन्हे मै और कुछ तो कह ही नही सकता। तुमने यह क्या किया ?

कहकर वह अब की वार क्रोध के आवेश मे उसकी ओर लपका और उसे गिराकर ज़मीन पर डाल दिया, वोला—मेरी वात मान जाओ, नही तो मुझपर आज जनून सवार है। मै किसी वात की परवाह नही करता।

सुहासिनी धक्के से गिर पडी थी, पर वह फौरन नागिन की तरह खडी हो गई। वोली—अभी दरवाज़ा खोल दो, नही तो मै चिल्लाती हू तुम्हे सीधे जेल जाना पडेगा।

जेलखाने का नाम सुनकर विद्यानिवास को होश आया कि मै गृहस्थ हू, समाज का स्तम्भ हू, और कुछ नही तो मेरा कन्धा ही मेरे विरुद्ध गवाही देगा। उसने जिस तेज़ी से सुहासिनी को गिरा दिया था, उसी तेज़ी से वह उसके पैरो पर गिर पडा और वोला—सुहासिनी, तुम मेरी मा हो, मेरी रक्षा करो। जितने रुपये चाहो ले लो, पर तुम मुझे क्षमा कर दो, नहीं तो मै कही का नही रहूगा।

सुहासिनी इसपर कुछ नही वोली। वह पैर छुडाकर चुपचाप

बाहर निकल गई। इतने मे दूध जलने की भयकर बदबू चारो तरफ फैल गई, और विद्यानिवास रसोई की तरफ दौडा। उसने गुस्से मे, पता नही यह किसपर गुस्सा था, उबलती हुई डेगची पकडकर चूल्हे मे सारा दूध डाल दिया। एक दफे जोर से छन्न की आवाज हुई और बदबू तेज हो गई। उसी हालत मे बाहर से दरवाजा बन्द करके विद्यानिवास अरुण के यहा पहुचा। वहा उसने बडे तपाक से कहा—आज मेरा दूध जल गया। इसलिए खाना यही खाऊगा।

रमा ने उसका स्वागत किया। जब रमा भीतर चली गई तब विद्यानिवास ने कहा—भई तुमने दोपहर को जो बात कही थी, मै उस-पर बहुत सोचता रहा। यो तो मैने सुहासिनी के विरोध मे बहुत कुछ कहा था, पर मुझे लगता है कि हमारे समाज मे स्त्रियो के साथ बहुत अन्याय होता है, इसलिए इसका डटकर मुकाबला करना चाहिए।

मुकाबला कैसे किया जाए ? जगन्नाथ तो उसे छोडकर चला गया, अब हम उसका क्या बिगाड सकते है ? यही है कि अब वह भूखो न मरे।

—नही, नही, यह कोई बात नही हुई। उस बदमाश का पीछा करना चाहिए। वह अपनी स्त्री के साथ अन्याय करेगा और हम लोग जो समाज के स्तम्भ हैं, अध्यापक हैं, उसे देखते रहेगे ? यह बात गलत है।

अरुण की यह समझ मे नही आया कि यह कहना क्या चाहता है। हम जबर्दस्ती जगन्नाथ को वापस नही ला सकते। फिर इसके माने क्या हुए ? बोला—जगन्नाथ तो फुर्र से उड गया, अब उसका पीछा कैसे किया जाए ? शादी हुई भी तो उसका प्रमाण कौन देगा ? सैकडो बखेडे है। मै कुछ नही सोच पाता।

विद्यानिवास बोला—तुम तो हमेशा नेगेटिव आदमी रहे। इस समय देश को पाजिटिव आदमियो की जरूरत है, तुम चाहो तो सब कुछ कर सकते हो।

अरुण फिर भी बोला—मै कुछ नही कर सकता, इतना ही सोचा है कि उसे और एकाध घर मे नौकरी ढूढ दूगा। उसके बच्चो को स्कूल लायक होने पर स्कूल मे भरती करा दूगा।

विद्यानिवास जैसे सोचने लगा, फिर बोला—देखो, इससे कुछ नही होने का, यह तो हमेशा से हो रहा है। दो-चार दिन बाद वह गुण्डो के हाथ पडेगी और फिर सारे किए-कराए पर पानी फिर जाएगा। इसलिए उचित यह है कि कल सवेरे ही तुम उसे रेल से रवाना कर दो। वह काशी जाए और वहा चलकर जगन्नाथ का जीवन दूभर कर दे, उससे वह दाम्पत्य-अधिकार मागे। माना कि इसमे खर्च है सो मै इसके लिए दो सौ रुपये ले आया हू। तुम्हे दिए जाता हू। तुम चाहो इसमे पचास मिला दो, नही तो तुम उससे कहना कि जाकर पता दे और वकील आदि के खर्च के लिए जो कुछ भी होगा मैं चन्दा करके भिजवा दूगा। क्या लगेगा, बहुत लगेगा तो पाच सौ। मैं खडे-खडे इतना चन्दा कर दूगा। पर वह सवेरे ही रवाना हो जाए, नही तो वह बदमाश जगन्नाथ कही दूसरी शादी न कर ले।

अरुण को यह कार्यक्रम पसन्द नही आया। उसके दिमाग मे यह ख्याल आ रहा था कि महरी ढूढनी पडेगी और तमाम आफत होगी, पर रमा को यह कार्यक्रम बहुत पसन्द आया, बोली—भाई साहब ठीक कह रहे है। तकलीफ तो मुझे मिलेगी और भाई साहब को भी, पर जिस कार्य मे तकलीफ न मिले, वह सत्कार्य है ही नही। तुम अभी इनके साथ जाओ और उसे सवेरे ही मेल से रवाना कर दो।

विद्यानिवास नम्रता के साथ बोला—मैं बिल्कुल गुमनाम रहना चाहता हू। मै तो यहा तक चाहता हू कि मैं जो रुपये दे रहा हू, उनका पता मेरी पत्नी को भी न हो। अरुण भाई, तुम्ही चले जाओ।

अरुण ने कहा—इतनी जल्दी क्या है ? कल जब आएगी तो उसे समझाएगे। क्या पता वह राजी ही होगी ? कही वह बनारस गई और उसे वहा और भी मुसीबत पडी तो ?

विद्यानिवास जैसे समाधान तश्तरी मे लेकर बैठा ही हुआ था—वाह ! इसमे क्या है, अगर वहा मामला ठीक नही हुआ तो वह लौट आए हम लोग टी० एम० ओ० से पैसा भेज देगे। बस वह एक पोस्ट-कार्ड भेज दे।

रमा ने कहा—ठीक तो कह रहे है। इस काम मे देर नही करनी

चाहिए। जब उसने एक छोटी जाति की लडकी से शादी की तो उसे सब बाते सोच लेनी चाहिए थी। उस वक्त तो सौन्दर्य पर लट्टू हो गए और अब मामा और भाई आए तो बस लौटने को तैयार हो गए। अगर तुम्हे अकेले जाते तकलीफ है तो चलो मै मुन्ना को लेकर चलती हू। पचास रुपये हम भी दे देते है।

अब अरुण के सामने कोई रास्ता नही रहा, क्योकि वही सुहासिनी का सबसे ज्यादा तरफदार था। उसे बुरा लगा कि बहुत जल्दी हो रही है, जैसे कोई षड्यन्त्र-सा लगा, पर वह हर तरीके से कायल हो चुका था। अजीब बात है कि यह रमा पट्टी मे आ गई। यह तो अपने अकेले प्राणी है, जाकर होटल मे चर आएगे, चरते ही हैं, केवल पत्नी के लिए ढोग करते हैं। अण्डा उबालकर खा लिया, दिखाने के लिए दाल चढा दी, फिर खोल के रख दिया ताकि उसे बिल्ली पी जाए। यह सब विद्यानिवास खुद बता चुका है। पर रमा को अपनी बात तो सोचनी चाहिए थी। खैर अपने लोग भी होटल की रोटी तोड सकते थे, पर मुन्ना जो है।

पर जिस प्रकार दरिद्रो का मनोरथ मन मे ही घुलकर रह जाता है उसी प्रकार से वह चुप रहा, फिर जब सब लोग स्वार्थ त्याग करने पर उधार खाए हुए मालूम होते थे, उस समय स्वार्थी बनना उसे अच्छा लगा।

वह रमा और मुन्ना के साथ रवाना हो गया।

अगले दिन रमा, अरुण और मुन्ना स्टेशन पर सुहासिनी और उसके बच्चो को विदाई दे रहे थे। जब गाडी ने सीटी दी तो सुहासिनी रो पडी। रमा का मन उसे कचोट रहा था कि वह सारा श्रेय अरुण और उसे दे रही है। वह बोली—तुम यह न समझना कि हम ही लोग सारा खर्चा कर रहे हैं। विद्यानिवास जी ने भी इसमे काफी हाथ बटाया है।

गाडी तब तक सरकने लगी थी। सुहासिनी समझ नही पाई कि बात क्या है। वह कुछ पूछना चाहती थी, पर गाडी तेज हो गई थी।

१३

नीरा के अस्पताल जाने मे हिसाब से अभी कई दिन रहते थे, तभी जया को डाक्टर माथुर का यह सन्देश मिला कि मा-बेटी दोनो को नीरा के साथ ही अस्पताल जाना है। जया तो आग-बबूला हो गई। उसने मन मे जो आशा की बेल बो रखी थी, वह इस सन्देश की तेज़ आच से एकदम कुम्हलाकर झुलस गई। उसने इसमे सौत की कुरूप चाल देखी, जिसे काटना असम्भव था। उसे पहली बार तब अपनी असहायता का अनुभव हुआ था, जब डाक्टर माथुर ब्याह कर सौत ले आए थे। वह बिना मेघ का वज्रपात लगा था। अब ऐसा लगा जैसे हाथ-पैर जकड-कर बाध दिए गए और उसी अवस्था मे सुलगती आच के हवाले कर दी गई। एक बार तो उसको बहुत तैश आया और वह उठकर डाक्टर माथुर से लडने के लिए जाने को हुई, पर तुरन्त ही इला को देखकर सम्हल गई। उसे लगा कि झगडा किया जा सकता है, अगर झगडा करने का कभी उचित अवसर हो सकता है तो यही अवसर है, इससे अच्छा अवसर नही हो सकता, पर यह झगडा ऐसा है जो इला के सामने नही किया जा सकता और न नीरा के सामने। पराजय तो सुनि-श्चित थी, इसलिए इससे नीरा को केवल खुशी ही होती। वह देखती कि सौत का अपमान हो रहा है। वह खिलखिलाती और शायद स्वय भी आकर कुछ तडका लगाती। इससे कुछ भला न होता। इस कारण वह और एक खून का घूट पीकर चुप रह गई, जिससे उसका सारा अस्तित्व नीचे तक हिल गया। वह कुछ नही बोली, फिर अन्त मे शायद किसी तरह भाप को निकालने के लिए बोली—अभी तो समय दूर है, देखा जाएगा।

इला अपने ही कष्ट मे घुल रही थी बोली—मुझे क्यो जाने को कह रहे है ? मुझे क्या तजर्बा है ?

जया जानती थी कि इला को क्यो जाने को कहा गया था। इस-लिए कि वह घर पर रहकर कही पिता से फिर दोस्ती न कर बैठे। फिर से वह एक लडकी से बेटी न हो जाए, पर जया बोली—पहली

बार जब कोई कुछ करता है तो उसे तजर्बा कहा होता है ? होते-होते ही होता है।

इला बोली—मै तो नही जाऊगी।

जया को बेटी की यह जिद्द अच्छी भी लगी और नही भी लगी। जब बाप बेटी करके मानता ही नही, केवल एक नौकरानी की मर्यादा देता है तो फिर उस मामले मे अडना कहा तक उचित है, पर न अडे तो भी तो काम नही बनता। अनधिकारी लोग सारे अधिकार छीनते जा रहे हैं। कही पर दीवार से पीठ लगाकर ही सही, उनसे लोहा तो लेना ही पडेगा। इस तरह उनकी धमकी मे घुल जाना, नमक की तरह, उचित नही है।

जया सोचने के लिए समय चाहती थी। उसने उस दिन प्रसाधन नही किया और कमरे के बाहर नही गई। एक बार मन हुआ कि मा-बेटी अभी सम्भव हो तो सामान लेकर और न सम्भव हो तो बिना सामान के अरुण के यहा चली जाए और फिर कभी लौटकर न आए। यह तो स्पष्ट था कि अब इस घर मे रहने की गुजाइश नही थी।

जया ने उस दिन खाना नही खाया, बेटी से कह दिया कि मेरी तबीयत अच्छी नही है। बेटी ने समझाया कि इस प्रकार का अभिमान तो तभी किया जाता है, जब उधर कोई कद्र करने वाला हो। पिता जी को तो पता ही नही लगेगा कि तुमने खाना नही खाया और नीरा खुश होगी।

इला अपनी सौतेली मा को कभी मा नही कहती थी। सच तो यह है कि उसने कभी उसे पुकारा ही नही था और निजी तौर पर उसका उल्लेख हमेशा नीरा करके करती थी। बोली—नीरा को तो खुशी ही होगी कि तुमने खाना नही खाया। मै तो जरूर खाऊगी और तुम्हारे हिस्से का भी खाऊगी।

मा ने बेटी की तरफ देखा और उसके मन मे दर्द भरी ममता जाग उठी, पर वह कुछ बोली नही, क्योकि जो कुछ बोलना चाहती थी, उसका प्रदर्शन वह बेटी के सामने करना नही चाहती थी। बेटी बहुत अपनी होने पर भी, और अब एकमात्र सहारा होने पर भी, उसके सामने भी अपनी

मर्यादा और इज्जत की रक्षा करनी ही थी। फिर जब इतने वर्षों तक जिसकी पत्नी रही, वही अपना नही रहा, बिल्कुल गैर हो गया, तो आधार ही टूट गया। वह बोली—जाओ, तुम अपने समय पर खाना खा लेना। मुझे इच्छा नही है।

दिन भर भूखी रहकर सन्ध्या के लगभग वह अरुण के यहा गई और वहा उसने जो नई बात हुई थी, वह बताई। वह बात तो रमा से कर रही थी, अरुण कुछ दूर बैठकर अखबार या कोई मासिक पत्रिका पढ रहा था। अरुण ने एकाएक कहा—मौसी, मैंने तो पहले ही कहा था कि आप वह घर छोड दे, पर आपने माना नही और असम्भव आशा के मोह मे जकडी हुई पडी रही। जिस दिन नीरा बहू बनकर आई, उसी दिन आप का सारा सम्बन्ध खत्म हो गया ··

मौसी कुछ क्षण तक चुप रही, फिर बोली—तुम जो कह रहे हो, वह ठीक है, पर मुझे तो सिखाया गया था, बचपन से रटाया गया था कि जन्म-जन्मान्तर का सम्बन्ध है, इसलिए मैं समझती थी कि शायद सुबह का भूला शाम को घर लौट आए।

अरुण ने व्यग्य के साथ कहा—जिन ऋषियो ने जन्म-जन्मान्तर का सम्बन्ध वाले सिद्धान्त का प्रचार किया, वे स्वय दस-दस शादिया करने वाले थे। बाद को चलकर स्त्रिया पुरुष के साथ सती होने लगी। यदि स्त्री का सती होना ठीक है, तो मर्द को भी सता होना चाहिए था, पर सारे इतिहास मे एक भी उदाहरण ऐसा नही मिला, जिसमे हिन्दू पति अपनी मरी हुई पत्नी के साथ चिता पर चढ गया हो। यह सारी सभ्यता ही स्त्रियो को दबाने के लिए और पुरुषो को मनमाना करने की इजाजत देने के लिए प्रस्तुत हुई है। जन्म-जन्मान्तर का सम्बन्ध नही बाक है।

रमा समझ नही पाई कि वह पति के इन वचनो से खुश हो या नाखुश। जहा तक इन वक्तव्य ने स्त्रियो के साथ न्याय की बात कही गई थी, वहा तक यह प्रिय था पर इनसे यह जो कहा गया था कि सम्बन्ध अस्थायी है, उससे क्या यह भी प्रमाणित नही होता कि अरुण और रमा का सम्बन्ध उसी प्रकार अस्थायी है जैसे डाक्टर माथुर और

मौसी का सम्बन्ध । स्वतन्त्रता की रोशनी अच्छी लगी, पर उसमे जो चौंध थी, उससे आख बन्द हो गई, बोली—तुम मौसी को बेकार के सिद्धान्त न बताओ । उन्हे तुम अपने छात्रो के लिए रख छोडो । यह बताओ कि अब वह क्या करे ? मैं तो समझती हू कि वह अभी अपना सामान यहा ले आए, चार-छ -दस दिन मे सुरेश को घर मिल ही जाएगा, तब वहा चली जाएगी ।

अरुण ने मुह के सामने से पत्रिका हटाते हुए कहा—मैंने तो बहुत पहले ही यह प्रस्ताव रखा था । मौसी अब वहा जाए ही न । मैं ही इला को सामान के साथ ले आता हू ।

पर मौसी बोली—अभी जल्दी क्या है ! मैंने दिन-भर कुछ खाया नही है । कुछ खा-पीकर तब सोचूगी । सुरेश की चिट्ठी भी उसी पते से आती है । इतना आसान नही है ।

अरुण कुछ तैश मे खडा हो गया, बोला—मौसी, आप तो कभी कुछ न कर पाएगी । पता नही आप किस तत्त्व की बनी हैं कि आपको कोई अपमान लगता ही नही ।

अब रमा ने मौसी का पक्ष लिया, बोली—मौसी कर ही क्या सकती है । तुर्की-बतुर्की जवाब तो तब होता जब कि मौसी भी दूसरी शादी कर लेती । पर क्या हमारे समाज में यह सम्भव है ? बहुत कम स्त्रिया दूसरी शादी कर पाती है

मौसी ने बीच मे ही बात काटकर आज्ञामूलक ढग से कहा—मैं दूसरी शादी करने की बात सोच नही सकती

चाय आदि बहुत पहले ही पी जा चुकी थी, मुन्ना टहलने चला गया था । फिर से चाय हुई और मोटे-मोटे गरम पराठे तैयार किए गए । मौसी ने हाथ बटाया । जब खाना-पीना हो चुका और मौसी का पीला पडा हुआ चेहरा कुछ लाल पडा, तो अरुण ने कहा—आपने क्या तय किया, क्या मैं सामान ले आऊ ?

मौसी बोली – सामान लाने से ही काम खतम नही होगा । मुझे उनके पैर छूकर घर से निकलना है । जिस घर मे वधू के रूप मे लगभग बीस साल पहले आई थी, उससे बिना किसी प्रकार कहे-सुने तो नही निकल सकती ।

सुनकर पति-पत्नी दोनो ने दृष्टि-विनिमय किया जैसे पागल की बात सुनकर करते है, फिर भी इसपर किसीको कुछ कहने का साहस नही हुआ क्योकि दोनो को ऐसा लगा कि वे एक ऐसे तत्त्व के सामने है, जिसकी भाषा वे समझते नही है, पर जिसकी वे अवहेलना या अवज्ञा नही कर सकते। दोनो चुप हो गए। मौसी कुछ देर और बैठी रही, मुन्ना आ गया और फिर तो वही सारी बातचीत का केन्द्र बन गया। लौटकर बातचीत फिर पहले के प्रसग पर गई ही नही। इला आकर अपनी मा को ले गई।

दो-तीन दिन बाद अरुण कालेज से लौटा तो उसने बताया—अध्यापक चावला ने विश्वविद्यालय मे यह खबर फैलाई है कि डाक्टर माथुर ने अपनी नई बीवी के साथ मिलकर अपनी पुरानी बीवी और बेटी को निकाल दिया है। निकाल क्या दिया होगा, वे तो खुद ही चली गई होगी, पर आश्चर्य है कि वे हमसे मिलकर नही गई।

रमा ने कहा—बहुत मानसिक कष्ट मे गई होगी, इसलिए नही मिल पाई होगी। खैर वह चली गई, अच्छा हुआ। इस दुखद पर्व का जितना जल्दी अन्त होता, उतना ही अच्छा है।

—हा, पर चावला बडा बदमाश है। उसने यह फैलाया कि नीरा ने और डाक्टर माथुर ने मिलकर मौसी की मरम्मत की। इला बीच मे पडी तो उसे भी मारा, कुछ भी सामान नही दिया और रेल के तीसरे दर्जे का किराया देकर टैक्सी पर बैठा दिया। चावला तो कहता था कि पुलिस मे रिपोर्ट भी हो चुकी है, पर मुझे विश्वास नही है।

रमा को एकाएक जाने क्या हुआ, बोली—तुम्हे तो हर हालत मे डाक्टर माथुर का पक्ष लेना है। इसलिए तुम्हे कुछ विश्वास नही होता। उस दिन भी तुम मौसी को घर छोड देने की सलाह इसलिए दे रहे होगे कि डाक्टर माथुर का मार्ग निष्कटक हो जाए और वह निर्विघ्न होकर नीरा के साथ मौज उडाए। तुमने भी अपने लिए शायद कुछ ऐसा ही सोच रखा होगा।

अरुण को बडा दुख और उससे भी अधिक आश्चर्य हुआ कि रमा एकाएक ऐसे फट क्यो पडी। बोला—डाक्टर एक प्रतिष्ठित अध्यापक

हैं और मौसी ही के नाते उनसे मेरी घनिष्ठता हुई थी। मुझसे डाक्टर माथुर ने दूसरी शादी करने के पहले कभी यह नही पूछा कि मैं दूसरी शादी करूं या न करूं। पर उनके दूसरी शादी करते ही मैं चावला का दोस्त बन जाऊ और उनके विरुद्ध विश्वविद्यालय मे षड्यन्त्र करूं यह मेरी समझ मे नही आता। मैं व्यक्ति के रूप मे चावला को बहुत ही घटिया आदमी मानता हू क्योकि वह तरक्की के लिए ठोस कार्य पर विश्वास नही करता, वह हर समय किसी पेच मे डालकर अपने ऊपर वालो को लगडी मारने मे विश्वास करता है।

—पर चावला ने जो बात कही, वह सब झूठ है, ऐसा क्यो मान लेते है? सम्भव है जाते समय कुछ तकरार हुई हो और बात बढ गई हो। तुम यह क्यो समझते हो कि डाक्टर दूध के धुले है और वह कभी अन्याय नही कर सकते।

अरुण बोला—हमारे मित्रो मे शरीफ भी है और रजील भी हैं। देखा नही कि अध्यापक विद्यानिवास कितने उदार-हृदय निकले कि उन्होंने बात-की-बात मे एक अनाथ स्त्री की मदद करने के लिए दो सौ रुपये निकाल दिए और अपनी पत्नी तक को इसकी खबर लगने नही दी।

रमा कुछ न पाकर बोली—यह भी उनकी गलती है। यह उनका ख्याल ही है कि उनकी पत्नी उनसे कम उदार निकलती। सम्भव है, वह और ज्यादा पैसे देती। मुझ ही को देखो कि मैंने पचास रुपये निकाल-कर दे दिए, यद्यपि इस महीने बहुत जरूरत थी।

अरुण झगडा करना नही चाहता था। इसलिए उसे जो राह दिखाई पडी, वह उसीमे प्रविष्ट हो गया और बोला—सब स्त्रियां तुम्हारी तरह नही होती और फिर यह मेरा मामला नही है। वह कोई बात अपनी स्त्री को बताना नही चाहते तो हमारा कर्तव्य यही होता है कि हम भी उसे गुप्त रखे। मै तो यही नही समझता हू।

रमा फिर भी सन्तुष्ट नही हुई। असल मे उसे यह खबर बहुत बुरी लगी थी कि मौसी बिना बताए चली गई। इसलिए वह बारी-बारी से डाक्टर माथुर और विद्यानिवास पर तोपखाना लगाती रही। वह मौसी की यात्रा के विषय मे और भी बातें जानना चाहती थी, पर जानने का

कोई उपाय नही था। डाक्टर माथुर के घर जाना नही चाहती थी, क्योकि अब उनसे कोई सम्बन्ध ही नही रह गया। यदि रह गया तो मौसी के नाते दुश्मनी का, यद्यपि अरुण विश्वविद्यालय मे डाक्टर माथुर के मित्रो मे था।

रात तक यह चख-चख रुक-रुककर आने वाली वर्षा की तरह चलती रही। यहा तक कि अरुण को अफसोस हो रहा था कि मैंने बेकार मे खबर बताई। जब यह झगडा देर तक चलता रहा तो अरुण ने खाते समय गम्भीर होकर कहा—मैं तुमसे पहले भी कह चुका हू और अब भी कहता हू कि विश्वविद्यालय मे मैं डाक्टर माथुर से दोस्ती रखूगा या डाक्टर चावला से, इसका निर्णय न तो मौसी करेंगी और न तुम। खैर, अब तो मामला खत्म हो गया, पर मैं एक साफ बात कहे देता हू कि इस सम्बन्ध मे मैं किसी प्रकार का बाहरी या भीतरी डिक्टेशन सुनना नही चाहता।

—तुम सिर्फ स्वार्थ देखना चाहते हो, किस बात से तुम्हे लाभ होगा किस बात से तुम्हारी तरक्की होगी, यही तुम्हे देखना है, जैसे ससार मे और कोई मूल्य या मान्यता हो ही नही। तुम अध्यापक विद्यानिवास को अपना दोस्त मानते हो, तुम उनसे कुछ तो सीखते।

अरुण को बहुत क्रोध आया कि डाक्टर माथुर ने मौसी को निकाला या पता नही निकाला या नही निकाला, और यह मुझपर गुस्सा उतार रही है। मानो मैं ही डाक्टर माथुर का पारिवारिक सलाहकार होऊ। वह नाराज होकर बोला—तुम ऐसे बातें कर रही हो मानो मेरी तरक्की तुम्हारी तरक्की न हो, मेरा स्वार्थ तुम्हारा स्वार्थ न हो। यह बहुत अजीब बात है कि तुम मेरी मित्रताओ पर घर बैठे हुक्म चलाना चाहती हो और जब मैं तुम्हारी बात मानने से इन्कार करता हू, तो तुम हमे स्वार्थी बता रही हो। यह बहुत ही अद्भुत बात है। मैं कोई खुदाई फौज-दार नही हू कि कौन सच्चरित्र है और कौन दुश्चरित्र है इसपर लडता फिरू। और सच तो यह है कि डाक्टर माथुर ने न तो कोई गैरकानूनी काम किया और न अनैतिक कार्य किया। पश्चिम मे तो ऐसी बातो की तरफ कोई ध्यान ही नही देता, जैसे इस बात पर कोई ध्यान नही देता

कि तुम कौन-से दर्जी से कपडे सिलाते हो या चावल खाते हो या डबल रोटी।—कहकर अरुण स्पष्टत रोज से कम खाकर एकाएक मेज पर से उठ गया और हाथ धोकर सोने के कमरे मे चला गया।

रमा ने आगे कुछ नही कहा। खाते वक्त स्वार्थी आदि नही कहना चाहिए था, यह उसे ख्याल आया, पर वह भी नही दबी और पति-पत्नी दोनो दीवार की तरफ मुह करके सो गए। अरुण तो थोडी ही देर मे सो गया, पर रमा देर तक जागती रही।

१४

दो-एक दिन तक सुजाता देवी अपने लौटकर आए हुए बेटे जगन्नाथ का इस प्रकार से खुले और गुप्त रूप से निरीक्षण करती रही जैसे पागलखाने मे आए हुए रोगी का डाक्टर निरीक्षण करता है। वह बहुत कुछ पूछना चाहती थी पर पूछ नही सकी, न पूछ सकती थी। सुहासिनी अब देखने मे कैसी हो गई है, क्या वह पहले की तरह सुन्दर है, सुन्दर तो अब क्या होगी, बर्तन माजती है। उसके दो बच्चे बाप पर गए कि मा पर? आगे वह इस सम्बन्ध मे सोचना नही चाहती थी, क्योंकि यह सोचते ही कही पर कोई नाडी करकराने-किटकिटाने लगती थी, जिसे वह समझती नही थी और न समझना चाहती थी। जगन्नाथ क्यो आया है? क्या वह हमेशा के लिए नाता तोडकर आया है या फिर लौट जाएगा? अब भला वह क्या लौटेगा! उस वक्त जवानी के आवेश मे उसने गरीबी स्वीकार कर ली थी। मन पर यह चक्की चलती थी यह सोचकर कि वह मिल मे लोगो को पानी पिलाता था। अब खुमार खत्म हो गया है। उसका तो एक-एक कदम रईस का है। भाई से कही ज्यादा शौकीन है। मामा का कोट वेटग्रा करके लौटा चुका है। कई चीजे सिलने दी है। बिल्कुल अपने बाप की तरह शौकीन है, जब कि बेचारा विश्वनाथ बहुत सीधा-सादा है, यद्यपि उसे बडा अफसर होना है और किसी बडे आदमी की बेटी से शादी करनी है। यहा पर आकर फिर एक बार

मा का हृदय ममता से गीला पड जाता था बल्कि उसमे से कतरे-कतरे करके खून मिला पानी निकलता था। राय साहब ने तो भगिन की बेटी को लेकर भागने वाले मामले को पुलिस से मिलकर सात हाथ नीचे दबा दिया था, पर पता नही मुहल्ले वाले, रिश्ते-नाते वाले कितना जानते है। विश्वनाथ की शादी मे तो कोई दिक्कत नही हो रही है, बल्कि प्रस्तावो का एक ताता लगा हुआ है। आई० ए० एस० होते ही प्रस्तावो का दृष्टिस्फोट हो गया।

क्यो न इन्ही प्रस्तावो मे से किसीको इधर फेर दिया जाए और इसकी ठीक से शादी कर दी जाए। नौजवानी मे इसने जो कुछ घाट-कुघाट किया, पिआ, कर लिया, अब तो अपनी नाव को ठीक से अच्छे घाट पर भिडाए। उस दिन से वह मौका देखकर यह भी कहने लगी—पहले बडे भाई की शादी हो जाए फिर छोटे भाई की शादी होगी।

कइयो को तो बडे भाई के अस्तित्व का पता ही नही था, तब सुजाता देवी को बताना पडता—पढते-पढते इसके बडे भाई को एकाएक वैराग्य सूझ गया और तपस्या करने जाने अमरनाथ या बदरीनाथ कहा चला गया। अब लौटा है।

प्रस्तावो मे से किसीने इस सम्बन्ध मे इससे अधिक दिलचस्पी नही दिखाई। कोई भी बाप अपनी बेटी का व्याह इस प्रकार सन्यासी बने हुए या सन्यास से लौटने वाले व्यक्ति से करना नही चाहता था। सब अपनी लडकी का व्याह आई० ए० एस० से करने को उत्सुक थे और इसके लिए मोटी से मोटी रकम देने को तैयार थे। अभी सुजाता देवी ने बेटे के मन की थाह तो पाई ही नही थी, फिर भी वह प्रस्तावको के मन की थाह लेती रही और यह देखकर कि कोई भी उनके बडे बेटे मे, यह कहे जाने पर भी कि सम्पत्ति दो हिस्सो मे बटेगी, दिलचस्पी लेने को तैयार नही है, वह मन मारी हो जाती थी।

न मा ने जगन्नाथ के मन की थाह पाई और न बेटे ने मा के मन की थाह पाई। इसी तरह कई दिन निकल गए तब विश्वनाथ ने एक दिन मा से कहा—भैया तो रोज शराब पीते है

सुजाता देवी मानो इसी अनगल की आशका कर रही थी। छोटे

बेटे के सामने बडे बेटे का समर्थन करती हुई बोली—पीते तो आजकल सभी है, उसने और कोई गडबड तो नही की ?

विश्वनाथ ने कहा—नौकरो ने गुसलखाने से बोतलें बरामद की हैं। मैने और कुछ पूछा नही, तुम पूछ लेना।

सुजाता देवी देर तक घुलती रही पर किसी नतीजे पर नही पहुच सकी। वह पहले यह समझ रही थी कि जगन्नाथ नए सिरे से अपने जीवन का निर्माण करना चाहता है, पर अब वह आशा चकनाचूर हो गई। उनकी धारणा थी कि जब पी रहा है तो फिर ऊधम भी करेगा। यदि इसकी शादी करा दी गई, तो सम्भव है कुछ रोकथाम हो, पर स्थायी रूप से रोकथाम हो नही सकती, यह तो स्पष्ट है। वह कई दिनो तक, सिवा खाने की मेज पर, जगन्नाथ से मिली ही नही। यही एकमात्र प्रतिवाद का तरीका था, जो वह अपने पति के साथ इस्तेमाल करती थी। पर फर्क यह था कि जगन्नाथ के क्षेत्र मे प्रतिवाद बिल्कुल निरर्थक रहा क्योकि उसने इसपर ध्यान ही नही दिया।

अब सुजाता देवी स्वय मौका पाते ही जगन्नाथ के बाथरूम मे सवेरे चुपके से घुस जाती थी और यदि वहा कोई बोतल होती तो उसे साडी के अन्दर छिपाकर ले आती थी और उसे गोदाम मे बन्द कर देती थी। यही इस परिवार का नियम था—छिपाओ, छिपाओ, छिपाओ, सब कुछ छिपाओ। भीतर कुछ भी हो जाए, पर ऊपर से किसीको पता न लगे। राय साहब शराफत की इस पिटी-पिटाई लीक को पीटते-पीटते मर गए और सुजाता देवी ने तो इसमे हद ही कर दी थी कि उन्हें राय साहब की प्रेमलीला का पूरा पता था, पर वह उसे खून का घूट पीकर दबा जाती थी। इतना दबा जाती थी कि लगभग अपने को भी उसका पता नहीं देती थी।

अभी तीन बोतलें जमा हुई थी। इस घर मे बोतलो का प्रवेश पहली बार था। इस जगन्नाथ ने कुल का मान-सभ्रम सब मिट्टी मे मिला दिया, कही का नही रखा। फिर भी अपनी सफलता इस बात मे थी कि किसीको कुछ मालूम नही हुआ। इस कुल मे किसीको कुछ मालूम न होना ही सबसे बडी कृतार्थता थी। तीसरी बोतल को गोदाम मे बन्द

करने के बाद सुजाता देवी के मन मे यह प्रश्न आया कि क्या मैं इसी तरह बोतले बन्द करने के लिए और हलाहल के घूट पीने के लिए हू ? पति का हलाहल पीती रही, अब बेटे का पीऊ ? इस काटो की सेज पर यात्रा का कही अन्त तो होना चाहिए ।

यही वह सोच रही थी और अन्दर-अन्दर सिकुड और सिमट रही थी कि पुराने नौकर सुभकरन ने आकर लगभग कानो मे फुसफुसाकर कहा—वह आई है ।

सुजाता देवी यह तो समझ गई कि कुछ बुरी बात हुई है, ऐसी बात जो नही होनी चाहिए, नही तो सुभकरन इस तरह से बोलता नही । उसके चेहरे पर आतक के पीले मरघटी बादल छाए हुए थे । वह राय साहब का विशेष नौकर था, पर इतना विशेष नही था कि मालकिन को सोलहो आना अधेरे मे रखे । वही जब-तब मालकिन को पुरानी गैबी के बगले मे रखी हुई राय साहब की रखेली के सम्बन्ध मे छोटी-छोटी सूचनाए दिया करता था । बोला—माई जी, सुहासी आई है ।

यह खबर इतनी अविश्वसनीय थी और अपनी सारी योजनाओ पर इस प्रकार पानी फेरती थी कि मन ने प्रतिरोध किया और कान के रिसीवर ने प्राप्त सदेश को ग्रहण करने से इन्कार किया । उनके मुह से निकल गया—सुहासी कौन ?

तब सुभकरन इतने धीरे से कि दीवार भी न सुन पाए, बोला—वही, जिसे लेकर बडे बाबू गए थे । दो बच्चो के साथ आई है । सुहासी, सुहासिनी

अब तो सन्देश को मस्तिष्क की दहलीज से वापस करने का मौका नही था । यदि स्त्री न होकर बोतल होती तो वह जाकर तुरन्त उसे उठा लेती और गोदाम मे बन्द कर देती ताकि कोई चिह्न न रहे, न बास रहे न बासुरी, पर यह तो एक पूरी औरत थी, यही नही उसके साथ दो बच्चे भी थे, जो जगन्नाथ के थे । उन्होने इगित से सुभकरन से पूछा—किसी और नौकर को मालूम तो नही हुआ ?

सुभकरन ने इगित के उत्तर मे कहा—नही, उस जमाने का कोई है ही नही ।

सुजाता देवी को विशेष खुशी नही हुई कि सुभकरन एकमात्र नौकर है जिसे उस घटना का पता है। तडाक से मन मे यह विचार आया कि सुभकरन की उम्र साठ से ऊपर हो गई, पर यह मरा नही। अभी सुभकरन के सम्वन्ध मे सोचने का अवमर नही था। वह वोली—उसे ले आओ

सुभकरन समझा नही। माई जी भला एक भगिन को कैसे अपने कमरे मे वुला सकती है ? फिर उतने ही धीरे से वोला—वह भगिन है।

इसपर सुजाता देवी ने ऐसा चेहरा वनाया जैसे सुभकरन ने कोई गुस्ताखी की हो। वोली—लाग्रो ! यही लाओ !

सुभकरन सुहासिनी और उसके वच्चो को लेकर आया, तो उन्हे देखकर सुजाता देवी को ऐसा लगा कि वह अपनी कुर्सी से गिर पडेगी। सतुलन कायम रखने वाले तन्तु जवाव दे गए। एक साथ वीसियो लहरे मन पर टकराई। राय साहव इसी सुहासिनी के कारण मर गए, जगन्नाथ इसीके कारण विगडा, अव यह पता नही किसलिए आई है। मन पर चोट करती हुई लहरो के इस धुधलके मे फिर भी यह दिखाई दे गया कि छोटा वच्चा विल्कुल हूवहू वैसा ही लग रहा था जैसा जगन्नाथ वचपन मे हुआ करता था। वह साफ कपडे पहने हुए था, पर वहुत सस्ते। सुहासिनी ने आते ही दूर से माई जी को प्रणाम किया, पर सुजाता देवी प्रणाम न लेकर उठी और सुभकरन को वाहर निकालकर दरवाजा वन्द कर दिया। सुभकरन ने जाते-जाते पूछा—कुछ खाने-पीने को लाऊ ?

सुजाता देवी ने इसका कोई उत्तर नही दिया और कुण्डी चढा दी। फिर कुछ सोचकर कुण्डी खोल दी, वाहर झाका और फिर दरवाज़े वन्द कर दिए, पर कुण्डी नही चढाई।

सुजाता देवी ने देखा कि मुहामिनी खडी है और उसके वच्चे (अव की वार सुजाता देवी ने प्रयासपूर्वक वच्चे का चेहरा नही देखा) चारो तरफ वडे आश्चर्य के साथ देख रहे है। उन्होने सुहासिनी से कहा—तुम वैठ जाओ ! कहकर उन्होने कालीन विछा हुआ फर्श दिखला दिया।

सुजाता देवी सव कुछ जानती थी। उन्होने सुहासिनी को पहचान भी लिया। अच्छी तरह याद है, वह छरहरे वदन की लडकी जो हमेशा खुश रहती थी, कभी मा के साथ, कभी वाप के साथ सडक झाडने आती

थी। जब अकेली होती थी तो गाती भी थी। कोई सिनेमा की धुन, जिसे उसने नही देखा, पर जिसके गीत की महक उस तक पहुचकर मन मे चहक पैदा करती थी। अच्छी लगती थी कोई बुरी नही लगती थी, क्योकि उससे कोई डर नही था। अब यह मोटी हो गई है, चेहरे पर चिन्ता की रेखाए उभर आई है, पर इन बातो से उसके चेहरे पर एक बौद्धिक छाप आ गई है जो पहले नही थी। जिन लडकियो को विश्वनाथ की शादी के सिलसिले मे अभी-अभी कई महीनो के अन्दर उन्होने देखा था, उनके चेहरे सिनेमा के पर्दे पर आने वाले चेहरो की तरह एक-एक करके सुहासिनी के पास खडे होने लगे। जब खडे होते तो चेहरे पर मुस्कराहट होती पर उसके बगल मे टिकने के बाद मुस्कराहट बुझ जाती और उदास होकर वह अस्त हो जाता और उसकी जगह दूसरा चेहरा फिर उसी तरह हसता हुआ आता और रोता हुआ चला जाता। सुहासिनी ने गजब की भौंहें और नाक पाई है। सुजाता देवी ने कुर्सी पर बैठते-बैठते एक बार अपने को कनखी से आईने मे देख लिया। उन्हें सब कुछ मालूम था, फिर भी उन्होने पूछा—तुम कौन हो ?

सुहासिनी ने अपने बच्चे से कहा—तू मुन्ने को कोने मे ले जा और फिर उसने थोडे मे सारा वृत्तान्त सुना दिया। वृत्तान्त तो सारा ही मालूम था, हा देखा नही था, पर अब देख लिया। इसकी बातो से कही बडा प्रमाण तो वह मुन्ना था, जिसके सम्बन्ध मे कोई भ्रम नही हो सकता था। सब कुछ सुनकर बोली—तो क्या शादी भी हुई थी ?

—हा, हुई थी। आर्यसमाजी ढग से हुई थी। शास्त्री जी ने कराई थी।

सुजाता देवी और सब कुछ आशका करती थी, पर इसकी आशका उन्हे नही थी। विश्वनाथ या उसके मामा जी या जगन्नाथ किसीने यह बात नही बताई थी। इससे तो बडा फर्क पड जाता है। अपनी योजना का ब्लूप्रिन्ट सीधे-सीधे रद्दी की टोकरी मे चला जाता है, उसकी इस गति को कोई नही रोक सकता। घुटन है, हवा रुकी है, सास बन्द है, हाय, वह यहा कायर की तरह रण मे पीठ दिखाकर चले गए ? यह समस्या तो उनके सुलझाने की थी न कि मेरे। वह कहा चले गए ? फिर से एक बार पति के वियोग का नशा बध गया। आखो मे आसू आना ही चाहता

था कि उन्होंने उसे प्रबल इच्छा-शक्ति से रोक लिया, फिर एकाएक बोली—तुम चाहती क्या हो ?

दिल्ली स्टेशन पर ट्रेन मे चढाते समय रमा ने सुहासिनी को खूब भरा था ऊपर से, नीचे से, जहा से भी समाई। उसीको उगलती हुई बोली—मैं तो अपने अधिकार चाहती हू।

अधिकार शब्द सुनकर सुजाता देवी को तैश आ गया। यदि सुहासिनी कोई बोतल होती तो वह उसे उठाकर दे मारती, चूर-चूर कर देती, गोदाम मे भी नही रखती जैसे कि शराब की बोतलो को रखती जा रही थी, पर उनके सामने एक नारी बैठी थी, जो शायद हाथ-पैर से और हाथ-पैर के अलावा और अगो से भी, जो नारी के होते हैं, मजबूत थी। उसके दो बच्चे भी सिर दर्द के समय नियोन रोशनी की तरह चुभ रहे थे। फिर भी वह एक हद तक गुस्सा पीकर बोली—अधिकार ? अधिकार कैसा ? तुमने नाच-गाकर उसे बहकाया और अब तुम अधिकार की बात करती हो। शादी हुई भी कि नही कुछ पता नही। तुम बिरादरी के कहने से कहती होगी सो कुछ रुपये ले जाओ और यह झगडा खत्म करो।

सुहासिनी को रमा ने पहले ही इस सम्बन्ध मे सावधान कर दिया था, बोली थी—तुम्हे हजार, दो हजार रुपये तक देंगे और कहेंगे कि चुप कर जाओ, पर तुम हर्गिज़ चुप न करना।

सुहासिनी बोली—मैं रुपये नही चाहती, मैं अधिकार चाहती हू।

सुजाता देवी समझ गईं कि यह ऐसे नही मानने की, इसे अच्छी तरह धमकाने की जरूरत है। कई दृष्टियो से यह ताडन की अधिकारी है। बोली—शादी-वादी कुछ नही हुई, तुम ब्लैकमेल कर रही हो। तुमको पुलिस मे दिया जा सकता है।

इसपर सुहासिनी एकदम खडी हो गई, बोली—आपने ऐसा समझ रखा है मेरे पीछे कोई नही है ? मेरे पीछे दिल्ली के कई बडे लोग हैं जो आकर गवाही देंगे कि हम लोग साथ-साथ रहे और वह अपने को मेरा पति बतलाते और मानते थे।

सुजाता देवी सुहासिनी से इस प्रकार की बातो की आशा नही करती

थी। वडे लोग सुनकर वह चौंक पडी। सचमुच यदि प्रमाणित हो गया कि ये साथ-साथ रहते थे, साथ ही ये लडके इन्हीके हैं, तो विना शादी के भी मुकदमा वनता है, जव तक कि यह सावित न कर दिया जाए कि यह विल्कुल वाजारू वेश्या है। यह विचार एक तरफ आए और दूसरी तरफ वडे लोग। कौन है ये वडे लोग ? सुजाता देवी ने पूछा—वडे लोग कौन ?

सुहासिनी मानो सशस्त्र होकर आई थी। उसने रमा का एक पत्र दिखलाया, जिसपर रमा के पति का नाम छपा हुआ था—अरुण कुमार लैक्चरार, दिल्ली विश्वविद्यालय।

पत्र पढकर सुजाता देवी की रही सही आशाओ पर पानी फिर गया, वोली—ये कौन लोग है ? तुमसे इनका क्या सम्वन्ध है ?

सुहासिनी ने सरलता के साथ सारी वात वता दी और साथ मे विद्यानिवास का भी नाम ले दिया और कहा—वह और वडे आदमी है। चाहे तो अभी वारण्ट कटा सकते हैं।

सुजाता देवी भीतर से कुछ सिमट गई, पर ऊपर तो अकड दिखानी ही थी, वोली—किस वात पर वारण्ट कटा सकते हैं ?

—वह शराव पीकर कई वार झगडा कर वैठते थे। विद्यानिवास जी ने उन्हे वार-वार छुडाया—वह एक झूठ वोल गई। छुडाया तो उसने एक ही वार था, पर रौव जमाने के लिए झूट का यह चौखटा वहुत अच्छा मालूम पडा।

सुजाता देवी समझ गई कि मामला आसानी से नही निपटने का। वोली—देखो, तुम लोग हो छोटी जात। तुम लोगो मे ऐसा हो जाता है और फिर दण्ड देकर विरादरी ले भी लेती है, सो तुम्हारा दण्ड जो लगे वह मैं दूगी, तुम्हारे वच्चे स्कूल मे पढेंगे, उसका खर्च मैं दूगी और तुम्हारी शादी का भी खर्च मेरे ज़िम्मे रहा।

सुजाता देवी ने अपनी जान मे वहुत सुन्दर और सव तरह से ग्रहणीय, यहा तक कि लोभनीय प्रस्ताव रखा, पर सुहासिनी टस-से-मस नही हुई। वह वार-वार यही कहने लगी—जव मुझसे शादी हुई है, तो मैं किसी तरह नही मानूगी। मैं मुकदमा करूगी। मुकदमे के लिए दिल्ली से वकील आएगे। मैं अपने अधिकार लेकर ही मानूगी। मुझे आप रुपयो

का लालच न दिखलाइए। मैं हाथ-पैर से मजबूत हू, काम कर सकती हू, कमा सकती हू। मेरे लिए रोटी का सवाल नही है। न मेरे लिए बच्चो को पालने का सवाल है।

जव सुहासिनी कह रही थी कि मेरे लिए रोटी का सवाल नही है, उसी समय दरवाजा धीरे से खुला, साथ ही शराव की तीखी वू एकदम फैल गई। सुजाता देवी को स्वप्न मे भी भय नही था कि उनके कमरे मे कोई विना इजाज़त के, यहा तक कि वेटा विश्वनाथ भी, आ सकता है। पर सामने वडा वेटा जगन्नाथ खडा था। उसने बुरी तरह पी रखी थी। आखे अधमुदी थी। सुभकरन ने अपनी पुरानी दुरगी नीति के अनुसार इधर तो माई जी को सुहासिनी के साथ वैठा दिया था और उधर जाकर जगन्नाथ को खवर दी थी कि इस प्रकार सुहासिनी दो वच्चो के साथ आई है और माई जी के साथ वात कर रही है। सुनकर जगन्नाथ ने शराव के दो-चार घूट और पीए और वह आ गया।

सुजाता देवी और सुहासिनी दोनो एक साथ विभिन्न कारणो से उठकर खडी हो गईं। वच्चे सत्रस्त होकर कोने मे और दुवक गए। जगन्नाथ ने न मा को देखा, न वच्चो को देखा, उसकी दृष्टि तो सुहासिनी पर अटक गई थी। दु ख और कष्ट से छन-छनाकर उसका चेहरा और सुन्दर हो गया था। सुजाता देवी को वहुत बुरा लगा। पर जव तक वह कुछ कह पाती, जगन्नाथ ने सुहासिनी का हाथ पकड लिया। सुहासिनी ने कोई प्रतिवाद नही किया। जगन्नाथ झपट्टा मारकर उसे अपने कमरे की तरफ ले गया। मा ने यह सव देखा, मा को ख्याल आया कि नौकरो ने भी देखा होगा कि ऐसा हुआ। जव कमरे मे घुसा था तो एक वार ऐसा सन्देह हुआ था कि वह सुहासिनी को मारने आया है और उसे मारेगा कि वह मा के साथ गुस्ताखी कर रही है, पर अगले ही क्षण उसकी आखो ने वता दिया था कि वात कुछ और ही है। सुजाता देवी ने देखा कि वे चले गए और इधर वच्चे बुरी तरह रोने लगे। जैसे उनको किसीने वहुत मारा हो। उनके दिमाग मे तो वही दृश्य वसा हुआ था जव जगन्नाथ ने चूल्हे पर लगभग पकी हुई खिचडी को लात मार दी थी और वे भूखे रह गए थे और जगन्नाथ ने यह सिर्फ

इस कारण किया था कि खिडकी के खडखडाने से उसकी नीद मे बाधा पडती थी।

सुजाता देवी को ऐसा लगा कि जिस ससार का वह अब तक निर्माण कर रही थी, वह ससार एकाएक पिघलकर नीहारिका मे परिणत हो गया। खून के घूट पी-पीकर केवल अपने वश पर धब्बा न लगे, जग-हसाई न हो, इस उद्देश्य से उन्होने अपने पति राय साहब के पदस्खलन को सहन किया था। जब-जब सुभकरन आकर कहता कि माई जी ऐसा हो रहा है, वैसा हो रहा है, आज उसने दस भर सोना माग लिया, आज सौ रुपये माग लिए—इन सब बातो को वह सह जाती थी। इसी उद्देश्य से उन्होने बोतल चुरानी शुरू की, खाली शराब की खोखली बोतलें, पर अब लगा जैसे ये दो बच्चे रो नही रहे है बल्कि चिल्लाकर कह रहे हैं कि तुम्हारी दुनिया, तुम्हारी सजोई-सवारी हुई दुनिया खत्म हो गई। अब पता नही क्या अनर्थ होने वाला है। सुजाता देवी को लगा कि उनकी विचार-शक्ति और उनके दिमाग पर इनके चीत्कार का धक्का टकरा रहा है। वह आगे बढी और उन्होने (आव देखा न ताव) बच्चो को तडातड मारना शुरू किया मानो सारा दोष उनके ससार को जमीदोज़ करने का, जगन्नाथ के पदस्खलन का और इस समय जो जगन्नाथ शराब पीकर सुहासिनी को खीच ले गया, यह सारा दोष उन्ही बच्चो का हो। अधिक मारना न पडा। वे भय के मारे चुप हो गए।

१५

सुजाता देवी ने बच्चो को तो चुप करा दिया, पर आगे उन्हे कुछ नही सूझा। फिर एक बार उन्हे अपने पति की याद आई। वह ऐसी मुसीबत मे डालकर अकेले चले गए, जिसमे से कोई परित्राण सूझ नही पडता था। नौकर क्या समझ रहे होगे। सुभकरन को तो पता लग ही गया होगा, पर औरो को पता लगा या नही? वह जिस तरह से पली और बढी थी, उसमे किसी बुरी बात का होना उतना महत्त्वपूर्ण नही

था जितना कि उसका प्रचार हो जाना, ढिंढोरा पिट जाना। वह कुछ देर तक तो आवाज़े सुनती रही, फिर उन्होने धीरे से दरवाजा खोला और सुभकरन को चुपचाप खडा देखकर उसे इशारे से बुला लिया।

फिर इशारे से ही पूछा—किसीको कानोकान खबर तो नही हुई ?

उन्होने सुभकरन को इशारो की भाषा मे अच्छी तरह प्रशिक्षित कर लिया था। दो ही चार इशारे थे इसलिए प्रशिक्षित करने मे कोई दिक्कत नही हुई थी। उन्होने ठहरकर पूछा—बडे बाबू का दरवाजा बन्द है ?

सुभकरन ने सिर झुकाकर कहा—बन्द है।

सुजाता देवी को बहुत क्रोध आया, पर वह अपने कुल के गौरव के लिए सभी तरह की अनुभूतियो को पी जाने की आदी थी। वह कुछ नही बोली। यह तो स्पष्ट था कि जगन्नाथ कोई बात नही सुनने का। वह तो कुल की इज्जत मिट्टी मे मिला देने पर उतारू है। उसने बचपन से स्वार्थी जीवन व्यतीत किया, पर यह तो हद थी। सुहासिनी को लेकर परदेश भाग जाना और बात थी और उसे मा के कमरे से पकडकर अपने कमरे मे ले जाकर बन्द कर लेना और बात थी। यह तो खुली अवज्ञा बल्कि अपमान था, सारे मूल्यो और मान्यताओ के गले मे पत्थर बाधकर उन्हे समुद्र मे डुबा देना था। उसे कुल का कुछ ख्याल नही। अपने छोटे भाई विश्वनाथ का कुछ ख्याल नही जो एक उच्च अफसर होने जा रहा है, यहा तक कि अपनी मा का भी ख्याल नही, सुभकरन से लज्जा नही, न इहलोक की चिन्ता न परलोक का डर। बिल्कुल जानवर है। उसे वापस बुलाना महान गलती रही।

उन्होने सुभकरन को इशारे से पास बुलाया। सुहासिनी को अभी नही निकाला था जब तक कि वह पशु अपनी पशुवृत्ति चरितार्थ न कर ले। उन्हे अब सुहासिनी पर क्रोध आया कि उसने प्रतिरोध क्यो नही किया। वह कुछ तो कहती कि जाओ, मै तुम्हारे साथ नही जाती, तुम मुझे छोड आए थे, मेरा-तुम्हारा एक स्थायी समझौता होगा तभी हमारी-तुम्हारी बातचीत हो सकती है। उसका दावा है कि विवाह हो चुका है, उस हालत मे जगन्नाथ के साथ जाने मे कोई हर्ज़ नही, पर वह बच्चो का ही कुछ लिहाज करती। कुछ मेरा लिहाज करती। पर वह तो ऐसे चली गई जैसे कुतिया कुत्ते के

साथ चल देती है। बच्चे उसीके सामने रोने लगे थे। पशु भी ऐसे मौके पर इस प्रकार का व्यवहार नही करते। वह तो जैसे इसीके लिए तैयार थी और फौरन चली गई। राम-राम

सुजाता देवी ने इशारे से सुभकरन को बच्चे दिखा दिए, पर सुभकरन नही समझा, क्योकि इशारो की भाषा मे जो कुछ शिक्षा उसे मिली थी, उसमे किसी बच्चे के सम्बन्ध मे कोई इगित नही था। वह यह तो समझ गया कि बच्चो का कुछ करना है। उसने बच्चो की ओर देखा, तो बच्ची अपने भाई को गोद मे लिए दीवार से पीठ लगाए खडी थी मानो वह कोई बहुत बडी विपत्ति मे पैतरा करने के लिए तैयार हो। सुभकरन ने कहा—इन्हे ले जाऊ ?

इशारो की भाषा मे उत्तर मिला—ले जाओ।

पूछा—कहा ?

इस सम्बन्ध मे सुजाता देवी के विचार स्पष्ट नही थे और वह यह चाहती थी कि सुभकरन की तरफ से ही कुछ समाधान आए। सुभकरन ने इस विषय मे सोचा था, पर वह किसी नतीजे पर नही पहुच सका था। यदि नीचे ले जाते है तो स्वाभाविक रूप से दूसरे नौकर पूछेगे कि इसके साथ जो औरत आई थी, वह कहा गई ? सैकडो प्रश्न हो सकते थे। खतरनाक और कष्टकर। सुभकरन की समझ मे कुछ नही आया था, बोला—कहा ?

सुजाता देवी इस विषय मे किसी निश्चय पर नही पहुच पाई थी। पता नही जगन्नाथ सुहासिनी को कब छोडेगा। तब तक बच्चो को रखना था। केवल रखना नही, उन्हे खिलाना-पिलाना था। बोली—तुम अपने क्वार्टर मे ले जाओ।

पर सुभकरन हिला नही, पैर से वह धीरे-धीरे कालीन पर नक्शा बनाने लगा। बोला—वह बहुत छुआछूत मानती है।

सचमुच यह भी एक समस्या थी। बोली—बाजार मे ले जाओ और कुछ खिला-पिला लाओ।

पर लाओ कहकर वह स्वय पछताई कि उद्देश्य तो यह नही था, उद्देश्य तो यह था कि दोनो बच्चे और मा इस जमीन के पर्दे पर से एक-

दम अन्तर्हित हो जाए, इससे कम मे समस्या सुलझती नही थी, पर ऐसा करना असम्भव था। उसका कोई उपाय नही था। वह बिल्कुल असहाय थी। यदि कही इसी समय जगन्नाथ सुहासिनी को रिहा कर देता, तो काम बन जाता। घर के अन्दर तो कम से कम यह तमाशा न होता। शायद यह चुडैल यही समझकर आई हो कि एक बार सामने आ जाए, तो जगन्नाथ अपने को रोक नही सकेगा। सुजाता देवी ने कुछ रुपये सुभकरन के हाथ मे दिए, फिर बोली—इन्हे खिला-पिलाकर मामा जी के यहा ले जाओ। वहा कोई कुछ पूछेगा नही।

सुजाता देवी का यह सिद्धान्त था कि यहा रहने से तो अच्छा है। बाद को और सोचा जाएगा। बोली—तुम भी वही खाना खा लेना, मैं मामा जी को फोन कर देती हू।

सुभकरन बच्चो को लेकर निकल गया। बच्चो ने चू-चपड कुछ नही की। इस महिला के बन्द कमरे मे कैद रहने की बजाय उन्हें सुभकरन के साथ अज्ञात स्थान मे जाना अच्छा प्रतीत हुआ। सुभकरन ज्यादा अपना लगा। सुभकरन ने भी बच्चो को ठण्डा करने के लिए कहा—चल, मा बुला रही है।

बडे बच्चे ने कहा—मा तो बाबू के साथ गई।

—चल चल, वही ले चाहता हू।

कहकर वह उन्हे जल्दी से घर से निकाल ले गया, करीब-करीब घसीटते-घसीटते। उधर सुजाता देवी ने अपने भाई से फोन पर सारी बात बताई और कहा – भाई, तुम चले आओ।

बच्चो की समस्या अब वह भूल चुकी थी, अब समस्या थी कैसे सुहासिनी से पिण्ड छूटे। खैरियत यह है कि सुभकरन के सिवा और किसीको पता नही है। और सुभकरन रहस्यो की रक्षा करना जानता है। थोडी ही देर मे मामा जी यानी सुजाता देवी के भाई आ गए। सारी बातें सुनकर वह बोले—कहीं उसने सुहासिनी को बिल्कुल नहीं छोडा तो फजीहत बनेगी।

सुजाता देवी रुआसी होकर बोली—इसीका तो मुझे भी डर है। कहीं वह यह न कहे कि सुहासिनी अपने बच्चो के साथ इसी घर में रहेगी।

उसके लिए कुछ असम्भव नही, वह कह सकता है कि समझौते के तौर पर सुहासिनी को रहने दिया जाए।

—समझौता ? कैसा समझौता ?

मामा जी पर होटल मे जो कुछ बीता था और जिस प्रकार उन्हे साठ रुपयो से हाथ धोना पडा था, उसका पूरा ब्यौरा वह बता नही सकते थे, फिर भी बोले—यह औरत उसपर बुरी तरह छा गई है। जगन कुछ भी कह सकता है।

सुजाता देवी आतक के साथ बोली—तब तो मैं घर छोडकर भाग जाऊगी।

मामा जी बोले—भागने से प्रश्न सुलझता नही है। मैं दिल्ली मे जहा तक समझ पाया, इसे अब सुहासिनी का खास मोह नही रह गया है। इसे तो बस एक औरत चाहिए, सो आप इसकी जल्दी से शादी करा दीजिए, फिर यह सुहासिनी को पूछेगा भी नही।

सुजाता देवी को ऐसा ही लगा था, पर सुहासिनी ने आकर सारा इतिहास बदल दिया था।

मामा जी ने घडी की तरफ देखा और बोले—अब मेरा दफ्तर जाने का समय हो रहा है। मैं जाता हू। जैसी स्थिति हो, मुझे टेलीफोन से बताते रहिए।

पर सुजाता देवी ने व्याकुलता के साथ कहा—आज तुम छुट्टी ले लो। मेरा जी घबडा रहा है। क्या होगा, समझ मे नही आ रहा है। यह ऐसा विषय है कि मैं इस सम्बन्ध मे विश्वनाथ को भी कुछ नही कह सकती, क्योकि वह भाई का बहुत कुछ सह चुका, पर वह यह बात सहने वाला नही है। अब इस स्थिति मे भाई-भाई मे खटपट हो जाए, तब तो बडी बदनामी होगी।

मामा जी घडी की तरफ देखकर एक क्षण तक सोचते रहे, फिर बोले—जहा तक मैं समझता हू, वह आज उसे छोडने का नही है, पर सुहासिनी को घण्टे-दो घटे मे बच्चो की फिक्र जरूर पडेगी, तभी वह बाहर आएगी।

सुजाता देवी ने कहा—हा, मैं इसी परिस्थिति का तो सामना नही

कर पाऊगी। इसीलिए तो तुम्हे छुट्टी लेने के लिए कह रही हू।

—सामना करना कुछ नही है। आप उसे मेरे यहा भेज दीजिए। कह दीजिए कि बच्चे वही है। उन्हे समझा जाऊगा, वह सब सम्हाल लेगी। मुझे एक जरूरी काम है, मै टेलीफोन करता रहूगा।—कहकर मामा जी ने फिर घडी देखी और बहन को फिर एक बार आश्वासन देकर मोटर पर बैठ गए। सुजाता देवी चाहती नही थी कि वह जाए इस समय उन्हे सहारे की जरूरत थी, पर अब अधिक नही कह सकती थी। इतना कह गईं, यही आश्चर्य था। पति के मरने के बाद से ही वह अपने भाई से इतना खुलकर बात करने लगी थी।

मामा जी ने जैसा बताया था, वैसा ही हुआ। लगभग बारह बजे सुहासिनी निकलकर आई। उसके बाल बिखरे हुए और कपडे चुडे-मुडे थे, पर उसमे आत्मविश्वास था। वह बेखटके माई जी के कमरे मे घुस गई। और जहा बच्चो को छोडकर गई थी, वह सूना देखकर बोली—बच्चे कहा गए ?

सुभकरन पहले ही से सिखाया-पढाया हुआ तैयार था, वह बच्चो को मामा जी के घर के नौकरो के सिपुर्द करके चला आया था। मामा जी ने जाकर उसे लौटती गाडी से भेज दिया था। सुभकरन ने कहा—चलो, मै बच्चो के पास ले चलता हू। उन्हे नहला-धुलाकर अच्छे कपडे पहनाकर खाना खिलाया गया है। तुम मेरे साथ चलो।—कहकर वह आगे-आगे चला और सुहासिनी कुछ सोचकर पीछे-पीछे चली। मोटर तैयार थी उसमे बैठकर दोनो मामा जी के घर गए। मामा जी ने यह व्यवस्था की थी कि सुहासिनी और उसके बच्चो को एक कमरे मे रखा जाए, सब आराम दिया जाए जितना कि नौकर को दिया जाता है, पर उसे अब कही जाने न दिया जाए। सुजाता देवी, मामा जी और मामी जी—इन तीनो मे टेलीफोन पर टेलीफोन के बाद यह व्यवस्था हुई थी।

सुभकरन सुहासिनी को बच्चो मे पहुचाकर लौट आया और अब इसके बाद जब मामा जी दफ्तर से आए, तब इसपर बातचीत हुई कि आगे क्या हो, क्योकि उस कमरे मे सुहासिनी और उन बच्चो को कैद नही रखा जा सकता था। मामी यह जोखिम उठाने के लिए तैयार

नही थी। उसने मामा जी से स्पष्ट कह दिया था—तुम्हारी बहन है, तुम घर के बाहर जो चाहो सो करो, पर मै इस झगडे मे पडने के लिए तैयार नही हू।

असल मे मामा जी की भी यही राय थी, पर सुजाता देवी से अपनी बीवी के नाम पर कहना ही अच्छा लग रहा था। तब सब कुछ सोचने के बाद यह तय पाया कि गैबी वाला वह ऐतिहासिक मकान जहा राय साहब प्रेमलीला किया करते थे, वही सुहासिनी को बच्चो के साथ रखा जाए। दो नौकर बारी-बारी से पहरे पर रहें। इधर जगन्नाथ को समझाया जाए। आशा तो यही थी कि वह राजी हो जाएगा, पर यदि वह राजी नही हुआ तो उससे कहा जाएगा कि तुम जाकर उसी मकान मे काला मुह करो और किसी को अपना मुह न दिखाओ।

सुजाता देवी को यही लग रहा था कि जगन्नाथ किसी तरह नही मानेगा, पर मामा जी कह रहे थे कि मैने जहा तक जगन्नाथ को समझा है, उसे सुहासिनी से कोई विशेष प्रेम नही रह गया है। कभी रहा हो, बात दूसरी है, पर अब वह जो कुछ कर रहा था केवल सहजात से कर रहा था, सोच-समझकर नही।

मामा जी बोले—मै अभी कहो इसका प्रयोग करके दिखा सकता हू, पर दीदी तुम राजी नही होगी, इसीलिए डरता हू।

सुजाता देवी ने डरते-डरते कहा—वह कौन-सा प्रयोग है, बताओ। मै अपने कुल के सम्मान की रक्षा के लिए सब कुछ करने को तैयार हू।

—सब कुछ ?

—हा, सब कुछ।

आश्वासन प्राप्त करने पर भी मामा जी कुछ हिचकिचाते रहे, क्योकि प्रयोग ऐसा था जो बहुत ही भयकर था। बहन जो हर बात पर नाक उठाती है, वह कैसे उस बात पर राजी हो सकती थी। वह तो सुहासिनी के आगमन से ही घर को अपवित्र मान रही थी और यह साफ था कि वह अपना कमरा ही नही सारा घर, अवश्य उसमे जगन्नाथ का कमरा नही आता था, विशेष रूप से धुलवा और पोछवा चुकी थी, फिर वह उस बात पर कैसे राजी होगी। आख न मिलाते हुए बोले—अब

जगन्नाथ सवेरे तक तो उठने का नही। सम्भव है खाने-पीने के लिए उठे, पर वह रात-भर सोएगा, इसमे कोई शक नही। सवेरे शून्य वाली घडी आएगी, जव वह पूछेगा कि सुहासिनी कहा गई और न वताए जाने पर लडने-झगडने को तैयार हो जाएगा।

कहते-कहते मामा जी ने वहन की तरफ देखा कि वह उसकी तर्क-प्रणाली का अनुसरण कर रही है कि नही। सुजाता देवी ने कहा—कहे जाओ!

मामा जी हिचकिचाते हुए वोले—उस समय यदि उसको, मैं साफ-साफ कहता हू, कोई जवान लडकी या औरत मिले तो वह फिर हल्ला नही करेगा। सुहासिनी को वह इसलिए ले गया था कि उसका रास्ता उसका देखा हुआ था। यदि यही वात किसी और स्त्री के सम्वन्ध मे हो सके तो फिर यह नशा छूट सकता है और तव अक्ल के साथ वात-चीत हो सकती है।

सुजाता देवी सारी वात समझ तो गईं, पर वह समझना अपने साथ इतने प्रकार की समस्याओ से कटकित था कि उस सम्वन्ध मे न समझने का वहाना करना ही अच्छा था। वोली—तुम क्या कह रहे हो, मेरी समझ मे नही आ रहा है।

मामा जी ने समझाने की कोशिश नही की, वोले—तुम दो-चार दिन हरिद्वार हो आओ तो कैसा रहे ? मैं आकर वहा रहता हू।

—और सुहासिनी ? उसके वच्चे ?

मामा जी ने कहा—इतनी देर तक तुम क्या सुनती रही ? इस वक्त तक उन्हें गैवी के उस मकान मे पहुचा दिया गया होगा। मेरा प्रयोग असफल हो जाए, तभी सुहासिनी के साथ जगन्नाथ की भेट होगी, नही तो फिर भेट नही होने की।

सुजाता देवी रुआसी-सी होकर वोली—अभी घर घुलवाया है, फिर जाने तुम क्या करोगे समझ मे नही आता। क्या तुम किसी वेश्या को इस घर मे ले आओगे ?

—दवा के रूप मे सभी कुछ जायज है, पर मैं ऐसा कुछ नही करूगा, तुम निश्चिन्त रहो। विस्तर वाधकर हरिद्वार चली जाओ।

सुजाता देवी इस प्रकार घर छोडकर जाने के लिए तैयार नही थी, पर वह समझ रही थी कि जगन्नाथ के कारण अब ऐसी शक्तिया प्रबल हो रही है, जिनसे पुराने सिद्धान्तो पर घर चलाना असम्भव था। आज जो कुछ हुआ, वही क्या कम था। आजकल के युवको और नवयुवको की सब तरह की शिकायते सुनी जाती है, पर ऐसा कही नही सुना गया कि लडका आकर झपट्टा मारता है और एक तरफ अपनी मा और दूसरी तरफ उस स्त्री के बच्चो के (वह अपने चित्त के अन्तर्तम मे यह मानना नही चाहती थी कि बच्चे जगन्नाथ के ही है) सामने से एक औरत को छीनकर ले गया

बोली—मै तो समझती हू कि मै उसी दिन हरिद्वार चली गई, जिस दिन वह सिधार गए।—कहकर वह रुआसी-सी हो गई और मामा जी डरे कि कही उन्हे उस पूरे सरगम का सामना न करना पडे जो शोक से पीडित बहन के लिए पहले झेलना पडा था। जल्दी से बोले—न हो, तुम मेरे ही घर पर चली आओ, कुछ तमाशा तो करना ही पडेगा।

सुजाता देवी किसी निश्चित मत पर नही पहुच सकी। उन्हे और मामा जी को कुछ सोचने का मौका ही नही मिला। उसी समय फोन आया कि विश्वनाथ की शादी के लिए कुछ प्रतिष्ठित लोग आ रहे है। इस परिवार से पहले भी बातचीत हो चुकी थी। बाबू रामदास स्वय आई०सी०एस० थे, पर वह पचास साल की उम्र मे ही मर गए थे। उनकी पाच लडकिया और एक लडका था। तीन लडकियो की बहुत अच्छी शादिया हो चुकी थी। अब दो लडकियो की शादी रहती थी। इन्हीके सम्बन्ध मे बातचीत चल रही थी।

और किसी मामले मे दिक्कत नही थी, बस बात इतनी थी कि लडकी कुछ सावली थी और विश्वनाथ ने मा पर सारा भार छोडते हुए यह कहा था कि लडकी प्रेजेन्टेबुल हो, इसका ख्याल रखा जाए। रामदास बाबू की पत्नी रग की कमी की क्षतिपूर्ति दूसरे प्रकार से करने के लिए तैयार थी। वही लोग आ रहे थे।

इस कारण हरिद्वार वाली बात वही रह गई। मामा जी से कहा गया कि तुम सारा प्रबन्ध करो, यद्यपि प्रबन्ध करने मे कुछ नही था, क्योकि

टेलीफोन पर ही अतिथियो के लिए सारी चीजे मगा ली गई। कमी थी तो केवल इतनी कि सुभकरन, जिसपर सबसे अधिक भरोसा किया जा सकता था, इस समय सुहासिनी और उसके बच्चो को लेकर गँवी वाले उस मकान मे तैनात था। उसीपर सबको भरोसा था। पर वह नही था, इसलिए मामा जी को रुक जाना पडा।

यथासमय अतिथि आए। उन्हे नियमानुसार सुसज्जित बैठक मे न बैठाकर सुजाता देवी के कमरे मे बैठाया गया था। इन्कार करना था, इसलिए सुजाता देवी बीमार बन गई थी ताकि कोई बात साफ-साफ करने के लिए मजबूर न किया जाए। पर उधर से स्वर्गीय रामदास की पत्नी निर्मला देवी यही निश्चय करके आई थी कि आज कुछ फैसला हो ही जाना चाहिए। बातचीत उसी सुपरिचित बोरियत की धारा से लग-लिपटकर बहने लगी। जिन बातो को दोनो पक्ष अच्छी तरह जानते थे, उनकी पुनरावृत्ति होने लगी। निर्मला देवी बार-बार यही बता रही थी कि उनके तीन दामाद कितने बडे आदमी है। एक आई०सी०एस० का बेटा है जो किसी कम्पनी मे दो हजार रुपये पाता है। वह जल्दी ही कम्पनी के एजेन्ट के रूप मे योकोहामा जाने वाला है। दूसरा दामाद आई०ए०एस० है, वह इस समय बहुत वरिष्ठ अधिकारी है। तीसरा दामाद केवल अपनी पैतृक सम्पत्ति को ध्वस कर रहा था, इसलिए उसके सम्बन्ध मे कहा गया कि वह व्यापार कर रहा है और उसमे नए-नए आइडिया है, पता नही वह कब करोडपति हो जाए। बस, ग्रहो की अनुकूलता की देर है।

सुजाता देवी को यह सब मालूम था, पर उनके हाथ मे भी एक पेच था कि बडे भाई की अभी शादी नही हुई है। कायदे के मुताबिक खानदान की लाज तो इसीमे है कि पहले बडे भाई की शादी हो, फिर छोटे भाई की, पर यह कहने के साथ ही सुजाता देवी इसके लिए भी रास्ता खुला रखना चाहती थी कि छोटे भाई की शादी हो जाए और बडे भाई की शादी न हो। बोली—मै तो यह सोचती हू, पर लडका गन्धर्व विवाह कर डाले (कहते-कहते याद आया कि यह अच्छी बात कही गई, जो बडे बेटे और सुहासिनी के सम्बन्ध पर भी लागू है) तो कौन जाने! आज-कल मा-बाप की बात कौन सुनता है!

।

सुजाता देवी भी इसी बात को बार-बार कहकर अपनी अतिथि को बोर कर रही थी, ताकि वह घडी देखकर जमुहाई ले और फिर चलती बने । लडकी और उसकी छोटी बहन, दानो सामने बैठी थी । जब-जब शादी पर खुलकर बातचीत चलती, तब-तब लडकी अपनी बहन से ऐसे बात करने लगती थी, जैसे उसका कोई सम्बन्ध नही है ।

सुजाता देवी दोनो बहनो को जब-तब ध्यान से देख लेती थी । अजीब बात है कि छोटी लडकी बिल्कुल मा की तरह गोरी है, पर बडी लडकी काफी सावली है, पाउडर और तरह-तरह की अन्य सामग्रियो से लिपने-पुतने-रगने पर भी । जब बातचीत बिल्कुल ही किसी चट्टान से टकराकर छितरा जाती थी तो उसे भद्रता के तटो के अन्दर रखने के लिए चाय का नया पानी आता था और इस प्रकार फिर कही से सोता फूटता था और बातचीत चल निकलती थी ।

जब इसी प्रकार कई बार गत्यावरोध पैदा हो गया और यह समझा जा रहा था कि अब बातचीत मे रस नही आने का, किसी भी क्षण अतिथि यह कह सकते है कि हम लोग जा रहे है, रात हो गई, उसी समय दरवाजा खोलकर कमरे के अन्दर जगन्नाथ आ गया । सुजाता देवी उसे देखकर चौक पडी, क्योकि अभी तक उनके मन मे वह क्षण बिल्कुल ताजा था जब वह कमरे मे घुसकर सुहासिनी का हाथ पकडकर उसे खीच ले गया था, लडके बुरी तरह चिल्लाने लगे थे, पर सुहासिनी बिना किसी हिचकिचाहट के उनके साथ चली गई थी और सुजाता देवी महाशून्य मे लटककर स्तब्ध-सी रह गई थी ।

जगन्नाथ अणिमा को उसी प्रकार से देख रहा था, जैसे उसने सवेरे की तरह लक्ष्यवेधकारी अर्जुन की एकाग्रदृष्टि से सुहासिनी को देखा था । सुजाता देवी को जाने क्यो ऐसा लगा कि यह उसी प्रकार इसका भी हाथ पकडकर ले जाएगा । इसे न तो लज्जा है न शर्म, इसे न खान-दान का ख्याल है न विधवा मा का, यह नही समझता कि सब लडकिया सुहासिनी नही है, सबके हाथ पकडकर खीचा नही जा सकता और न सब मेमने की तरह उसके साथ जा ही सकती है । यदि इसने अणिमा का हाथ पकडा यह सोचकर सुजाता देवी को [illegible]-सा आ गया, वह जागे

नही सोच सकी। पर इतने मे उन्होने देखा कि जगन्नाथ ने तीनो अतिथियो को नमस्ते की और मामा जी की वगल मे उनसे सटकर खाली कुर्सी पर बैठ गया, बिल्कुल एक सीधे-सादे लडके की तरह।

सुजाता देवी ने देखा कि जगन्नाथ सवेरे की तरह लुगी और कमीज मे नही है। उसने वह ठाठदार तीन पीस वाला सूट, जो अभी-अभी सिलकर आया था, नई चमचमाती टाई के साथ डबल-नाट देकर पहन रखा है। सुजाता देवी की आत्मा को शान्ति मिली कि मैंने बडा गलत समझा था। यह ऐसा कुछ नही करने वाला है, जिससे कुल की मर्यादा को बट्टा लगे। सुहासिनी की वात और थी, वह थी ही इस लायक। आखिर छोटी जात की स्त्री थी, उसके हाथ पकडने से तो उसकी इज्जत बढती थी, तभी रोते हुए बच्चो को छोडकर वह निश्चिन्तता के साथ जगन्नाथ के पीछे-पीछे चली गई थी। निर्मला देवी से बोली—यह रहा मेरा बडा लडका जगन्नाथ, जो कई सालो तक हिमालय मे जाकर तपस्या कर रहा था। सुना है कि इन लोगो के खानदान मे इस तरह लडको मे यदा-कदा वैराग्य का झक सवार होता है।

निर्मला देवी मुस्कराकर बोली—पर अव तो यह तपस्वी नही लगते। क्या करते है ?

सुजाता देवी जानती थी कि आवारा लडको के विषय मे क्या कहा जाता है, बोली—यह बिजनेस करना चाहता है, पर मैंने इसे बिजनेस करने नही दिया। मैंने कहा, पहले अपना दिमाग ठीक कर लो कि फिर कभी हिमालय जाना नही है। नही तो तुमने बिजनेस किया और किसी गेरुए वस्त्रधारी के साथ (याद आ गई आज सुहासिनी गेरुए नही बल्कि नीले रग की साडी पहने हुए थी) तुम चल दिए तो फिर वह बिजनेस कौन सम्हालेगा ? विश्वनाथ नही सम्हाल सकता और मैं सम्हालने से रही।

निर्मला देवी एकटक जगन्नाथ को देख रही थी और जेट की रफ्तार से सोच रही थी, बोली—इस समय तो यह बिल्कुल स्वस्थ युवक लग रहे है। बाप इतनी बडी जायदाद छोड गए है, इन्हे साधु होने मे क्या मतलब है।

निर्मला देवी ने कहते-कहते कनखी से अणिमा की ओर देखा तो उन्हे

लगा कि उसकी भी यही राय है। जल्दी-जल्दी दो और दो चार, चार और चार आठ हुआ और निर्मला देवी अगले वाक्य मे ही वोली—यदि हमारी दोनो वेटिया आपके यहा आ सकती तो वहुत अच्छा रहता, पर दुनिया मे दो वहनो को इकट्ठा रहने का मौका कहा मिलता है! हम दो वहने थी, मैं यहा रह रही हू और मेरी वहन उम्र-भर वम्वई रही, जव कभी दो दिन के लिए भेट हो जाती थी।

यो सुजाता देवी को यह प्रस्ताव विल्कुल पसन्द नही था, पर सुहासिनी आ चुकी थी, वह दावा कर रही थी कि शादी हो चुकी है, पता नही इसके मन मे क्या है, इस मझधार वाली स्थिति मे यह तिनके का सहारा भी वहुत खूब था। वोली—मैं किसीके मन की वात क्या जानू, जव से वडा लडका भाग गया था, तव से हमारा यह परिवार टूट ही गया। उनका तो दिल भी टूट गया और इसी गम मे वह स्वर्ग सिधार गए।

स्वर्ग सिधार गए कह तो गई, पर स्मरण आया कि वह पत्नी से छिपाकर एक रखेली रखे हुए थे और अव उसी घर मे सुहासिनी है, पर जल्दी से इन विचारो को मन से निर्वासित देती हुई वोली—मैं भी वहुत कुछ सोचती हू, पर ईश्वर की इच्छा के आगे किसीकी कुछ चलती नही, मैं कल ही कुछ सोच लूगी।

निर्मला देवी समझ गई, कि आज कुछ नहीं होने का। वह समझ चुकी थी कि सुजाता देवी का मन विश्वनाथ के लिए छोटी वेटी गरिमा पर है, न कि अणिमा पर। कही वडे मिया भी छोटे मिया की तरह सौन्दर्य-प्रेमी निकले तो वस हो चुका। अकेली गरिमा की शादी तो हो नहीं सकती। होगी तो दोनो की एकसाथ होगी, नही तो अणिमा की पहले होगी। सोचते-सोचते निर्मला देवी ने विदाई ले ली। सुजाता देवी लेटी ही रही पर मामा जी और जगन्नाथ अतिथियो को मोटर तक छोडने गए। मोटर मे चढते समय निर्मला देवी ने जगन्नाथ से कहा—वेटा, तुमको अव विजनेस मे मन देना चाहिए। तुम्हारी माता जी को दुःख होता है।

जगन्नाथ अणिमा की तरफ देख रहा था, झेपने का अभिनय करते हुए वोला—मैं भी सोचता हू कि कुछ भी हो जाए, अव माता जी को दुःख नहीं होने दूगा।

अतिथियो के जाने के साथ ही साथ मामा जी भी घर चले गए। सुजाता देवी बहुत उत्तेजित थी, उन्हे लग रहा था कि समाधान बिल्कुल पहुच के अन्दर आकर चला गया है। क्या यह समाधान स्वीकार्य नही है ? यदि जगन्नाथ मान ले तो सारी समस्या ही हल हो जाए। पर सुहासिनी और उसके बच्चे ? राय साहब की वह रखेली भी तो थी। पर वह पता नही कहा चली गई, किस महाशून्य मे धीरे से ठनक गई कि किसीको, कम से कम सुभकरन को पता भी नही हुआ। बडे बेटे के भागने के बाद राय साहब का मन बदल गया। शायद उनके मन मे पश्चात्ताप आया कि मैं ऐसा हू, तभी मेरा बेटा ऐसा है। इसीलिए उन्होने धीरे से उस महिला को अपने से अलग करके पता नही कहा सोचते-सोचते एकाएक इतने वर्षों बाद उन्हें यह ख्याल आया कि कही राय साहब सम्बन्धी वह सारी कहानी मनगढन्त तो नही थी। सुभकरन के उर्वर मस्तिष्क की उपज। एक ऐसा कल्पवृक्ष जिसके सहारे सुभकरन जब जो चाहता था, माग लेता था। उन्होने स्वय तो कभी कोई बात नही देखी, कोई प्रमाण नही पाया। अरे, यह क्या हो रहा है ? पर सुहासिनी तो कल्पना नही है, न उसके रोते-बिलखते हुए बच्चे काल्पनिक है। वे तो उसी प्रकार सत्य है जैसे निर्मला देवी की बाकी बची हुई विवाह योग्य दो बेटिया। जगन्नाथ किस अभद्र तरीके से अणिमा को देख रहा था। नितान्त अभद्र। अनैतिक। जब वह जान रहा था कि छोटे भाई से उसकी शादी की बातचीत चल रही है तो वह उस प्रकार उसे घूर क्यो रहा था, मानो कोई सुहासिनी हो। यह बेटा बहुत ही दुख देगा। इसने बाप को दुख दिया (सुभकरन की वह बात मनगढन्त थी), अब मुझे दुख देगा। यह दुख देने के लिए ही पैदा हुआ।

सुजाता देवी इस प्रकार से अपने विचारो मे गोते खा रही थी, जिसमे कभी एक लहर इतनी बडी आती थी, जिसमे सारा जीवन समाया हुआ होता था और वह जीवन की एक नई, कतई नई व्याख्या प्रस्तुत करती थी और फिर छोटी-सी लहर आती थी, जिसमे केवल आज की शाम ही प्रतिबिम्बित थी। किसीसे बात करने की प्रबल इच्छा हो रही थी, पर ले-देकर अपने भाई से ही बात कर सकती थी, पर वह तो जा चुके

थे। टेलीफोन पर बात की जा सकती थी, पर यह बर्ताव बचकाना होगा, यो भाई से कोई पर्दा नही, पर भौजाई क्या सोचेगी इसे भी ध्यान मे रखना था।

दरवाजा धीरे से खुला और जगन्नाथ सिर नीचा किए हुए भीतर आया। सुजाता देवी ने सोचा कि वह शायद सुहासिनी के सम्बन्ध मे पूछने वाला है। उनका सारा शरीर कडा पड गया, प्रतिरोध करने के लिए। भाई के साथ यही तय हुआ था कि यही कहना है कि हमे कुछ नही मालूम। क्या पता, सुभकरन ने राय साहब के सम्बन्ध मे जो बात कही थी, वह कहानी ही थी या सच्ची बात थी? यदि कोई इस तरह से उस महिला को उडा लेता, पर अपना मुह तो खुलना नही था। सुभकरन जानता है, इसीका अफसोस है और इसीलिए कई बार अपने अनजान मे यह विचार आ जाता है कि यह मरा क्यो नही, जबकि इसकी उम्र इतनी हो चुकी है।

जगन्नाथ आकर उसी कुर्सी पर बैठ गया जिसमे वह बैठा था। सुजाता देवी ने कुछ नही कहा, क्योकि वह चाहती थी कि जितना समय मिले, उतना ही अच्छा है। प्रश्न उधर से आए, मैं क्यो अपने से यह कहू कि मुझे सुहासिनी का कुछ पता नही है। मैं बस इतना जानती हू कि सुहासिनी अपने बच्चो को ले गई। कहा ले गई, कैसे ले गई, इसका न तो पता है और मुझसे आशा भी तो नही की जाती कि मुझे पता हो। यह इस समय यहा न आता तो अच्छा रहता। अपने विचारो मे खो गई थी। थोडी देर मे कोको का एक प्याला लेकर सो जाती। वह कुछ नही बोली और दोनो के बीच मे मौन के धुए के छल्लो का अम्बार ऊचा होता चला गया। यहा तक कि कष्टकर हो गया उनमे सास लेना। तब जगन्नाथ ने एकाएक छल्लो को भेदते हुए कहा—मुझे निर्मला देवी का प्रस्ताव मजूर है।

सुजाता देवी को अपने कानो पर विश्वास नही हुआ, क्योकि यह वही बात है जिसकी वह मन ही मन, बल्कि मन के अन्तर्तम प्रकोष्ठ मे रचना कर रही थी। उन्होने आश्चर्य के साथ जगन्नाथ की ओर देखा क्योकि यह वही जगन्नाथ था जो स्पष्टा मानकर यहा से सुहासिनी को रोने-बिलखने

वच्चो मे मा को छोडकर ले गया था, वोली—कौन-सा प्रस्ताव ?

वह केवल तस्दीक कराना चाहती थी कि वाकई यह वात कही गई है या नही। जगन्नाथ ने अवकी वार और भी स्पष्टता के साथ कहा—दोनो ही वहने एक साथ इस घर मे आ सकती है।

सुजाता देवी ने वेटे को ध्यान से देखा, यद्यपि सारी समस्याए सुलझती थी, पर पहले से कही अधिक वेगानगी से देखा, जैसे यह कोई न हो, अपने जिगर का टुकडा न हो, एक मास का लोथडा-मात्र हो, जिससे शरीर या मन की नाडी का कोई सम्वन्ध न हो। सारी समस्याओ का ममाधान तो हो गया, पर कोई खुशी नही हुई। यन्त्रचालित की तरह मशीनी आवाज मे वोली—और सुहासिनी ?

जगन्नाथ ने सुहासिनी के विपय मे कुछ भी नही सोचा था। वह कभी दूसरो के विपय मे सोचता ही न था। जव मामा जी और भाई ने जाकर वताया था कि राय साहव मर गए, तव थोडी देर के लिए मा के सम्वन्ध मे चिन्ता पैदा हुई थी, पर वस, इससे ज्यादा नही। वोला—मैं सुहासिनी को समझा लूगा। वह कहा है ?

तव सुजाता देवी ने मामा जी से जो वात तय हुई थी, उसके विरुद्ध सारी वाते वता दी कि इस-इस प्रकार सुहासिनी को गँवी वाले अपने वगले मे रखा गया है। सारी वाते सुनने के वाद भी जगन्नाथ के माथे पर किसी प्रकार के वल नही आए, यद्यपि यह सारा पड्यन्त्र उसे मजवूर करने और धोखा देने के लिए सेया गया था। सुजाता देवी को कुछ ऐसा लगा जैसे वह खुश ही हुआ कि एक समस्या जिसे हल करने मे शायद खून-पसीना एक करना पडता, वह खुद ही पहले से विना कोई तिनका तोडे हल हो गई थी। उसने आश्वासन देते हुए कहा— मै समझा लूगा।

सुजाता देवी ने उसकी आखो की तरफ देखा तो उन्हे लगा कि अव उनमे सुहासिनी का चित्र नही वसा है, वल्कि उनमे अणिमा ही अणिमा है। पर इससे उन्हे कोई खुशी नही हुई, यद्यपि यही वह माउण्ट एवरेस्ट था, जिसपर वह चढने का उद्योग कर रही थी। उसपर से ससार को देखते हुए लगा कि अरे, यह तो कुछ भी नही है, यह तो एक टीला है। उन्हे लगा कि अव यह सुहासिनी की समस्या को विलकुल नही सोच

रहा है पर जब शादी हो चुकी है, उन्हे अब लग रहा था कि शादी अवश्य हुई होगी क्योकि वह लडकी बडी ढीठ है। यदि शादी हुई तो ऐन अणिमा के साथ जगन्नाथ की शादी के दिन जैसाकि नाटको मे होता है, वह प्रकट हो सकती है और मझधार मे ऐसा तूफान और बवण्डर खडा कर सकती है कि जगन्नाथ तो क्या, सारे ससार के तर्क रूपी तेल के पीपे उसमे उडेल दिए जाए, तो भी वह शान्त नही होने का। निर्मला देवी के सामने सिर नीचा होगा, सारी दुनिया के सामने हेठी होगी, जगहँसाई होगी, लोग अट्टहास करते हुए कहेंगे—वाह, यही वह हिमालय वाली तपस्या है, जिसका तुम ज़िक्र करती थी और जिसकी चिन्ता की सुलगती चिता पर राय साहब तिल-तिल करके मर गए।

चिन्तित मुद्रा मे बोली—कैसे समझा लोगे ?

—समझा लूगा।

—पर उसके पीछे तो दिल्ली के कई गण्यमान्य लोग है। उसने मुझे चिट्ठी दिखलाई।

जगन्नाथ के चेहरे पर एक क्षण के लिए एक काली छाया पडी, पर वह अधिकतर आस्था के साथ बोला—मै उसे समझा लूगा।

सुजाता देवी को बडा क्रोध आया, वह कुछ नाराज़ होकर बोली—कैसे समझा लोगे ? उससे तो तुम्हारी शादी हो चुकी है।

सुजाता देवी ने यह वाक्य इस लहजे मे कहा मानो शादी न होती तो वह नही होता। बोली (मन मे राय साहब का उदाहरण न चाहते हुए भी आ गया)—शादी न करते तो बात और थी। ऐसे तो वह कभी भी दावा कर सकती है।

जगन्नाथ ने एक बार तो सोचा कि शादी की बात ही अस्वीकार कर जाए, जिससे कि मा को इत्मीनान हो और यह अणिमा वाला मामला जल्दी तय हो जाए पर उसने सोचा कि कही दिल्ली वाले लोग पीछे पड गए भावुकता के एक मुहूर्त मे उसने अध्यापक अरुण कुमार से और रमा से इलाहाबाद के आर्यसमाज की उस शाला का नाम भी बता दिया था जिसमे शादी हुई थी। बात यह है कि अरुण उसीके पास के एक मकान मे रहते बोर्डिंग मे रहकर पढा था। इन बातो को सोचकर जगन्नाथ

ने कूटनीति से काम लिया और बोला—उसे तो यह ख्याल दिलाया ही गया कि शादी हुई, पर छोडो इन बातो को, मै समझा जो लूगा।

पर सुजाता देवी को विश्वास नही हुआ। उन्होने इस बीच यह निश्चय कर लिया था कि जब तक वह स्वय साक्षात् सुहासिनी से सुन नही लेती, तब तक कुछ नही करेगी। बोली—तो तुम समझा लो, तब मै बात चलाऊगी। विश्वनाथ को कोई जल्दी नही है, वह तो अभी शादी करना ही नही चाहता।

उस दिन रात को बात इससे आगे नही बढ सकी, यद्यपि जगन्नाथ चाहता था कि चट कन्या पट ब्याह वाली कहावत अक्षरश चरितार्थ हो। वह अब केवल सुरा-सेवन से उकता गया था। वह कई दफा अपने से कह चुका था कि शराब स्वय कोई लक्ष्य नही हो सकती। वह तो एक साधन है और साध्य के बिना वह व्यर्थ पेशाब बढाती है।

उसे मा की यह जिद्द इसलिए और भी बुरी लगी कि वह समझ रहा था कि सुहासिनी को समझाना कोई हसी-खेल नही है। फिर जब वह सिखला-पढाकर भेजी गई है। अरे वह रमा बडी जहरीली औरत है, तो वह और भी नही मानने की। सबसे बुरी बात तो यह थी कि दो बच्चे मौजूद थे, नही तो सुहासिनी को किसी और तरीके से पार लगाने की बात सोची जा सकती थी, पर इन बिलबिलाते हुए व्यर्थ के बच्चो का क्या हो, यह किसी भी प्रकार समझ मे नही आ रहा था।

उसने सूट उतार दिया, लुगी बाध ली और पेग चढाना शुरू किया, नशे के लुत्फ के लिए नही जैसा वह रोज करता था, पर गम गलत करने के लिए। शिकार बिल्कुल हाथ मे आकर छूटा जा रहा है, इसलिए बार-बार अणिमा की आखे उसके मन पर तैर जाती थी, गर्वित बालो के गुच्छो के साथ। यह दुनिया ही और थी। सुहासिनी लालटेन की रोशनी थी, तो अणिमा दूर का एक सितारा जो कभी दिखाई पडता है और कभी नही दिखाई पडता। उसे बडा अफसोस हो रहा था कि उसने भावुकता के मुहूर्त मे सुहासिनी से शादी कर ली थी। यह अवश्य यही समझकर किया था कि इसका कोई अर्थ नही है और अपनी जिद्द पूरी करनी है। शादी की, बुरा किया, पर इसमे बुरा यह किया कि

उस जहरीली औरत और उसके पति को वह पता-ठिकाना वता दिया ।
वह पीते-पीते न जाने कव सो गया ।

१६

मामा जी ने भी सवेरे आकर सुजाता देवी से यह कहा—जव तक सुहासिनी राजी नही कर ली जाती, तव तक यह शादी नही होनी चाहिए । इतना कहकर ही मामा जी नही रुके वल्कि उन्होने उसी सास मे वहन को यह चेतावनी दी कि यदि तुम सुहासिनी को विना राजी किए पुत्र-स्नेह के मोह मे पडकर यह शादी होने दोगी, तो मै इससे अलग हो जाऊगा, यही नही, मै निर्मला देवी से जाकर यह साफ कह दूगा कि जगन्नाथ हिमालय नही गया था, उसकी व्याही हुई वीवी और दो वच्चे मौजूद है । इसपर वह शादी करे तो मै सहयोग दूगा ।

मामा जी ने जिस कडाई के साथ अपनी वात कही, उससे सुजाता देवी का निश्चय और दृढ हुआ । वह जिस सत्य की लौ को यो शायद स्पष्ट नही देख पाती, उसे वह स्पष्ट, अति स्पष्ट रूप से देखने मे समर्थ हुई । वेटा एक भगिन की वेटी को लेकर उड गया, इसे छिपाकर मा-वाप ने कहा कि वह हिमालय चला गया, इसको तो लोग माफी दे देंगे, पर उसे छिपाकर, दो वच्चो के रहते हुए एक सभ्रान्त कुल की लडकी को खराव किया, इसकी माफी समाज कभी नही देने वाला था । हा, यदि शादी न होती, होती भी तो उस स्त्री को वेश्यालय के कुए मे डालकर निश्चिन्त कर दिया जाता, न कोई कानूनी प्रमाण होता और न कोई वदनामी होती, तो वात और होती । सुजाता देवी ने कहा—तुम ठीक कह रहे हो, मेरी भी यही राय है, पर वह कह रहा है कि मैं समझा लूगा ।

मामा जी फिर भी वोले पहले के जमाने मे समझाना आसान था, क्योकि लोग शरीफो की इज्जत का ख्याल करते थे और सौ-पचास रुपये लेकर मामला दवा दिया जा सकता था । अव नये-नये विचार फैले हुए है । सवर्ण-असवर्ण, ऊच-नीच सव एक है, सवमे रोटी-वेटी का व्यवहार होना

चाहिए। गाधी तो रोटी तक ही चाहते, पर अब छोटे लोग हमारी बेटियो पर निगाह जमाए है। फिर वह दिल्ली मे कौन-सा अध्यापक है न, तुम बता रही थी, जो दूसरो के मामले मे बेजा दिलचस्पी लेते हैं। आजकल समझाना बहुत मुश्किल है। जब तक मैं सुहासिनी के मुह से न सुन लू, तब तक मैं नही मानूगा।

इस प्रकार बात चल रही थी, विश्वनाथ को कुछ बताया नही गया था कि सुभकरन आ गया और आते ही उसने कहा—मैं तो वहा लौटकर नही जाऊगा। वह तो बडी खराब औरत है। मैं उसके तीन पुरखो को जानता हू, पर वह मुझसे कहती है कि तुम नौकर हो, नौकर की तरह रहा करो। क्या तुम माई जी से ऐसे ही बात करते हो?

बहन और भाई मे दृष्टि-विनिमय हुआ जिसका अर्थ यह था कि जितनी टेढी हम समझते थे, उससे कही अधिक टेढी खीर है। सुभकरन को समझा-बुझाकर, तसल्ली का लबादा ओढाकर नौकरो मे भेज दिया गया। मामा जी ने कहा—यह औरत तो झगडा करने पर उतारू है। यह कभी नही मानने की। तुम निर्मला देवी से इन्कार कर दो।

रविवार का दिन था, इसलिए मामा जी खाने के लिए रुक गए। पत्नी से टेलीफोन किया, पर वह बोली, मेरी तबीयत खराब है, मैं नही आ सकती, बच्चो का क्रिकेट का गेम है और जाने क्या-क्या है, वे भी नही आ सकते। सुजाता देवी ने कहा कि गाडी भेजती हू, फिर भी उधर से इन्कार ही आया। इस कारण भाई और बहन मे चर्चा चलती रही, पर कही किसी तरफ कुछ ओर-छोर दिखाई नही दे रहा था। विश्वनाथ को आज फुरसत नहीं थी। उसने कहीं लच खाना स्वीकार कर रखा था।

दोपहर के खाने का समय हो गया। पता लगा कि अभी-अभी जगन्नाथ उठा है और चाय पीकर दाढी आदि बना रहा है। सुजाता देवी बीच मे उठकर गई थी और नित्य के नियम के अनुसार दो खाली बोतल ले भी आई थी। यद्यपि उन्हें आज रोज से अधिक घिन मालूम हुई थी, क्योकि गुसलखाने मे कुछ महकते हुए गन्दे कपडे भी रखे हुए थे, जो जगन्नाथ के नहीं थे। वह नहाकर ही भाई के पास आई थी और फिर दोनो मे चर्चा चालू हो गई थी। खाना लग ही रहा था कि जगन्नाथ की ओर से सन्देश

आया कि मैं भी साथ खाऊगा । इसकी आशा नही थी क्योकि कई दिनो से जगन्नाथ कमरे मे ही खाना मगा लेता था, मा और भाई के साथ खाना नही खाता था । मामा जी समझ गए (उन्हे अभी तक उन साठ रुपयो की कसक थी) कि यह कोई गुल खिलाने वाला है, कोई नया धोखा दे मारेगा । वह भीतर ही भीतर सकुचा सिमट गए । पर कुछ बोले नही । पर मन ही मन मे यह निश्चय कर लिया कि उस निश्चय से नही हटना है, जिसे कुछ कडाई ही के साथ उन्होने अपनी बहन को व्यक्त किया था ।

जगन्नाथ ने खाने के कमरे मे पैर रखते ही यह महसूस कर लिया कि वातावरण उसके अनुकूल नही है । सुजाता देवी ने दो-एक इधर-उधर की घरेलू बातो के बाद ही कह दिया—तुम्हारे मामा जी की भी यही राय है जो मेरी है ।

जगन्नाथ ने कुछ उत्तर नही दिया । वह आज नाइलोन की कीमती कमीज और पैन्ट मे था ।

मामा जी ने उसको देखा और कहा—हा, मैं भी यह समझता हू कि तुम्हारी शादी होने के पहले सुहासिनी को निश्चित रूप से और हमेशा के लिए पटा लेना है ताकि वह कभी किसी प्रकार का झगडा खडा न कर सके ।

जगन्नाथ ने ताव मे आकर वादा तो कर लिया था, पर उसे अब स्वय ही लग रहा था कि वादा निभाना मुश्किल है । वह जानता था कि सुहासिनी बडी जिद्दी औरत है । वह एक दफे जो टेक पकडती है, उसी-पर अडियल टट्टू की तरह अडी रहती है, समझौता उसके स्वभाव मे नही है, बोला—वह समझौता करना नही चाहती, फिर भी मैं उसे समझा लूगा । मैं उधर ही जा रहा हू । यही कहने मैं आया था ।

मामा जी को समझौता शब्द पर बडा गुस्सा आया, यद्यपि समझौते से उनके केवल साठ ही रुपयो पर पानी फिरा था और उस बेचारी के जीवन-मरण का और इतना ही नही उसके बच्चो के जीवन-मरण का प्रश्न था । मामा जी चिल्लाकर बोले—समझौता शब्द का तुम बहुत गलत प्रयोग कर रहे हो । इसमे तो केवल प्रश्न यह है कि एक भूल हुई, उसका प्रायश्चित्त किया जाए, इसकी पुनरावृत्ति न हो ।

जगन्नाथ काटा-चम्मच से बहुत नफासत के साथ खाना खा रहा था। मा अपने अनजान मे प्रशसा के साथ उसे देख रही थी—काश ! विश्वनाथ भी ऐसा कर पाता, पर वह तो बडा ही अल्हड है, पढने मे तेज है, मा के प्रति बहुत ही प्रेम रखता है और उसे दुनिया मे किसी बात की परवाह नही है। कल अणिमा और गरिमा दोनो जिस प्रकार मुड-मुडकर जगन्नाथ को देख रही थी, उससे यह स्पष्ट था कि जगन्नाथ ने पहले राउण्ड मे ही दोनो लडकियो को आसमान देखने लायक बना दिया है। जगन्नाथ मामा जी की बात सुनकर व्यग्य के साथ हो-हो करके हसते हुए बोला—मामा जी तुम तो समझौता शब्द से चिढोगे, क्योकि तुम तो घिसी-पिटी लीक पीटने वाले हो, तुम्हारा धर्म है लकीर की फकीरी। पर जो जीवन मे प्रयोगवादी है, उसे अक्सर अपनी यात्रा के दौरान समझौता करना पडता है। तुम्हे यह बताने की जरूरत नही है कि जिसे तुम जीवन कहते हो, वह भी कुछ विरोधी शक्तियो के बीच समझौते का एक सोपान है।

मामा जी को बहुत ही क्रोध आया कि पश्चात्ताप की धीमी आच मे सुलगते रहने के बजाय यह लन्तरानियो की दुनिया मे स्वय भटक रहा है और दूसरो को भटकाना चाहता है। बोले—तुमने तो ऐसी भूल की कि यदि राय साहब उससे पैदा होने वाले बाढ के पानी को लेटकर अपने शरीर मे न रोकते, तो आज इस कुल का सर्वनाश हो जाता। विश्वनाथ बेचारे ने बडी मेहनत की, पर उसकी सारी मेहनत बेकार जाती और आई० ए० एस० के उच्च शिखर पर चढने पर भी उसे कोई भले घर की लडकी न मिलती। तुमने कहा, इसलिए मुझे साफ-साफ कहना पडा।

जगन्नाथ कुछ क्षणो तक छुरी-काटे मे सूक्ष्म कारकार्य-सा करता रहा, फिर बोला—बडा अच्छा हुआ कि मुझे खुलकर कहने का मौका तुमने दिया। मै मा से बहुत कुछ कहना चाहता था, समाज से भी बहुत कुछ कहना चाहता था, आज मै उन्हे कहूगा। पिता जी यह समझकर परेशान रहे कि मै एक छोटी जाति की लडकी को लेकर भाग गया और इस प्रकार मैने एक दुष्कर्म किया, पर उन्होने उसका दूसरा पहलू नही देखा, न तुम देख रहे हो। मैने तो यही सोचकर उसे भगाया था कि लोग अछूतोद्धार

करते है, समारोह करके अछूतो के साथ बैठकर खाना खाते है, पर असली हल तो तभी होगा, जब रोटी के अलावा बेटी का भी व्यवहार होगा। गाधी बेचारे इस बात को समझ नही पाए और यदि समझ पाए हो, तो उन्होने आक्रमणात्मक ढग से बेटी के व्यवहार का प्रचार नही किया और इस हद तक उन्होने अछूतो के साथ धोखा किया। दूसरे शब्दो मे उन्होने अछूतो को सब्जबाग दिखाकर उनके विद्रोह की आग को दबाए रखा ताकि जो जुल्म की चक्की चालू है, वह चलती रहे। मेरा अपराध सिर्फ इतना है कि मैंने अछूतोद्धार के विचार को उसके तार्किक उपसहार तक पहुचा देना चाहा। मैंने अपने विचार को जीने का प्रयास किया। मेरी ईमानदारी इस बात से साफ हो जाती है कि मैंने बाकायदा शादी की। यही नही, मैंने अपना जीवनक्रम बदल दिया और मैं भी एक मजदूर हो गया। यद्यपि मैं आई० ए० एस० तो नही था, फिर भी एक क्लर्क तो बन ही सकता था। —कहकर उसने विजयोल्लास से उद्‌भासित चेहरे से बारी-बारी से मा को और मामा जी को देखा और मामा जी पर उसकी दृष्टि व्यग्य से भरपूर होकर स्थिर हो गई।

इसमे से एक-एक शब्द मामा जी को ऐसे लगे, जैसे वे गरम लोहे से उनके शरीर पर दाग दिए गए हो। वह स्थान-काल-पात्र भूलकर बिल्कुल पागल से होते हुए बोले—जब तुम इतने बडे समाज-सुधारक हो कि तुमने राम ने जिस प्रकार दशरथ को चिता मे झोककर पितृ-आज्ञा का पालन किया था, उस प्रकार तुमने अपने विचारो की सीता का अनुगमन किया, तो फिर तुम समझौते की बात क्यो कर रहे हो, सीधे-सीधे मा से कह दो कि मैंने जो कुछ किया ठीक किया, मैं उसी पर डटा रहूगा चाहे कुल की मर्यादा रहे या न रहे, चाहे विश्वनाथ का कैरियर चकनाचूर हो जाए

मामा जी एक सास मे सारी बातें इस प्रकार से कह गए, जैसे रुका हुआ पानी एकाएक रास्ता पाकर कोलाहल करके रोष के साथ बह निकलता है। मामा जी बहन का अस्तित्व सम्पूर्ण रूप से भूल गए थे। पर बहन उनके वाक्यो को भी उसी प्रकार ध्यान से सुन रही थी जैसे [illegible]। वह एकाएक बोल उठी—राजन, यह तुम क्या कह रहे हो?

गलती हो गई सो हो गई। अब उसे सुधारना चाहिए, देर आयद दुरुस्त आयद, कुल की मर्यादा की बात भी तो सोचो।

मामा जी कुछ हद तक जरूर काबू मे आए, फिर भी वह विद्रोही घोडे की तरह लगाम चबाते हुए बोले—दीदी, तुम समझ नही रही हो, इसका समझौता, इसका समाज सुधार, मैं सब सही ढग से समझता हू। बचपन मे इसे बात करने का बवासीर है इसलिए यह बिना प्रसग के बिलबिलाता रहता है, मैं इसकी पूरी पोल-पट्टी पहचानता हू और यह चाहता हू कि तुम भी इसे इसके सही रूप मे जानो, नही तो न तो तुम्हारा कल्याण है और न इसका।

सुजाता देवी यह समझ नही सकी कि अब ऊट किस करवट बैठेगा, क्या यह जाकर सुहासिनी के साथ पति-पत्नी की तरह समाज के सामने छाती फुलाकर रहने लगेगा या उसे समझाएगा, जैसाकि वह अभी कह रहा था। भाई को इसलिए बुलाया गया था कि वह कुल की मर्यादा की रक्षा मे हाथ बटाए, जैसाकि वह अब तक बटाता आ रहा है, पर उसकी बजाए उसने तो जगन्नाथ को चुनौती की ऐसी अधी गली मे लाकर पटक दिया कि अब उसके लिए सिवा अपने कुकृत्यो मे (ब्याही हुई स्त्री के साथ रहना स्वीकार करना सुजाता देवी के निकट कुकृत्य था, क्योकि वह उनके कुल-मर्यादा की सडक को काटकर बहता था) लौट जाने का कोई रास्ता नही था। सुजाता देवी को न तो अपने बेटे को समाज सुधारक बनाना था और न और कुछ। इस समय निर्मला देवी के प्रस्ताव को मान लेने मे ही उन्हे अपना और सारे ससार का कल्याण दिखाई दे रहा था।

मामा जी गुस्से मे बडे-बडे निवाले निगल रहे थे। वह चुप रहने की आप्राण चेष्टा कर रहे थे। मुह को मौका ही नही दे रहे थे कि वह बोले। जगन्नाथ बहुत शान्त ढग से अपने छुरी-काटो का खेल खेल रहा था जैसे उसी के अन्दर मे सोच रहा हो, बोला—यह तो बडी अच्छी बात है। मैं अपने पूर्व जीवन मे लौटने को तैयार हू, बशर्ते कि मामा जी मुझे मुक्त कर दें।

—मैं मुक्त नही करती।—सुजाता देवी ने बडी तेजी से ये शब्द कहे।

मामा जी उसी तरह निवाले निगल रहे थे और जगन्नाथ अपना काम दिखा रहा था, बोला—मै कभी न आता। विश्वनाथ और तुम जब गए थे, तो मैने आना अस्वीकार कर दिया था, पर आया, इस कारण कि दु ख है कि ससार मे एकसाथ एक ही कर्तव्य नही होता, कई प्रकार के कर्तव्य होते है, उनमे टकराव होता है, मैने अनुभव किया कि यदि पिता जी की मृत्यु की पूरी जिम्मेदारी उस हद तक नही है, जितनी कि मामा जी के अनुसार मेरी थी, तो भी कुछ तो ज़रूर है। मै डरा कि कही मा पर भी कोई विपत्ति न आए, इसलिए मै आ गया। अब यदि आप गुरुजन मुझे समाज-सुधार की अनुमति देते है, तो मै तैयार हू और मैं साफ कर दू कि मै सुहासिनी मे अणिमा से कही अधिक आकर्षण पाता हू यद्यपि वह साडी उस प्रकार से पहनना नही जानती जैसे हमारे शरीफ घर की लडकिया पहनती है मानो वे नगी हो और न वह उस प्रकार की अदा से खाना ही जानती है जैसे हमारी लडकिया खाती है कि मुह को भी पता नही होता कि वे खा रही है। बस, जबडे चक्की पीसते रहते है, उसी से प्रकट हो जाता है।

सुजाता देवी बोली—नही-नही, गुरुजनो की कोई अनुमति नही है। राजन जाने कैसे वैसी बाते कह गया। तुम जाकर सुहासिनी को समझाओ, वह मान जाए तो मै बातचीत शुरु करू।

कुछ देर तक कोई कुछ नही बोला। मामा जी ज़िद के साथ चबाते रहे, एक-एक कौर को बीसियो बार। जगन्नाथ काटा-चम्मच से खेलता रहा जैसे बिल्ली के बच्चे पकडे हुए चूहे के साथ खेलते है। सुजाता देवी बारी-बारी से दोनो को देखती रही। उन्होने न तो पहले कुछ विशेष खाया था, और अब तो कुछ भी नही खा रही थी। नृभक्करन आज्ञाकारी पुराने नौकर की तरह दूर खडा-खडा देखता रहा, इतना दूर कि लगे कि वह कुछ सुन नही पा रहा है, पर असल मे वह कान खडे करके कहे गए एक-एक शब्द को रस के साथ सुन रहा था।

जगन्नाथ ने एकाएक कहा—मै यही तो कह रहा था कि मेरे सामने दो रास्ते है एक समाज-सुधार का, त्याग और तपस्या का शायद उतना नही जितना कि संघर्ष का, और दूसरा रास्ता है मा की बात मानकर

उस प्रकार का जीवन विताना जैमा कि पिता जी विता गए। मेरी अपनी इच्छा तो यही है कि मैं खुल्लमखुल्ला सुहासिनी को लेकर रहू और ममाज के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करू। हमारे दूसरे सुधारक अस्पृश्यता निवारण के ठेकेदार वनकर भी जो बाते कर नही पाए, हम उन्हे व्यावहारिक करके दिखाए।

मामा जी भीतर ही भीतर कुढ रहे थे, क्योकि उनका विश्वास था कि यह जो कुछ कह रहा है, अपना भाव वढाने के लिए कह रहा है। उगलियो मे खून लगाकर शहीद बनना चाहता है, पर वह कुछ बोले नही क्योकि वह भी चाहते थे कि इस मारे प्रपच का निपटारा उमी ढग से हो जैमा कि सुजाता देवी चाहती थी। यो तो भाजो के लिए कोई जिम्मेदारी नही थी, पर यदि भाजे समाज के ऊपर की सीढियो मे चढते हैं, तो अपनी भी मर्यादा वढती है, लडको की शादी मे अधिक रकम पीटने की सम्भावना है। इत्यादि-इत्यादि।

सुजाता देवी ने प्रार्थना के स्वर मे कहा—तुमने समाज-सुधार काफी कर लिया, अव तुम दूमरी तरफ हो जाओ। तुम्हारे एक के करने मे यह ममाज नही बदलने का तुम स्वय बाहर हो जाओगे, मैं मुह दिखा नही पाऊगी, भाई का कैरियर बिगडेगा।

जब सुजाता देवी यह कह रही थी तो मामा जी के दिल मे प्रवल इच्छा हो रही थी कि वह चिल्ला कर अपनी भोली-भाली बहन मे कहे कि दीदी, तुम जो चाह रही हो, यह भी वही चाहता है, पर यह बदमाश ख्वामख्वाह बातो का पलेथन देकर अपना भाव वढा रहा है। तुम नही जानती इसने किस सफाई से माठ रुपये मार दिए।

पर वह खून का घूट पीकर चुप रह गए। यद्यपि चुप रहना उनके लिए बहुत कठिन हो रहा था, क्योकि बार-बार वह दृश्य मामने आ रहा था, जब यह मारे रुपये चुरा कर 'ममझौता' की बातें कर रहा था। गुस्सा पीकर वह बोले—मारी बात तो यह है कि सुहासिनी क्या करने जा रही है। अब मुख्य व्यक्ति तुम नही, बल्कि वह है। यदि वह मान गई, तभी हम लोग कुछ आगे वढ मकते हैं, नही तो विश्वनाथ की शादी कर देनी पडेगी क्योकि पता नही कब क्या बदनामी हो और बाजार मे उसका

भाव एकाएक बहुत नीचे गिर जाए।

जगन्नाथ ने काटा-चम्मच रख दिया और नैपकिन से मुह पोछते हुए काफी का इन्तजार करने लगा। उसकी समझ मे नही आ रहा था कि सुहासिनी से कैसे पल्ला छुडाया जाए। वह गैबी वाले बगले मे एक हद तक ही कैद रखी जा सकती थी। उसे विश्वास था कि वह किसी-न-किसी समय वहा से नौ-दो-ग्यारह हो जाएगी और तब समस्या बनेगी। कही वह निर्मला देवी के पास पहुच गई या अणिमा के पास तो सारा बटाढार हो जाएगा। उसके पीछे दिल्ली के वे अध्यापक यदि न भी रहे तो ऐसे मामलो मे रस लेने वाले नए लोग पैदा होने मे कितनी देर लगती है, कही वह काग्रेस कमेटी या और किसी सस्था मे जाए तो आफत बन सकती है। तो क्या अपनी इच्छा के विरुद्ध समाज-सुधारक ही बनना पडेगा ?

अवश्य एक बात सूझी थी। वह यह कि सुहासिनी के चरित्र पर कलक लगाकर यह कहा जा सकता था कि मैं तो सब कुछ त्यागकर समाज-सुधार मे जीवन अर्पित करने के लिए तैयार था, पर यह दिल्ली मे बदचलनी करने लगी। तभी मैं शराब आदि पीने लगा और इसी कारण मैं उसे छोडकर चला आया। जिन लोगो का सुधार किया जाए, वे यदि सुधरना न चाहे और हाथ न बटाए तो क्या हो सकता है ? वह एकाएक पूछ बैठा—मा, सुहासिनी के मा-बाप जिन्दा है ? उनका कुछ पता है ?

सुजाता देवी बोली—बल्देवा शायद मर गया।

शुभकरन को अधिक जानकारी के लिए बुलाया गया तो वह बोला—वह लापता है। सुहासिनी की मा वसुन्धरा भी शायद मर गई।

जगन्नाथ सामने रखी हुई काफी का एक घट पीकर ही उठ खडा हुआ। वह बहुत चिन्तित लगता था। वह जानता था कि सुहासिनी को पैसो से खरीदा नही जा सकता। उसे इतना भरा गया है, कि वह ऐसे-ऐसे गलत शब्द जैसे अधिकार, कानून आदि का उपयोग करने लगी है, जबकि अधिकार और कानून सिर्फ हवा ही है, यदि उसे गगा जी मे नाव पर ले जाया जाए और बच्चो सहित बीच गगा मे ढकेल दिया जाए और यह बताना किया जाए कि नाव उलट गई, स्वय तैरकर बचा जाए तो क्या कानून और अधिकार वहा बचा लेंगे ? इन दुष्ट अध्यापको ने मेरे

विरुद्ध ये शब्द सिखाए है।

आधे घण्टे बाद वह सुहासिनी के सामने खड़ा था। उसकी आखे बुझी हुई थी। सिर नीचा था। लगता था कि उसके मन के तारो की यह स्थिति है कि ज़रा छेड दिया कि आसुओ की झडी का झकार निकलेगा। सुहासिनी एक दृष्टि देखकर ही समझ गई कि उसपर बहुत दबाव डाला जा रहा है और वह बहुत परेशान है। उसने बच्चो को बाहर भेज दिया और स्वय उसके सामने कुछ उत्तेजित होकर खड़ी रही। वह समझ रही थी कि वह कुछ ऐसी बात कहने वाला है, जो उसे रुचेगी नही। वह निश्चय कर चुकी थी कि किसी भी हालत मे कोई समझौता नही करना है, जिसका इशारा सुजाता देवी ने किया था कि कुछ रुपये ले लो और पिण्ड छोडो। न तो वह यह समझौता करेगी और न कोई अन्य समझौता।

जगन्नाथ बेंत की कुर्सी पर बैठ गया। यहा सब सामान था, पर थी सब सस्ती चीज़े। बैठने के बाद उसने सुहासिनी को सामने की कुर्सी पर बैठने के लिए कहा, बोला—सुहासिनी, बडा ही अनर्थ हो गया।

सुहासिनी बोली—हमारी तुम्हारी शादी हो चुकी है, मै कोई बात नही सुनती। अगर वे तुम्हारी जायदाद नही देते तो न दे, हम हाथ-पाव से कमा-खा सकते है।

जगन्नाथ उसी प्रकार सिर नीचा किए हुए बोला—सुहासिनी, बात यह नही है। सम्पत्ति कैसे वे नही देगे ? उन्होने तो देने के लिए ही मुझे बुलाया है। पर बात कुछ और है, जिसका सम्बन्ध मुझसे है। मैने इतना बडा पाप किया है कि मुझे पेड से उलटा टाग देना चाहिए और नीचे धीमी आच की चिता जलानी चाहिए। अब मेरे लिए आत्महत्या के सिवा कोई चारा नही है और समझो तो तुम्हारे लिए भी कोई और चारा नही है।

सुहासिनी ने देखा कि जगन्नाथ की आखो मे आसू की एक बूद टप से गिरी। वह समझ नही पाई कि क्या बात है। प्रतिरोध करती हुई बोली—हमने-तुमने शादी की है, आर्यसमाज मे। फिर हमने कौन-सा पाप किया ? हा, कल तुम मुझे जिस तरह माता जी के सामने हाथ पकडकर खीच ले गए, वह ठीक नही था, पर उसमे कोई पाप तो हुआ नही।

जगन्नाथ ने रहस्यजनक रूप मे कहा—पाप तो हर तरह हुआ।

इलाहाबाद मे हुआ, दिल्ली मे हुआ, बनारस मे हुआ और ये दो बच्चे पाप की ही उपज है। ऐसा पाप जिसके लिए हम दोनो को ज़िन्दा जला देना चाहिए।—कहकर उसने सिर और नीचा कर लिया जैसे पाप के बोझ से कधा झुक रहा हो। वह लम्बी सासे लेने लगा।

सुहासिनी समझ गई कि किसी पण्डित ने यह समझाया होगा कि सवर्ण और असवर्ण या ऊची जाति और नीची जाति मे कलियुग मे व्याह करना अनिद्ध और अनुचित है, इसीका यह असर है। वह नाराज होती हुई बोली—तुम्हीतो मुझे समझाया करते थे कि जात-पात सब मनगढन्त है, ब्राह्मणो ने अपने लाभ के लिए जात-पात की सृष्टि की है। अब तुम ऐसा कैसे मान रहे हो ? मेरे सामने उन पण्डितो को बुलाओ। मै उनसे बहस करूगी और मै उन्हे समझाऊगी।

जगन्नाथ मन-ही-मन निराश हो रहा था, बोला—तुम समझ नही रही हो। पण्डितो की बात नही है और न मा और मामा जी की बात है। बात कुछ और ही है।

सुहासिनी फिर भी मानने को तैयार नही हुई कि वास्तविक रूप मे कोई खतरा है। तब जगन्नाथ ने कहा—मै तो तुम जानती हो यह समझ कर तुमसे प्रेम करता रहा कि बहुत बडा काम कर रहा हू, छुआछूत मिटाने मे अन्तिम और सबसे जरूरी उपाय काम मे ला रहा हू, पर असल मे मै महापापी था।—कहकर उसने नाटकीय ढग से मुह ढक लिया जैसे उसे अपने आप पर शर्म आ रही हो। बोला—मुझे नही मालूम था कि तुम मेरी बहन हो।

सुहासिनी को अपने कानो पर विश्वास नहीं हुआ और थोडी देर के लिए उसे ऐसा लगा कि शायद अत्यधिक दबाव डालने के कारण जगन्नाथ के दिमाग के पुर्जे ढीले हो गए, बोली—बहन कैसी ?

—हा, बहन ही हो, मैने बडा पाप किया।

सुहासिनी ऐसे जगन्नाथ को घूरने लगी जैसे यह कोई बडा भारी षड्यन्त्र हो, बोली—तुमको रिश्तेदारो ने बताया होगा। यह बिल्कुल झूठ है।

—मुझे भी जब पहली बार मालूम हुआ तो मैने भी यही समझा, पर मेरे पिता जी मरते समय मेरे लिए एक मुहरबन्द चिट्ठी छोड गए है जिनमे

उन्होने यह लिखा कि इस चिट्ठी की बात किसीको न बताना, पर वसुन्धरा को मैंने रखा था। बल्देवा नाम के लिए उसका पति था।—कहकर उसने एक सील तोडा हुआ लिफाफा सुहासिनी के सामने रख दिया और रोने लगा। बोला—हाय, हम लोगो ने कितना बडा पाप किया। मैं समझ रहा था कि मैं समाज सुधार कर रहा हू और मैं सबसे जघन्य अपराध कर रहा था।

सुहासिनी लिफाफे से काफी प्रभावित हुई थी, फिर भी वह बोली—यह बात गलत है।

—गलत कुछ भी नही है, क्योकि जब मै तुम्हे लेकर भागा तो पुलिस मे रिपोर्ट तक नही हुई। तुम्हारे पिता बल्देव ने पिता जी के कहने पर रिपोर्ट तक नही की।

सुहासिनी ने कहा—मैंने सुना कि रिपोर्ट हुई थी, पर दबा दी गई।

—हा, हा, वही तो कह रहा हू कि बल्देव ने यह समझकर रिपोर्ट लिखाई थी कि तुम्हे कोई और उडा ले गया है, पर जब पिता जी को मालूम हुआ तो उन्होने बल्देव के साथ मिलकर मामला दबाया। तुम्हारी मा इसी गम मे मर गई कि भाई ने बहन को भगाया और मेरे पिता जी भी शायद इसी शोक मे मर गए। हाय, मै बडा पापी हू। मै तो गगा जी मे डूबकर जान दे दूगा।—कहते-कहते उसने उस मुहर तोडे हुए लिफाफे को सीने से लगाया और फिर उसे जेब मे रख लिया। वह समझ रहा था कि अब सुहासिनी पर प्रभाव पडा है, इसलिए उसने फिर कहा—हाय, मैं बडा पापी हू। हम दोनो को डूबकर प्राण दे देना चाहिए। इसका यही प्रायश्चित्त है।

सुहासिनी ने कहा—बच्चो का क्या होगा ?

जगन्नाथ बोला—खैर, तुम तब तक जीओ, जब तक बच्चे बडे न हो जाए, पर मै तो प्राण दे दूगा। मै किसी प्रकार नही जीऊगा।

सुहासिनी के मन मे एकाएक सन्देह हुआ, बोली—पर कल तो तुमने

जगन्नाथ फौरन झूठ बनाते हुए बोला—मामा जी ने कल पत्र दिया। पिता जी वह पत्र माता जी को नही, बल्कि मामा जी को दे गए थे। जब से पत्र मिला, तब से मैं भीतर से सुलग रहा हू। किसी तरह कल

नही पड रही है।

सुहासिनी ने कहा—यह कैसे हो सकता है कि तुम डूबो और मैं न डूबू ? पर बच्चो का क्या होगा ? यह समझ मे नही आ रहा है। मरने को मैं तैयार हू। तुम्हारे साथ मरूगी, इसमे खुशी ही है।

जगन्नाथ का कठोर मन प्रेम की इस चरम अभिव्यक्ति से कुछ पसीजा, पर केवल एक पल के लिए। फिर बोला—बच्चो के लिए तुम्हे तो जीना ही पडेगा। है तो वे पाप के परिणाम, पर उनका क्या कसूर है ?

सुहासिनी बोली—तो फिर तुम्हे भी जीना पडेगा। यह नही हो सकता कि तुम मरो और मैं जीती रहू।

—हू।

—यह नही हो सकता।

जगन्नाथ बडी देर तक इसपर लडता रहा कि तुम तो खैर बच्चो के लिए जिओगी, मुझे किसके लिए जीना है, माता जी है, सो उनके लिए मेरा छोटा भाई काफी है। मै यदि मर जाऊ तो किसीकी कोई हानि नही होगी, कोई आसू की एक बूद भी नही बहाएगा। पर अन्त तक जगन्नाथ मान गया कि अच्छी बात है तुम भी जीओ, मैं भी जीऊ।

थोडी देर तक निश्चेष्ट बैठने के बाद वह बोला—मैं जीऊगा तो एक मुसीबत यह है कि मुझ पर माता जी शादी करने के लिए जोर डालेंगी, और फिर मेरा जीवन दूभर हो जाएगा। मुझे शादी जरूर करनी पडेगी, इसलिए मै कहता हू कि मुझे जीने की जरूरत नही है।

सुहासिनी ने खून का घूट पीकर कहा—जब तुमने हमारा कोई नाता नही रहा, तो चाहे तुम शादी करो या कुछ करो।

—नाता कैसे नही रहा ? तुम इसी घर मे रहोगी और बच्चो को पालोगी और अगर कहती हो कि शादी कर लू ताकि फिर मेरा मन पाप की तरफ न जाए, तो तुम भी शादी कर लो। तुम्हारे यहा तो ऐसा होता भी है। जितना भी खर्च होगा, मै मा की सन्दूक तोडकर तुम्हे दूगा क्योकि पिता जी के धन पर तुम्हारा भी तो उतना ही हक है। जब मैंने तुम्हे भगाया था तो मै अछूतो के अधिकार के लिए लड रहा था, अब मै

खुले आम नही तो चोरी से नाजायज बच्चो के अधिकार के लिए लडूगा।

पर सुहासिनी किसी भी प्रकार शादी करने की बात पर राजी नही हुई। बोली—ईश्वर को मजूर है, इसलिए मैं तुम्हे छोड सकती हू, पर शादी नही कर सकती।

सन्ध्या समय फिर मामा जी और माता जी के सामने जगन्नाथ बैठा हुआ था, बोला—वह सच्ची आर्य ललना की तरह मेरी खातिर सब बातो पर राजी हो गई है, पर मैं उसकी तरफ से एक बात यह कहूगा कि वह उसी मकान मे रहेगी और उसका सारा खर्च बराबर देना पडेगा। उसके अस्तित्व का पता हम दो के अतिरिक्त किसी तीसरे को न होगा।

मामा जी को यह समाधान बिल्कुल पसन्द नही आया क्योकि मामा जी बहुत दिन से उस मकान पर दात गडाए हुए थे और आशा करते थे कि नाम मात्र मूल्य मे वह सम्पति उनको दे दी जाएगी। वह जानते थे कि इसी कारण से सुजाता देवी उस सम्पति को बेच डालना चाहती थी। बोले—उसे कोई और घर किराए पर दिलाया जा सकता है। वह बगले मे कैसे रहेगी ?

पर जगन्नाथ अड गया, बोला—मैं आप लोगो के समझाने पर बहुत गिर गया हू और शादी करने को तैयार हू, पर यह अन्याय कभी न होने दूगा कि उस बेचारी को एकदम कुए मे डाल दिया जाए।

सुजाता देवी इस छोटी-सी बात पर झगडा करना नही चाहती थी वह समझती थी कि शादी हो जाए, फिर खुद ही सारी बात ठीक हो जाएगी। बोली—अच्छी बात है। वह वही रहे और उसके बच्चे भी वही रहे। कल मैं उससे मिल आऊगी और तब सारी बाते ठीक हो जाएगी। लौटने के बाद निर्मला देवी से टेलीफोन करूगी।

मामा जी ने फिर इस बात पर जिद नही की कि बगले मे वह रहे या न रहे पर वह एकाएक बहन के प्रेम मे आकर बोले—तुम क्यो जाओगी, मैं बात कर आऊगा, फिर तुम्हे सारी बाते बताऊगा। मैं तो चाहता हू कि वह यह लिखकर दे कि उससे जगन्नाथ की कभी शादी हुई ही नही।

१७

जगन्नाथ ने सुहासिनी को जो कुछ समझाया था और जिस प्रकार से उसने बाद को नाटक खेला, उससे अपने मार्ग से सुहासिनी को दूध की मक्खी की तरह निकालकर फेक देने मे कोई दिक्कत नही हुई। मामा जी और सुजाता देवी दोनो को सोलहो आने विश्वास हो गया कि सुहासिनी अब किसी प्रकार कोई गडबडी पैदा नही करेगी। मामा जी ने अपने ढग से यह समझा कि सुहासिनी ने यह इसलिए स्वीकार कर लिया कि इससे और अच्छी स्थिति हो नही सकती। इसलिए उसने समझौता कर लिया, जैसा उन्होने दिन-दहाडे साठ रुपयो से हाथ धोना स्वीकार किया था। मामा जी का स्वार्थ इसीमे था कि सुहासिनी मान जाए, पर जहा वह अज्ञात कारणो से मान गई, तो उन्हे जगन्नाथ पर बहुत क्रोध आया, इतना क्रोध आया कि उन्होने उससे करीब-करीब बोलना बन्द कर दिया। सुजाता देवी ने यह समझा कि अन्ततोगत्वा बाप का बेटा वाला मामला चलेगा और सुहासिनी ने उप-पत्नी के रूप मे रहना स्वीकार कर लिया। वह भी अपने मन से कारण ढूटती रही कि क्यो सुहासिनी मान गई, तो उन्हे यह कारण सूझा कि शादी-वादी कुछ नही हुई थी, इसीलिए सुहासिनी मान गई। शादी नही हुई, यह सोचकर उन्हे नैतिक राहत मिली मानो इसमे कोई दशन रह ही नही गया।

सुहासिनी अपने ढग से रमा के पत्रो का उत्तर देती रही, पर अब उसने इसीमे भलाई समझी कि कोई उत्तर न दे। अन्तिम पत्र मे रमा ने लिखा था—"हम लोग तुम्हारे बारे मे बहुत चिन्तित है। वह तो बराबर यही दोष दे रहे है कि मैंने व्यर्थ मे तुम्हे बनारस भेज दिया। भला बड़े आदमियो के विरुद्ध कभी गरीब मुकदमा करके सफल भी हो सकते है? तुम सकोच न करो। हम लोग वकील के लिए चन्दा करने को तैयार है। विद्यानिवास जी की पत्नी का एकाएक देहान्त हो गया। वह बेचारे बहुत दुखी है। कोई नौकर नही है, होटल मे ही खाते है। यदि तुम्हारा मन न लगे तो यही आ जाओ, तुम्हारे बच्चो को स्कूल मे दाखिल करा दिया जाएगा। तुम पहले की तरह काम कर सकती हो। विद्यानिवास

जी को अब दिन-भर का एक नौकर या नौकरानी चाहिए। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।"

सुहासिनी ने पत्र का उत्तर और भी इसलिए नही दिया कि विद्यानिवास की पत्नी का देहान्त हो गया और विद्यानिवास रमा के जरिए उसे बुला रहा है। उसका अभिप्राय तो स्पष्ट है।

दुर्भाग्य यह रहा कि प्रेमी सगा नही तो एक पिता से उत्पन्न भाई निकल आया। वह अब अक्सर बैठे-बैठे अपनी मा के बारे मे सोचा करती थी। तो उसकी मा ऐसी थी। वह लाखो मे एक सुन्दरी थी। सुहासिनी को सारी बातो मे भाग्य के ही हाथ दिखाई पडते थे। इस बीच जगन्नाथ कई बार आया था और हर बार सिर नीचा किए दूर बैठा रहता था और इस प्रकार पाच-सात मिनट बैठकर चला जाता था। बच्चो को देखकर उसने सुहासिनी से कहा था—इन्हे मेरे सामने आने न दिया करो, क्योकि अपने पाप के प्रमाण मै इस तरह प्रत्यक्ष देखना नही चाहता।

इतना दुःखी होने पर भी जगन्नाथ की एक दिन शादी हो गई। इसका पता इससे लगा कि सुभकरन ढेर-सी मिठाइया रख गया। जहा तक सुभकरन का सम्बन्ध था, उसे भीतरी बात कुछ मालूम नही हो सकी, इसलिए उसने सोचा कि इतिहास की पुनरावृत्ति हो रही है। वह खुश ही हुआ। उसे दुःख था तो इन बच्चो का था। उसका मत यह था कि उप-पत्नी रखना तो बडे आदमियो का गुण है क्योकि छोटे आदमी इस तरह दो परिवारो का पालन नही कर सकते। पर राय साहब की तरह कोई बच्चा नही होना चाहिए। वह बच्चो से पूरा द्वेष रखता था, यहा तक कि सुहासिनी उसके सामने भी बच्चो को आने नही देती थी, यद्यपि बच्चा सुभकरन बाबा सुभकरन बाबा कहकर उसके पास आना चाहता था।

शादी हुए कई महीने हो गए और जगन्नाथ आ नही पाया। सुहासिनी ने अपने मन मे यह कारण लगा लिया कि पहले मा और मामा का ही पहरा था, अब बीवी का पहरा भी हो गया। सुभकरन आकर सुनाता—इतने गहने आए, बडी बहू और छोटी बहू दोनो अपनी-अपनी मोटर चलाती है। बडे बाबू व्यापार करने लगे है। छोटे बाबू जल्दी ही कही जाएगे।—सुहासिनी यह सब सुनती और उसे लगता कि उसके

अन्दर कोई चीज छोटी पडती जा रही है और कुम्हला रही है। पहले मा पर क्रोध आता कि वह किस प्रकार राय साहव की रखैल रही, पर जब यह सोचती कि बल्देव उसका कोई नही, राय साहब ही उसके बाप है तो सारे विचार गडवडा कर गन्दले पड जाते। कार्य-कारण की पारदर्शिता दूर हो जाती और मन के थिराने मे समय लगता। वह पूजा-पाठ वहुत करने लगी। सुभकरन उसे एकमात्र सहारा लगता था, उससे वह जव-तव ऐसे प्रश्न करती, जिनका सुभकरन उत्तर नही दे पाता—वावा, वडे लोगो को सव आराम क्यो है, और छोटे लोगो को क्यो कोई सुविधा नही है? ईश्वर ने ऐमा क्यो किया?

सुभकरन ने अपने वालो पर हाथ फेरते हुए कहा—जिसने पहले जन्म मे जैसा काम किया उसे अगले जन्म मे वैसा ही जन्म मिलता है।

इसपर सुहासिनी पूछती—वावा, आदमी वुरे कर्म क्यो करता है? यदि ईश्वर उसे ऐसी वुद्धि न दे, तो वह वुरा कर्म क्यो करे?

सुभकरन के पास इसका भी तैयार उत्तर था। वह कह देता—जैसा जिसका सस्कार होता है, वह वैसा ही कर्म करता है। दो भाई है, देखो, अलग-अलग है, अपने-अपने सस्कार लेकर आए है। मा कितनी अच्छी है और राय साहव कितने अच्छे थे।

—राय साहव अच्छे थे?—सुहासिनी ने पूछा, मानो उसे कुछ धक्का लगा।

—हा, वहुत अच्छे थे।

सुहासिनी ने और कुछ नही पूछा, क्योकि यहा आकर फिर उसका दिमाग चकराने लगता था। वह उसके पिता है, पर उसके लिए कुछ नही किया। यदि जगन्नाथ उसे न उवारता तो वह आज झाडू और वाल्टी लिए टट्टी साफ करती होती। वह किसी तरह यह मान नही सकती थी कि राय साहव अच्छे आदमी थे, पर साथ ही वह उसके वाप थे। स्नेह वल्देवा से था और वाप राय साहव थे। इधर वल्देवा पर भी स्नेह घट गया था। क्यो उसने पैसा लेकर [illegible]?

सुभकरन से वात करके तृप्ति नही होती थी, फिर भी वह सुभकरन से ही कुछ [illegible] पाती थी। एक दिन सुभकरन ने आकर उत्तेजित होकर

कहा—मैने माई जी से कहा था कि दोनो बहनो का एक घर मे आना ठीक नही और वही हुआ ।

पर जब उससे पूछा गया कि क्या हुआ, तो उसने कुछ नही बताया। सुभकरन को जब कुछ बताना नही होता था तो वह बीडी की कश जल्दी-जल्दी लेने लगता था । एक दिन सुभकरन और सुहासिनी इसी तरह बात कर रहे थे कि जगन्नाथ आया । आते ही उसने सुभकरन से कहा—तुम यहा छिपे बैठे हो और घर मे तुम्हारी ढुढाई हो रही है । जाओ जल्दी जाओ । मा जी तुम्हे ढूढ रही हे । किसी से बताना मत कि मैं यहा आया हू ।

शादी के बाद पहली बार जगन्नाथ यहा आया था । पहले की तरह वह न तो सिर नीचा किए हुए था और न दु खी था । उसने चारो तरफ देखा, बोला—तुम्हे सब चीजे ठीक से मिलती रहती हैं न ? मै तो ऐसे कैद हो गया हू कि तुम्हारे पास आ नही पाता हू । आज बडी कठिनाई से मोटर लेकर उड आया हू ।

सुहासिनी को खुशी हुई, पर अधिक नही । अन्दर कुछ एकदम-से विस्फारित हो गया जैसे किसी बहुत बडी चीज को अपने मे समा लेगा, पर वह फौरन ही कुण्ठित हो गया । समझ मे नही आया कि वह क्या कहे, कहा से अर्थ करे । बहुत-से विचार एक साथ इस उग्रता से उसके मन की ढलान पर उतरे कि वह कुछ समझ न सकी कि क्या कहे । केवल एक म्लान हसी, कोर कटी हुई, उसके चेहरे पर खेलकर फौरन ही बुझ गई । जगन्नाथ बोला—तुम इतनी दु खी क्यो हो ?—कहकर उसने चारो तरफ देखा, फिर बोला—सब चीजे मिल जाती है न ?

सुहासिनी ने इसका कोई उत्तर नही दिया । वह अपनी मामूली विद्या को इन दिनो बढा रही थी, साथ ही पूजा-पाठ बहुत करती थी । बोली—सब ठीक है, आप चिन्ता न कीजिए

साथ ही उसे सुभकरन द्वारा कही हुई वे सब बातें याद आई जो उसने बडी बहू और छोटी बहू के सम्बन्ध मे कहा था । बडी बहू गोरी नही है, छोटी बहू भी माई जी के मुकाबले मे कुछ नही । हा, इसी बगले मे एक औरत रहती थी, जो माई जी के भी कान काटती थी । बहुए

कुछ नही है माई जी के मुकाबले मे एक-एक पैसा दात से पकडती है। खैरियत यह है कि छोटी बहू चली गई नही तो दोनो बहुओ मे जूता-पैजार होता। सुहासिनी के मन मे यह जानने की इच्छा होती थी कि बडी बहू कितनी सावली है। अब सुहासिनी और जगन्नाथ के बीच बहुत-सी बाते आ गई थी। एक तो बाप की धाक और दूसरे जीती-जागती नौकरो को डाटती-डपटती सास पर रौब जमाने को इच्छुक पर उसमे असफल, सावली, कटुभाषिणी बडी बहू। शायद इससे अच्छा तो दोनो का आत्म-हत्या कर लेना होता, उस समय जबकि जगन्नाथ ने यह प्रस्ताव रखा था।

जगन्नाथ एकाएक जैसे किसी महत्त्वपूर्ण नतीजे पर पहुचते हुए बोला—मालूम होता है, तुम बडी दुःखी हो!—कहकर वह उठा और सुहासिनी के पास आकर बैठ गया। फिर उसका हाथ अपने हाथ मे लेकर बोला—तुम कितनी गोरी हो।

सुहासिनी हाथ को पूरी तरह दे नही पा रही थी। उसके हाथ देने मे कुछ प्रतिरोध था, जिसका अस्तित्व जगन्नाथ समझ गया। उसने कहा—क्या कहू बडी गलती हो गई—कहकर उसने सुहासिनी को और पास खीच लिया और उसका सिर अपने सीने पर रख दिया, बोला—क्या कहू, ऐसी गलती हो गई। अब कुछ किया नही जा सकता।

सुहासिनी ने अबकी बार जोर के साथ अपने को खीचकर कुछ हद तक अलग करते हुए कहा—तुम्हे अभी तक उसी की पडी है। ईश्वर बडे दयालु है। अनजान मे किसी से कोई पाप हो जाए तो वह उस पर क्षमा रखते है। हमने जो पाप किया, वह बिना जाने किया।

जगन्नाथ शायद सुन नही रहा था। उसने उत्तेजित होते हुए कहा—उस बदमाश मामा की कारस्तानी थी। उसने पिता जी के नाम से वह चिट्ठी लिखी थी। हम लोग भाई-बहन नही है और न वसुन्धरा से पिता जी का कोई ताल्लुक था!—आगे वह और कुछ कहने जा रहा था कि किससे ताल्लुक था पर रुक गया और उसने सुहासिनी को जोर से पकड लिया और बिलकुल उद्भ्रान्त की तरह उसे चूमने लगा, यहा तक कि सुहासिनी उसके हाथो मे एक नरम मिट्टी का लोदा होकर पसर गई कि उसे वह चाहे जो कुछ बनाए।

जगन्नाथ जब-तब सुहासिनी के पास आने लगा। सुभकरन के जरिए से सुजाता देवी को सब पता लगता रहा, पर उन्होने इसपर कुछ नही कहा, क्योकि इससे युग-युगातर से विरासत मे मिली हुई, उनकी शराफत को कोई बट्टा नही लगा। कुल-मर्यादा सोलहो कलाओ मे खिलकर सामाजिक गगन मे अक्षुण्ण होकर चमकती रही। सुभकरन कभी यह बता नही सका था कि राय साहब की जो सुहासिनी थी, वह किस जाति की थी। सुना था कि गोरी है, पर कितनी गोरी, यह पुराने नौकर सुभकरन ने सही रूप मे नही बताया था। उसने तो यही कहा था—माई जी, तुम्हारे पैरो के नाखून के बराबर भी उसमे चमक नही हे।

सुजाता देवी उसे कभी देख तो नही पाई पर अब उन्हे न जाने क्यो विश्वास हो गया कि वह देखने मे चाहे जैसी रही हो पर वह होगी छोटी जाति की ही, रजील कौम की। यह सोचकर सुजाता देवी को कुछ तृप्ति ही मिली थी। कही बडी वहू किसी दिन उस मकान का आविष्कार न कर ले, इसलिए सुजाता देवी ने बहुत चुपके से उस बगले को अपने भाई के नाम कर दिया, बस शर्त इतनी रखी कि बिना बदनामी के जब खाली करा सके तो करा लें। अब सुहासिनी के यहा राशन आदि भी मामा जी के घर के जरिए ही जाता था।

निर्मला देवी बहुत खुश थी क्योकि उन्होने इस घर को जितना धनी समझा था, उससे वे कही धनी निकले और साल के पहले ही उन्हे नाती का मुह देखने का मौका मिला। सब खुश थे। सुजाता देवी खुश थी कि कुल-मर्यादा की रक्षा हुई, स्वर्ग से पति देख रहे होगे कि किन दामो पर उसकी रक्षा की गई। अब तो वह यह भी जान गए होंगे कि सुभकरन सब बता देता था। जगन्नाथ खुश था कि व्यापार चमक रहा है और वह साधारण लोगो की तरह एक घाट से बधा हुआ नही है। जब चाहे तब जायका बदल सकता है। हद तो यह है कि सुहासिनी भी खुश थी कि मामा जी का षड्यन्त्र आखिर खुल गया और जगन्नाथ उससे मिलता था। इससे ज्यादा तो वह दिल्ली मे भी नही मिलता था।

●●●